https://www.studiestoday.com

# पीयूषम्

## ( प्रथम भाग )

## कक्षा – IX

© BSTBPC

( राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, द्वारा विकसित )

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक ( माध्यमिक शिक्षा ), मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं और प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

प्रथम संस्करण : 2009

मूल्य : रु० 20.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा : जे० एम० डी० प्रेस, मुसल्लहापुर पटना - 6 अद्वारा 2,00,00,0 प्रतियाँ मुद्रित ।



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

# प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल, 2009 से राज्य के कक्षा-IX हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है। प्रथम चरण में शैक्षिक सत्र 2009 के लिए वर्ग-IX की सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकों को पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एस. सी. ई. आर. टी., बिहार, पटना द्वारा सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकें (वाणिज्य एवं कला विषयक) बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित किया जा रहा है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, श्री नीतीश कुमार, मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री हरिनारायण सिंह तथा मानव संसाधन विकास विभाग के प्रधान सचिव, श्री अंजनी कुमार सिंह के मार्ग निर्देशन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एस. सी. ई. आर. टी., बिहार, पटना के निदेशक के हम आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन, निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

हसनैन आलम, भा.प्र.से.
प्रबन्ध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०





https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

**संरक्षण :**

- **श्री हसन वारिस,** निदेशक (प्रभारी), राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना
- **श्री रघुवंश कुमार,** निदेशक, (शैक्षणिक) बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग) पटना
- **डॉ0 सैयद अब्दुल मोईन,** विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
- **डॉ0 कासिम खुर्शीद,** विभागाध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

**संस्कृत पाठ्यपुस्तक विकास समिति**

**अध्यक्ष** – **प्रो0 उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',** पूर्व आचार्य तथा अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

© BSTBPC

**समन्वयक** – **डॉ0 सुरेन्द्र कुमार,** व्याख्याता (वि० शि० से०) राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना–800 006

**सदस्य** –
1. डॉ० मधु बाला सिन्हा, धर्मसमाज संस्कृत महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर
2. डॉ० वैद्यनाथ मिश्र, संस्कृत विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (सारण)
3. डॉ० दिवांशु कुमार, संस्कृत विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (सारण)
4. डॉ० रामनारायण सिंह, श्री रघुनाथ प्रसाद बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, कंकड़बाग, पटना–20
5. डॉ० विमल ठाकुर, कर्पूरी ठाकुर राजकीय उच्च विद्यालय, लहेरियासराय, दरभंगा
6. डॉ० मधुसूदन मणि त्रिपाठी, विपिन उच्च माध्यमिक विद्यालय, बेतिया (पश्चिमी चम्पारण)
7. डॉ० विजय कुमार पाण्डेय, जिला स्कूल, छपरा (सारण)

**बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक) पटना द्वारा आयोजित समीक्षा संगोष्ठी के सदस्य –**

| | |
|---|---|
| प्रो० ब्रह्मचारी सुरेन्द्र कुमार | पूर्व कुलपति, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा |
| प्रो० अशोक कुमार | स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना |

**अकादमिक सहयोग –**

| | |
|---|---|
| डॉ० ज्ञान्ति कुमारी | शिक्षा संकाय, राँची विश्वविद्यालय, राँची |
| श्री इम्तियाज आलम | व्याख्याता, शिक्षा, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार |
| श्रीमती बेबी कुमारी | सहायक शिक्षिका, राजकीय बालिका उच्च विद्यालय, महुआबाग, पटना |
| श्री देवेन्द्र प्रसाद | प्रधानाध्यापक, उच्च विद्यालय परसा, सारण |



# पुरोवाक्

संस्कृतं भारतवर्षस्य अतीव महत्त्वपूर्णा भाषा। अस्या अध्ययनं विद्यालयेषु परम्परया क्रियते विविधैर्विषयैः सह। छात्राणां सामञ्जस्यं च संस्कृतादिभिः विषयैः समं विद्यालयशिक्षाकाले संस्थापितमभूत्। क्रमेण 2005 तमे ईस्वीवर्षे राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखा प्रकाशिता जाता यत्र छात्राणां विद्यालयजीवनस्य संयोजनं विद्यालयेतरजीवनेन भवेदितित्यनुशंसितम्। इतः पूर्वं शिक्षाव्यवस्थायां पुस्तकीयं ज्ञानमेव रेखाङ्कितमासीत्, यत्र विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्येऽन्तरालं पोषितम्। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यपुस्तकानि तु मूलभावस्य व्यवहारदिशायां प्रयत्नरूपाणि वर्तन्ते। संस्कृतविषयस्यानुशीलने बिहारराज्येऽपि तथाभूतानि पाठ्यपुस्तकानि भवेयुरिति संकल्पोऽस्माकम्। आशास्महे यदस्माकमभिनवः प्रयासः 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रियशिक्षानीतौ अनुशंसितायाः बाल-केन्द्रित शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय कल्पिष्यते।

अस्य सफलता तु विद्यालयानां प्राचार्याणां शिक्षकाणां च तथाभूतान् प्रयासानालम्बते यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभवेन ज्ञानार्जनाय, कल्पनाशीलतायाः विकासाय, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अत्र स्वीकरणीयमेव तथ्यमेतद् यद् रुचिपूर्णा पाठसामग्री, तदनुशीलनाय स्वतन्त्रता च यदि छात्रेभ्यो दीयते तदा ते वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य स्वयमेवं नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारोऽपि व्यापको भवेत्, न तु पाठ्यपुस्तकाश्रितं ज्ञानमात्रम्। बालकेषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भ-प्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् सर्वानपि शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु केवलस्य निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकरूपेण।

एतान्युद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिकसमयसारण्यां परिवर्तनशीलता अपेक्षिता, तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परतापि अनिवार्या। तदैव शिक्षणार्थं नियते काले वास्तविकं शिक्षणं सम्भवति। नूनं राष्ट्रियशिक्षानीतेः बिहारराज्यस्य विशेषस्थितेश्च दृष्ट्या पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूतये प्रभावकं भविष्यति, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विविधस्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निधारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, उत्सुकतावृद्धेः, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च प्रभूतमवसरं दास्यति।



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अस्य अनुपूरक-रूपेण द्रुतवाचनाय छात्राणां मनोविनोदाय स्वतोऽनुशीलनाय च ललिता सामग्री प्रदत्ता। तत्र कविता-गीत-कथा-प्रहेलिकादिविषया: संकलिता:।

बिहारराज्यशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद् एतस्य निर्माणकार्ये संस्कृतपाठ्यपुस्तकविकाससमिते: अध्यक्षाय विश्रुतयशसे **डॉ० उमाशंकरशर्मणे** तत्सहायकेभ्य: प्रतिभागिभ्यश्च भूयोभूय: साधुवादं वितरति, स्वकृतज्ञतां च ज्ञापयति। तदनु पाठ्य-पुस्तक-निर्माणक्रमे संयोजककर्मणि दत्तचित्ताय **डॉ० सुरेन्द्र कुमार पालाय** च महानामाभारं प्रकाशयति ।

**हसन वारिस:**

निदेशक: (प्रभारी)

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार



# भूमिका

संस्कृत भाषा की महत्ता सर्वविदित है। यह न केवल संसार की उपलब्ध तथा जीवित भाषाओं में प्राचीनतम है अपितु अपने चार हजार वर्षों के दीर्घ इतिहास में इसने अनेक घात-प्रतिघात सहते हुए भारत की अमूल्य संस्कृति और समाज को अपने में सँजो कर रखा है। इससे उत्तर, पूर्व तथा मध्यभारत में प्रचलित हिन्दी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, बंगला, उड़िया, असमिया, मैथिली आदि भाषाएँ साक्षात् निकली हैं। यही नहीं, इस भाषा की शब्द-सम्पदा से दक्षिण भारत की चारों प्रधान भाषाएँ (तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम) विपुल रूप में उपकृत हुई हैं। इस प्रकार अखिल भारतीय स्तर पर हमारे बहुभाषिक देश की यह सर्वोत्तम ज्ञान-सम्पदा है। इसका अध्ययन इसी दृष्टि से आज अपेक्षित है।

संस्कृत का व्याकरण इतना समृद्ध और व्यापक नियमों से अनुप्रमाणित है कि शब्द के प्रत्येक अक्षर की व्याख्या इससे की जा सकती है। विदेशी भाषाओं के विद्वानों ने इसपर आश्चर्य प्रकट किया है। इसके अतिरिक्त शब्द-निर्माण की अद्भुत क्षमता इस भाषा में है जिससे लाखों-लाख नये शब्द इसकी व्याकरण पद्धति से निकल सकते हैं। विज्ञान का कितना भी विकास हो, उसके उपकरणों के लिए पारिभाषिक शब्दावली देने में संस्कृत भाषा विश्व की सभी भाषाओं की अपेक्षा धनी है। 'योग' शब्द के पूर्व उपसर्गों के लगने पर प्रयोग, अनुयोग, वियोग, संयोग, अभियोग, आयोग, प्रतियोग, उपयोग, अतियोग आदि शब्दों के अतिरिक्त व्यायोग, प्रतिसंयोग, अभ्यायोग आदि दुहरे-तिहरे उपसर्गों के प्रयोग भी चल सकते हैं। दूसरी ओर प्रत्ययों की एक अपूर्व शृंखला शब्दों से लगकर शब्द-निर्माण की समृद्धि को प्रकाशित करने की दृश्यावली प्रस्तुत कर सकती है। समासों की बात तो इससे अलग ही है।

ऐसी समृद्ध भाषा को आज के भौतिक युग में अनेक संघर्ष तथा प्रतिघात झेलने पड़ रहे हैं। फिर भी इसका प्रसार अभिनव साहित्यिक तथा शास्त्रीय कृतियों के द्वारा हो रहा है। एक विद्वान का तो कथन है कि संस्कृत के विकास के लिए बीसवीं शताब्दी स्वर्णयुग रही है क्योंकि इतनी रचनाएँ संस्कृत में कभी नहीं हुईं जितनी इस एक शताब्दी में। इससे संस्कृत भाषा की जीवनी-शक्ति का अनुमान होता है। आज संस्कृत में वे सारी बातें आ रही हैं जो एक आधुनिक सम्पन्न भाषा में हैं।

संस्कृत की प्राचीनता के साथ आधुनिकता का परिदृश्य निर्विवाद है। ऐसी भाषा का अनुशीलन अपनी संस्कृति के प्रति तो हमें प्रबुद्ध बनाता ही है, आधुनिक विषयों को भी इस प्राचीन



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भाषा के द्वारा आत्मसात् करने के लिए प्रवृत्त करता है। आज हमारे बहुभाषिक राष्ट्र में इस सर्वमान्य भाषा की आवश्यकता राष्ट्र की एकता के लिए है। अंगरेजी जैसी विदेशी भाषा की अपेक्षा यह अपने देश की प्राचीनतम सांस्कृतिक भाषा है। इसलिए इसके अनिवार्य अनुशीलन की प्रासंगिकता है। जिस प्रकार बहुभाषी कक्षा में अन्य भाषाओं को सीखने में संस्कृत सहायक होती है उसी प्रकार कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता का संस्कृत सीखने में उपयोग किया जा सकता है। बिहार राज्य के संदर्भ में यह बहुभाषिकता केवल मैथिली, भोजपुरी तथा मगही एवं उनकी अंगरूप (अंगिका, बज्जिका आदि) भाषाओं तक सीमित है। ये सब संस्कृत से अपनी शब्द, सम्पत्ति, व्याकरण तथा वाक्य-रचना का व्यापक प्रभाव प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्धारित विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आलोक में तथा बिहार की अपनी विद्यालयी आवश्यकता के आलोक में माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 तथा 10) के लिए वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। इस पाठ्यचर्या में निम्नांकित पाँच लक्ष्य रखे गये हैं–

1. भारमुक्त शिक्षा का कार्यक्रम।
2. आनन्दप्रद अनुभूति के रूप में शिक्षा की प्रस्तुति।
3. जीवन के परिवेश से शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध होना।
4. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार।
5. कण्ठाग्र करने की परम्परागत पद्धति से हटकर छात्रों को स्वतंत्र चिन्तन के लिए प्रेरित करना।

संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम में उपर्युक्त निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप नवम कक्षा के लिए पीयूषम् (प्रथम भाग) नामक पाठ्यक्रम की प्रस्तुति की गयी है। नवीन पाठ्यक्रम तथा वर्तमान पुस्तक की विशिष्टताओं में सर्वप्रथम यह उल्लेखनीय है कि इसमें संस्कृत को एक जीवन्त भाषा के रूप में देखा गया है जिसकी धारा निरन्तर प्रवाहित होती रही हैं। इसी दृष्टि से इसमें नये विषयों और नयी रचनाओं का समावेश किया गया है। नये विषयों में बिहार के सांस्कृतिक वैभव, आधुनिक ग्राम्यजीवन की समस्याओं तथा किशोरों के मनोविज्ञान पर पाठ रखे गये हैं । धार्मिक समरसता की दृष्टि से मुसलमानों के सबसे उल्लासमय पर्व ईद (ईद-उल-फितर) का निरूपण करते हुए स्वतन्त्र पाठ बनाया गया है। बिहार के स्वतन्त्रता-सेनानी बाबू कुँवर सिंह की संक्षिप्त जीवनी भी दी गयी है। संस्कृत की



नयी रचनाओं में राष्ट्रबोध से सम्बद्ध एक लघुकथा और बिहार के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल वैशाली पर एक संस्कृत गीत भी दिया गया है। इसी प्रकार संस्कृत के महत्त्व पर एक संवादात्मक पाठ भी समाविष्ट किया गया है। ये सभी पाठ संस्कृत की वर्तमान धारा से जुड़े हुए हैं।

आधुनिक संस्कृत पाठों का अर्थ यह नहीं है कि इस भाषा की समृद्ध प्राचीन रचनाओं की उपेक्षा की गयी है अपितु वर्ग के स्तर के अनुरूप महाभारत के वनपर्व के अन्त में आये हुए यक्ष और युधिष्ठिर के बीच का प्रश्नोत्तर, पञ्चतन्त्र की दो कथाएँ एवं नीतिशतक के कुछ चुने गये पद्य भी छात्र-हित में रखे गये हैं। इसी क्रम में प्राचीन संस्कृत साहित्य में पर्यावरण-विषयक चर्चा को भी रख सकते हैं। धार्मिक संकीर्णताओं से मुक्त उपनिषदों तथा भगवद्गीता के कुछ अंशों को परमेश्वर की प्रार्थना के रूप में आरम्भ में रखा गया है। ये सब संस्कृत की प्राचीन विरासत को रेखांकित करते हैं।

प्रत्येक पाठ के आरम्भ में सम्बद्ध पाठ के समुचित सन्दर्भ संस्कृत भाषा में दिये गये हैं। अल्प परिश्रम से उन्हें समझा जा सकता है। पाठों को स्वतः समझने के लिए उनके अन्त में शब्दार्थ तथा अपेक्षित व्याकरण-सन्दर्भ दिये गये हैं। पाठों को विविध आयामों में समझने के लिए यथेष्ट अभ्यासचारिका भी दी गयी है जिसमें कुछ मौखिक और कुछ लिखित अभ्यासकार्य का समावेश है। कुछ पाठों में योग्यता-विस्तार के अन्तर्गत अतिरिक्त सूचनाएँ दी गयीं हैं जिनसे कहीं-कहीं पाठों को उचित परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है और कहीं-कहीं अधिक जानने की उत्सुकता भी हो सकती है।

**पाठों का परिचय–** यद्यपि सभी पाठों के सन्दर्भ उनके आरम्भ में दिये गये हैं तथापि यहाँ उनका संक्षिप्त परिचय दिया जाता है। यहाँ कुल पन्द्रह पाठ हैं जिनमें चार पद्यात्मक, तीन कथात्मक, एक संवादात्मक तथा सात निबन्धात्मक हैं। इनका परिचय इस प्रकार हैं–

**(क) पद्यात्मक पाठ–**

**1. ईशस्तुतिः–** इसमें तीन मन्त्र विभिन्न उपनिषदों से तथा दो पद्य भगवद्गीता से लिये गये हैं। ये उपनिषदें हैं– तैत्तिरीय, बृहदारण्यक तथा श्वेताश्वतर। तैत्तिरीय उपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद से सम्बद्ध है। इसमें तीन वल्लियाँ (खण्ड) हैं जिनके नाम हैं– शिक्षावल्ली, ब्रह्मानन्दवल्ली तथा भृगुवल्ली। ये वल्लियाँ भी अनुवाकों (उपखण्डों) में विभक्त हैं। शुक्ल यजुर्वेद से संबद्ध बृहदारण्यकोपनिषद् विशाल ग्रन्थ है जो छह अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय विभिन्न संख्या वाले ब्राह्मणों में विभक्त है। यह उपनिषद् विशेष रूप से मिथिला के योगिराज याज्ञवल्क्य के दार्शनिक विचारों के लिए प्रसिद्ध है। श्वेताश्वतरोपनिषद् भी कृष्ण यजुर्वेद से संबद्ध है। यह छह अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय में पद्यात्मक मन्त्र हैं। ईशस्तुति में संकलित मन्त्र आनन्दरूप, परम शक्तिशाली, जगत् के कण-कण में



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विराजमान परमेश्वर की वन्दना करते हुए प्रकाश की प्राप्ति के लिए प्रार्थना भी करते हैं।

**2. यक्षयुधिष्ठिर-संवादः–** यह पाठ महाभारत के वनपर्व के एक अध्याय से संकलित है। युधिष्ठिर वन में एक सरोवर के रक्षक एक अदृश्य यक्ष की दार्शनिक जिज्ञासाओं को अपने उत्तरों द्वारा शान्त करते हैं। कथा के अनुसार अन्य भाई बिना उत्तर दिये ही जल पीना चाहते थे जिससे यक्ष ने उन्हें अचेत कर दिया था। युधिष्ठिर ने उचित उत्तर देकर न केवल यक्ष को प्रसन्न किया, अपितु अपने भाइयों का चैतन्य भी वापस माँगा। वे पूर्ववत् जी उठे।

**3. नीतिपद्यानि–** इस पाठ में संस्कृत के प्रसिद्ध कवि भर्तृहरि के नीतिविषयक मुक्तक काव्य 'नीतिशतक' के कुछ सरल पद्य दिये गये हैं। भर्तृहरि एक राजा के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं जिन्होंने संसार से ऊबकर संन्यासी-रूप ग्रहण किया था। इनके तीन मुक्तक काव्य हैं– नीतिशतक, शृंगारशतक और वैराग्यशतक। इनकी भाषा-शैली सरल और ललित है। इनमें एक-एक पद्य स्वतन्त्र भाव प्रकट करता है।

**4. विश्ववन्दिता वैशाली–** यह आधुनिक गीत है जिसमें लिच्छवियों की प्रसिद्ध राजधानी वैशाली की महिमा गायी गयी है। वैशाली में ही संसार का पहला गणतन्त्र शासन स्थापित हुआ था। बाद में यह सभासदों के आपसी कलह से नष्ट हो गया। आधुनिक वैशाली जिले में लालगंज के निकट इस राजधानी के प्राचीन अवशेष देखे जा सकते हैं। इस गीत के लेखक डॉ० वैद्यनाथ मिश्र हैं।

### ( ख ) कथात्मक पाठ

**1. लोभाविष्टः चक्रधरः–** यह 'पञ्चतन्त्र' नामक प्राचीन नीतिकथासंग्रह से लिया गया पाठ है। इस कथासंग्रह के लेखक विष्णुशर्मा कहे गये हैं। पञ्चतन्त्र में पाँच खण्ड हैं। उनके नाम हैं– मित्रभेद (22 कथाएँ), मित्रसम्प्राप्ति (6 कथाएँ), काकोलूकीय (16 कथाएँ), लब्धप्रणाश (11 कथाएँ) तथा अपरीक्षितकारक (14 कथाएँ)। मुख्य 6 कथाओं को जोड़कर कुल 75 कथाएँ पूरे संग्रह में हैं। कथाएँ गद्य में हैं जिनके बीच अनेक पद्य भी नीतिश्लोक के रूप में हैं। इस प्रकार प्रायः 1100 पद्य भी आये हैं। सामान्यतः पशु-पक्षियों को पात्र बनाकर ये नीतिकथाएँ प्रस्तुत हैं किन्तु पाँचवें तन्त्र (अपरीक्षित कारक) में मनुष्यों की ही कथाएँ हैं। प्रस्तुत पाठ इसी तन्त्र का संकलित अंश है जिसमें अधिक लोभ का दुष्परिणाम दिखाया गया है।

**2. ज्ञानं भारः क्रियां विना–** यह पाठ भी पञ्चतन्त्र के अन्तिम तन्त्र से संकलित है जिसमें व्यावहारिकता या लौकिकता के अभाव में कोरे (शुष्क) ज्ञान को व्यर्थ बताया गया है। तीन ब्राह्मणपुत्रों ने अपनी विद्या के बल पर मृत सिंह को जीवित कर दिया और उसी के द्वारा वे मार डाले गये। उनमें इसके परिणाम का बोध ही नहीं था।



**3. राष्ट्रबोधः–** यह एक आधुनिक लघुकथा है जिसमें राष्ट्र के आन्तरिक शत्रुओं को दण्डित करने की कहानी है। ये शत्रु नकली सामान बनाकर बाजारों में उन्हें खपाते हैं। इन सामानों को असली समझकर लोग खरीदते हैं। इन राष्ट्रद्रोहियों की पहचान करके दण्डित कराना वस्तुतः राष्ट्रभक्ति है।

### ( ग ) संवादात्मक पाठ

**1. संस्कृतस्य महिमा–** कक्षा में छात्रों तथा अध्यापक के बीच संस्कृत भाषा और साहित्य की व्यापकता को लेकर एक संवाद की परिकल्पना इस पाठ में हुई है।

### ( घ ) निबन्धात्मक पाठ

**1. चत्वारो वेदाः–** इस पाठ में प्राचीन भारतीय संस्कृति के आधारग्रन्थों के रूप में चारों वेदों की संरचना और स्वरूप का परिचय दिया गया है तथा वैदिक साहित्य की व्यापकता निरूपित है।

**2. संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणम्–** पृथ्वी के ऊपर वर्तमान प्राणियों के जीवन के अनुकूल प्राकृतिक परिस्थितियों का सन्तुलन पर्यावरण है जिसकी चर्चा प्राचीन संस्कृत साहित्य के ग्रन्थों में मिलती है। इस पाठ में उससे सन्दर्भ लिये गये हैं तथा प्राकृतिक उपकरणों को देवरूप में देखने की चर्चा की गयी है। इसी से प्रकृति का सौन्दर्य और प्राणिजगत् का व्यवस्थित जीवन संभव है।

**3. बिहारस्य सांस्कृतिकं वैभवम्–** संगीत, नृत्य, चित्रकला और मूर्तिकला में बिहार राज्य की स्थिति बहुत आगे रही है। परम्परा-प्राप्त इन सांस्कृतिक क्षेत्रों में आजतक कलाकार और शिल्पी अपना अनुपम योगदान कर रहे हैं। इस पाठ में अपने राज्य की इसी सांस्कृतिक उपलब्धि का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

**4. ईद-महोत्सवः–** मुसलमान बन्धुओं के सबसे बड़े उत्सव ईद-उल-फित्र के महत्त्व, स्वरूप तथा कतिपय विधानों का वर्णन इस पाठ में किया गया है जिससे संस्कृत की व्यापकता और ग्राह्यता पर प्रकाश पड़ता है।

**5. ग्राम्यजीवनम्–** सदा से ग्रामजीवन को ईश्वर का वरदान और आनन्द का रूप माना गया है किन्तु आज ग्राम अभिशाप बने हुए हैं। तभी वहाँ से लोग नगरों की ओर भाग रहे हैं। इस पाठ में ग्राम्यजीवन की दशा और सुधार की दिशा का निरूपण किया गया है।

**6. वीर कुँवर सिंहः–** 1857 ई० के प्रथम स्वाधीनता-संग्राम में अंगरेजों के विरुद्ध क्रान्ति के अग्रणी नेताओं में जगदीशपुर (भोजपुर) के सामन्त बाबू कुँवर सिंह का नाम गर्व से लिया जाता है। इनपर



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

संस्कृत में महाकाव्य भी लिखा गया है। हिन्दी-अंगरेजी में इनके कई जीवन-चरित मिलते हैं। इस पाठ में इनका संक्षिप्त जीवन वर्णित है।

**7. किशोराणां मनोविज्ञानम्–** विद्यालयों की उच्च कक्षाओं के छात्र-छात्राओं में भावी जीवन के प्रति अनेक प्रकार के भाव उत्पन्न होते हैं। महत्त्वाकांक्षा भी उनमें अन्यतम है। अपनी भावनाओं को स्वाभाविक रूप से विकसित करके समाजोपयोगी बनाना आवश्यक है। इसी लक्ष्य को लेकर यह पाठ दिया गया है।

**अध्यापकों से निवेदन–** संस्कृत के प्रति छात्र-छात्राओं में रुचि उत्पन्न करने के लिए कक्षा में विद्यमान बहुभाषिकता को अध्यापक आधार-रूप में प्रयोग करें। यथासाध्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी माध्यम बनाते हुए संस्कृत भाषा में दक्षता पाने के लिए छात्रों को उन्मुख करें।

संस्कृत व्याकरण का अध्यापन पाठ्य-पुस्तक में आये हुए प्रयोगों को आधार बनाकर करना समीचीन होगा। इससे छात्रों में कण्ठस्थीकरण की प्रवृत्ति की अपेक्षा सर्जनात्मक क्षमता का विकास होगा। अभ्यास के लिए जो सामग्री दी गयी है उसे आधार बनाकर नये-नये अभ्यास-प्रश्नों का निर्माण करें तो छात्रों की उन्मुखता अधिक हो सकेगी।

पद्यात्मक पाठों का स्वर-सहित उच्चारण सिखायें तो वे पाठ सहज ही हृदयंगम हो जाएँगे। गद्य-पाठों को भी धैर्य-पूर्वक पढ़ना सिखायें। व्याकरण के प्रकरणों को पृथक् न पढ़ाकर पाठक्रम में ही सन्धि, समास, प्रकृति-प्रत्यय-विभाग (व्युत्पत्ति), विभक्ति इत्यादि की चर्चा करते हुए छात्रों को सिखायें। इससे व्याकरण भारस्वरूप नहीं होगा। संक्षेप में कहें कि छात्रों को कुशल बनाना और अपने को अध्यापक के रूप में यशस्वी बनाना शिक्षा के इन दो मूल सूत्रों को न भूलें।

## द्रुतवाचन ( Rapid Reading )

इस मूल पाठ्य-पुस्तक के अनुपूरक ग्रन्थ के रूप में द्रुतपाठ या द्रुतवाचन के लिए संस्कृत से सम्बद्ध सामग्री दी गयी है। शिक्षा की अभिनव प्रगति के क्रम में भाषा-विषयों के अध्ययन के लिए इस प्रकार की सामग्री की उपयोगिता अंकित की गयी है। यह सामग्री अनेक लक्ष्यों से सम्पन्न है। पहला लक्ष्य तो छात्रों की जिज्ञासा और रुचि के परिष्करण का है। इस नयी पाठ-सामग्री का परीक्षा से सम्बन्ध नहीं है अत: कोई भार की बात छात्रों के मन में नहीं रहेगी तो इसका वाचन वे आनन्दपूर्वक करेंगे। इससे उनकी ज्ञानवृद्धि भी होगी– जो इसका दूसरा लक्ष्य है। कोई सामग्री यदि पढ़ी जाये तो वर्तमान ज्ञान की समृद्धि में वह योगदान करेगी ही।



इसका तीसरा लक्ष्य है छात्रों की चिन्तन-प्रक्रिया और सर्जनात्मकता (Creativity) का विकास करना। जिस प्रकार समाचार-पत्रों तथा अनुपूरक साहित्य की सामान्य पुस्तकों के अनुशीलन से छात्रों की रचना-क्षमता और चिन्तन-शक्ति विकसित होती है उसी प्रकार इस अनुपूरक सामग्री का आस्वादन सामान्य साहित्य के रूप में किया जायेगा तो निश्चित ही छात्रों की बौद्धिक क्षमता का विकास होगा, उनमें कुछ लिखने-पढ़ने की प्रवृत्ति पनपेगी तथा यह जानकारी उन्हें मिलेगी कि संस्कृत में आज किस प्रकार की रचनाएँ हो रही हैं।

द्रुतपाठ के लिए संकलित इस सामग्री में जिन आधुनिक रचनाओं को संकलित किया है उनके रचनाकारों के प्रति हम अत्यधिक कृतज्ञ हैं।

मूल पाठ्यपुस्तक तथा द्रुतवाचन के लिए सामग्री-प्रस्तुति में यथासाध्य परिश्रम किया गया है। विभिन्न प्रतिभागियों के द्वारा जो निर्देशानुसार कार्य सम्पादित किया गया उसे यथासम्भव एकरूप बनाने एवं परिष्कृत करने का प्रयास हुआ है तथापि इसमें जो त्रुटि हुई हो उसके लिए अग्रिम क्षमा माँगने के साथ अनुरोध भी करता हूँ कि अपने सत्परामर्शों से अध्यापक-बन्धु मुझे अवगत करायें जिससे 'तेजस्वि नावधीतमस्तु' का लक्ष्य प्राप्त हो सके।

**डॉ० सुरेन्द्र कुमार**
समन्वयक
संस्कृत पाठ्य-पुस्तक-विकास-समिति
(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार)

**उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'**
अध्यक्ष
संस्कृत पाठ्य-पुस्तक-विकास-समिति
(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार)



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

# विषयानुक्रमणिका


| | | पृष्ठाङ्का: |
|---|---|---|
| 1. | ईशस्तुति: (उपनिषद्, भगवद्गीता) | 1 |
| 2. | लोभाविष्ट: चक्रधर: (पञ्चतन्त्रम्) | 6 |
| 3. | यक्षयुधिष्ठिर-संवाद: (महाभारतम्) | 17 |
| 4. | चत्वारो वेदा: (निबन्ध:) | 22 |
| 5. | संस्कृतस्य महिमा (वार्तालाप:) | 27 |
| 6. | संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणम् (निबन्ध:) | 34 |
| 7. | ज्ञानं भार: क्रियां विना (पञ्चतन्त्रम्) | 42 |
| 8. | नीतिपद्यानि (नीतिशतकम्) | 49 |
| 9. | बिहारस्य सांस्कृतिकं वैभवम् (निबन्ध:) | 57 |
| 10. | ईदमहोत्सव: (निबन्ध:) | 64 |
| 11. | ग्राम्यजीवनम् (निबन्ध:) | 69 |
| 12. | वीर कुँवर सिंह: (निबन्ध:) | 75 |
| 13. | किशोराणां मनोविज्ञानम् (निबन्ध:) | 84 |
| 14. | राष्ट्रबोध: (आधुनिकलघुकथा) | 95 |
| 15. | विश्ववन्दिता वैशाली (गीतम्) | 105 |




https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रथमः पाठः

# ईशस्तुतिः

[उपनिषदः भगवद्गीता चेति जीवनस्य अभ्युदयाय विकसिताः अमूल्या ग्रन्थाः। उपनिषदः अनेकेषाम् ऋषीणां विचारान् प्रकटयन्ति, भगवद्गीता तु केवलस्य योगेश्वरस्य कृष्णस्य। उभयत्रापि परमात्मनः सर्वशक्तिसंपन्नता दर्शिता। अस्मिन् पाठे तस्यैव परमेश्वरस्य स्तुतिः वर्तते]

**यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।**
**आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन ॥** (तैत्तिरीय 2.9)

**असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।**
**मृत्योर्मा अमृतं गमय॥** (बृहदारण्यक 1.3.28)

**एको देवः सर्वभूतेषु गूढः। सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा ।**
**कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः। साक्षी चेताः केवलो निर्गुणश्च ॥**
(श्वेताश्व० 6.11)

**त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः**
**त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।**
**वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम**
**त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥** (गीता 11.38)

**नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते**
**नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।**
**अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं**
**सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ॥** (गीता 11.40)



## शब्दार्थाः

| | | |
|---|---|---|
| **अप्राप्य** | न लब्ध्वा | न पाकर |
| **विद्वान्** | जानन् | जानने वाला |
| **बिभेति** | भयं लभते | डरता है |
| **कुतश्चन** | कस्मादपि | किसी से भी |
| **मा** | माम् | मुझे |
| **गमय** | प्रापय, प्रेषय | भेजो |
| **गूढः** | प्रच्छन्नः | छिपा हुआ |
| **सर्वभूतान्तरात्मा** | सर्वेषां पदार्थानाम् अभ्यन्तरे वर्तमानः | सभी वस्तुओं के भीतर स्थित |
| **कर्माध्यक्षः** | कार्याणां संचालकः | कर्मों पर नियंत्रण रखने वाला |
| **सर्वभूताधिवासः** | सर्वेषु पदार्थेषु निवासशीलः | सभी वस्तुओं में रहने वाला |
| **चेताः** | जानन्, चैतन्यरूपः | चेतनारूप |
| **परम्** | उत्कृष्टम् | सबसे बड़ा |
| **निधानम्** (नपुं०) | भाण्डागारम् | भण्डार, स्थान |
| **धाम** (नपुं०) | प्रकाशपुञ्जम् | आलोकमय स्थान |
| **ततम्** (Öतन् + क्त) | प्रसारितम्, व्याप्तम् | फैलाया गया, व्याप्त |
| **अनन्तवीर्य + अमित विक्रमः** | अपरिमेयबलयुक्तः, अद्भुतः पराक्रमी | अनन्त शक्तिवाला, अनुपम पराक्रमी |
| **समाप्नोषि** (सम् + Öआप्) | आत्मसात् करोषि | अपने में विलीन करते हो |

## व्याकरणम्

**अप्राप्य**- नञ् + प्र + Öआप् + ल्यप्। **विद्वान्**- Öविद् + शतृ (वस्-आदेश)। **बिभेति**- Öभी + लट्लकार + प्र०पु०, एक०। **कुतश्चन**- कुतः + चन (विसर्गसन्धि)। **ज्योतिर्गमय**- ज्योतिः + गमय (विसर्गस्य र्)। **मृत्योर्मा**- मृत्योः + मा (विसर्गस्य र्)। **सर्वभूतेषु**- सर्वाणि भूतानि तेषु -कर्मधारयसमासः। **सर्वभूतान्तरात्मा**- सर्वभूतानाम् अन्तरात्मा- षष्ठीतत्पुरुषसमास। **कर्माध्यक्षः**- कर्मणाम् अध्यक्षः (संचालकः) षष्ठी त०स०। **सर्वभूताधिवासः**- सर्वभूतानाम् अधिवासः- षष्ठी



https://www.studiestoday.com

त०स०। **गूढ:**- Öगुह् (गोपन) + क्त। **निर्गुणश्च**- नि: + गुण: + च (विसर्गसन्धि:)। **व्यापी**- वि + Öआप् + णिनि। **निधानम्**- नि + Öधा + ल्युट्। **वेत्तासि**- वेत्ता + असि (दीर्घस्वरसन्धि)। **वेत्ता**- Öविद् + तृच्। **वेद्यम्**- Öविद् + ण्यत्। **अनन्तरूप**- अनन्तानि रूपाणि यस्य स:- बहुव्रीहि समास, सम्बोधन रूप। **पृष्ठत:**- पृष्ठ + तसिल् (पञ्चमी इति अर्थे:)। **सर्वत:**- सर्व + तसिल्। **नमोऽस्तु**- नम: + अस्तु। **विक्रमस्त्वम्**- विक्रम: + त्वम्। **ततोऽसि**- तत: + असि।

## अभ्यास: ( मौखिक: )

1. **एकपदेन उत्तरं वदत–**

(क) ईश्वरात् का: निवर्तन्ते?

(ख) केन सह ता: निवर्तन्ते?

(ग) ब्रह्मण: किं स्वरूपम्?

(घ) क: न बिभेति?

(ङ) तमस: कुत्र गन्तुमिच्छति?

2. **एतानि पद्यानि एकपदेन मौखिकरूपेण पूरयत–**

(क) यतो वाचो ………………।

(ख) आनन्दं ब्रह्मणो ………………।

(ग) सर्वभूतेषु ………………।

(घ) केवलो ………………।

(ङ) त्वमस्य विश्वस्य परं ………………।

3. **एतेषां पदानाम् अर्थं वदत– विद्वान, गूढ:, बिभेति, कुतश्चन, ततम् ।**

4. **स्वस्मृत्या काञ्चित् संस्कृतप्रार्थनां श्रावयत।**



## अभ्यास: ( लिखित: )

1. **सन्धिविच्छेदं कुरुत–**

(क) कुतश्चन

(ख) ज्योतिर्गमय

(ग) वेत्तासि

(घ) नमोऽस्तु

(ङ) ततोऽसि

2. **प्रकृति-प्रत्यय-विच्छेदं कुरुत–**

(क) अप्राप्य

(ख) विद्वान्

(ग) गूढ:

(घ) ततम्

(ङ) वेद्यम्

3. **समासविग्रहं कुरुत–**

(क) सर्वभूतेषु

(ख) कर्माध्यक्ष:

(ग) अनन्तरूप:

(घ) सर्वभूताधिवास:

(ङ) अमितविक्रम:

4. **रिक्तस्थानानि पूरयत–**

(क) ……… मा सद्गमय।

(ख) तमसो मा ……… गमय।

https://www.studiestoday.com

(ग) नमः ········ दथ पृष्ठतस्ते।

(घ) वेत्तासि ········ च ········ च धाम।

5. **अधोनिर्दिष्टानां पदानां स्ववाक्येषु प्रयोगं कुरुत–**

(क) बिभेति

(ख) निवर्तते

(ग) वेत्ता

(घ) सर्वतः

(ङ) नमः

## योग्यता-विस्तार

1. उपनिषद् वैदिक साहित्य के ज्ञानकाण्ड को प्रकाशित करती हैं। विभिन्न वैदिक संहिताओं के अन्तर्गत इनका विकास हुआ है। प्रमुख दस उपनिषदों को हम इस प्रकार विभक्त करते हैं। (क) ऋग्वेद से सम्बद्ध- ऐतरेय। (ख) शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध– ईशावास्य तथा बृहदारण्यक। (ग) कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध– तैत्तिरीय तथा कठ (घ) सामवेद से सम्बद्ध– केन तथा छान्दोग्य। (ङ) अथर्ववेद से सम्बद्ध– मुण्डक, माण्डूक्य तथा प्रश्न। बृहदारण्यक और छान्दोग्य प्रायः समान आकार की सबसे बड़ी उपनिषद् हैं। माण्डूक्य सबसे छोटी उपनिषद् है जिसमें केवल 12 वाक्य या मन्त्र हैं।

2. उपनिषदों में सामान्यतः ब्रह्म, आत्मा, अद्वैत (एक ही तत्त्व से सब कुछ निकला) सृष्टि, प्राण, कर्मसिद्धांत (कर्म का फल मिलना), वैराग्य, ज्ञान आदि के उपदेश हैं। दार्शनिक दृष्टि से ये विश्व भर में महत्त्वपूर्ण मानी गयी हैं।

3. भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व (अध्याय 25-42) में कृष्ण द्वारा अर्जुन को उपदिष्ट ग्रंथ हैं। 18 अध्यायों में विभक्त इसमें 700 श्लोक हैं। निराश व्यक्ति को जीवन में कर्म के प्रति प्रवृत्त करना इसका उद्देश्य है। प्राचीनकाल से ही इसका महत्त्व रहा है। वर्तमान युग में बालगंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी तथा विनोबा भावे ने स्वतंत्र व्याख्याएँ लिखकर इसका बहुत प्रचार किया। स्वाधीनता-संग्राम के सैनिकों ने गीता को अपना पाथेय बनाया था।



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

**द्वितीयः पाठः**

# लोभाविष्टः चक्रधरः

[पञ्चतन्त्रं संस्कृतसाहित्यस्य अतीव लोकप्रियो ग्रन्थः। अस्य रूपान्तराणि प्राचीने काले एव नाना वैदेशिकभाषासु कृतानि आसन्। अतएव अस्य संस्कृतभाषायामपि विविधानि संस्करणानि जातानि। पञ्चभिर्भागैर्विभक्तमिदम् अन्वर्थतः पञ्चतन्त्रम्। तत्र मित्रभेदः, मित्रसम्प्राप्तिः, काकोतूकीयम्, लब्धप्रणाशः, अपरीक्षितकारकं चेति पञ्च भागाः सन्ति। अन्तिमस्य भागस्यैव कथाविशेषः पाठेऽस्मिन् संपाद्य प्रस्तुतो वर्तते। अत्र लोभाधिक्यस्य दुष्परिणामः कथाव्याजेन प्रस्तुतः]

कस्मिंश्चित् अधिष्ठाने चत्वारो ब्राह्मणपुत्राः मित्रतां गता वसन्ति स्म। ते दारिद्र्योपहता मन्त्रं चक्रुः– अहो धिगियं दरिद्रता। उक्तञ्च–

**'वरं वनं व्याघ्रगजादिसेवितं**
**जनेन हीनं बहुकण्टकावृतम् ।**
**तृणानि शय्या परिधानवल्कलं**
**न बन्धुमध्ये धनहीनजीवितम् ॥**

'तद्गच्छामः कुत्रचिदर्थाय' इति संमन्त्र्य स्वदेशं परित्यज्य प्रस्थिताः। क्रमेण गच्छन्तः ते अवन्तीं प्राप्ताः। तत्र क्षिप्राजले कृतस्नाना महाकालं प्रणम्य यावन्निर्गच्छन्ति, तावद्भैरवानन्दो नाम योगी सम्मुखो बभूव। तेन ते पृष्टाः– कुतो भवन्तः समायाताः? किं प्रयोजनम्?

ततस्तैरभिहितम्– वयं सिद्धियात्रिकाः। तत्र यास्यामो यत्र धनाप्तिर्मृत्युर्वा भविष्यतीति। एष निश्चयः। उक्तञ्च–

**अभिमतसिद्धिरशेषा भवति हि पुरुषस्य पुरुषकारेण ।**
**दैवमिति यदपि कथयसि पुरुषगुणः सोऽप्यदृष्टाख्यः ॥**

तत्कथ्यतामस्माकं कश्चिद्धनोपायः। वयमप्यतिसाहसिकाः। उक्तञ्च–

**महान्त एव महतामर्थं साधयितुं क्षमाः ।**
**ऋते समुद्रादन्यः को बिभर्ति वडवानलम् ॥**



भैरवानन्दोऽपि तेषां सिद्ध्यर्थं बहूपायं सिद्धवर्तिचतुष्टयं कृत्वा आर्पयत्। आह च– गम्यतां हिमालयदिशि, तत्र सम्प्राप्तानां यत्र वर्तिः पतिष्यति तत्र निधानमसन्दिग्धं प्राप्स्यथ। तत्र स्थानं खनित्वा निधिं गृहीत्वा निवर्त्यताम्।

तथानुष्ठिते तेषां गच्छतामेकतमस्य हस्तात् वर्तिः निपपात। अथासौ यावन्तं प्रदेशं खनति तावत्ताम्रमयी भूमिः। ततस्तेनाभिहितम्– 'अहो! गृह्यतां स्वेच्छया ताम्रम्।' अन्ये प्रोचुः– 'भो मूढ! किमनेन क्रियते? यत्प्रभूतमपि दारिद्र्यं न नाशयति। तदुत्तिष्ठ, अग्रतो गच्छामः। सोऽब्रवीत्– 'यान्तु भवन्तः नाहमग्रे यास्यामि।' एवमभिधाय ताम्रं यथेच्छया गृहीत्वा प्रथमो निवृत्तः।

ते त्रयोऽप्यग्रे प्रस्थिताः। अथ किञ्चिन्मात्रं गतस्य अग्रेसरस्य वर्तिः निपपात, सोऽपि यावत् खनितुमारभते तावत् रूप्यमयी क्षितिः। ततः प्रहर्षितः आह– गृह्यतां यथेच्छया रूप्यम्। नाग्रे गन्तव्यम्। किन्तु अपरौ अकथयताम्– आवामग्रे यास्यावः। एवमुक्त्वा द्वावप्यग्रे प्रस्थितौ। सोऽपि स्वशक्त्या रूप्यमादाय निवृत्तः।

अथ तयोरपि गच्छतोरेकस्याग्रे वर्तिः पपात। सोऽपि प्रहृष्टो यावत् खनति तावत् सुवर्णभूमिं दृष्ट्वा प्राह– 'भोः गृह्यतां स्वेच्छया सुवर्णम्। सुवर्णादन्यन्न किञ्चिदुत्तमं भविष्यति।' अन्यस्तु प्राह– 'मूढ! न किञ्चिद् वेत्सि। प्राक्ताम्रम् ततो रूप्यम्, ततः सुवर्णम्। तन्नूनम् अतःपरं रत्नानि भविष्यन्ति। तदुत्तिष्ठ, अग्रे गच्छावः। किन्तु तृतीयः यथेच्छया स्वर्णं गृहीत्वा निवृत्तः।

अनन्तरं सोऽपि गच्छन्नेकाकी ग्रीष्मसन्तप्ततनुः पिपासाकुलितः मार्गच्युतः इतश्चेतश्च बभ्राम। अथ भ्राम्यन् स्थलोपरि पुरुषमेकं रुधिरप्लावितगात्रं भ्रमच्चक्रमस्तकमपश्यत्। ततो द्रुततरं गत्वा तमवोचत्– 'भोः को भवान्? किमेवं चक्रेण भ्रमता शिरसि तिष्ठसि? तत् कथय मे यदि कुत्रचिज्जलमस्ति।

एवं तस्य प्रवदतस्तच्चक्रं तत्क्षणात्तस्य शिरसो ब्राह्मणमस्तके आगतम्। सः आह– किमेतत्?स आह– ममाप्येवमेतच्छिरसि आगतम्। स आह– तत् कथय, कदैतदुत्तरिष्यति? महती मे वेदना वर्तते।' स आह– 'यदा त्वमिव कश्चिद् धृतसिद्धवर्तिरेवमागत्य त्वामालापयिष्यति तदा तस्य मस्तके गमिष्यति।'

इत्युक्त्वा स गतः। अतः उच्यते–

**अतिलोभो न कर्तव्यो लोभं नैव परित्यजेत् ।**
**अतिलोभाभिभूतस्य चक्रं भ्रमति मस्तके ॥**



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

## शब्दार्थाः

| | | |
|---|---|---|
| **अधिष्ठाने** | स्थाने | स्थल (नगर) में |
| **उपहताः** | पीडिताः | पीडित |
| **चक्रुः ( Öकृ + लिट् )** | अकुर्वन् | किया |
| **आवृतम्** | आच्छादितम् | घिरा हुआ |
| **वल्कलम्** | स्थूलवस्त्रम् | मोटा वस्त्र |
| **परिधानम्** | वस्त्रम् | पोशाक, पहनावा |
| **साहसिकाः** | वीराः | वीर |
| **संमन्त्र्य** | विचार्य | सलाह करके |
| **परित्यज्य** | विहाय | छोड़कर |
| **आर्पयत्** | अददात् | दे दिया |
| **निधानम्** | (भूमिगतं) धनम् | (भूमि में गड़ा हुआ) धन |
| **यास्यामः** | गमिष्यामः | जायेंगे |
| **आप्तिः** | प्राप्तिः | पाना |
| **पुरुषकारेण** | उद्यमेन | उद्योग करने से |
| **अशेषाः** | सकलाः | सम्पूर्ण |
| **अभिमतसिद्धिः** | अभीष्टसिद्धिः | लक्ष्य की प्राप्ति |
| **दैवम्** | भाग्यम् | भाग्य |
| **अदृष्टाख्यः** | अदृष्टनामधारी | अदृष्ट नामक |
| **महान्तः** | महापुरुषाः | महान् लोग |
| **साधयितुम्** | निष्पादयितुम् | पूरा करने के लिए |
| **बिभर्ति** | धारयति | धारण करता है |
| **निवर्त्यताम्** | प्रत्यागम्यताम् | लौटा जाए |
| **प्रभूतम्** | अत्यधिकम् | अधिक |
| **रूप्यमयी** | रजतमयी | चाँदी की |
| **प्रहर्षितः** | प्रहृष्टः | प्रसन्न |



| | | |
|---|---|---|
| **अग्रेसरस्य** | अग्रयायिनः | आगे जाने वाले का |
| **निपपात** | अपतत् | गिर गया |
| **अभिधाय** | कथयित्वा | कह कर |
| **अब्रवीत्** | अकथयत् | कहा |
| **यान्तु** | गच्छन्तु | जायें |
| **वेत्सि** | जानासि | जानते हो |
| **प्राक्** | प्रथमम् | पहले |
| **नूनम्** | अवश्यम् | निश्चय ही |
| **अर्कः** | भानुः | सूर्य |
| **तनुः** | देहः | शरीर |
| **सन्तप्तः** | पीडितः | आकुल |
| **च्युतः** | भ्रष्टः | गिरा हुआ (भटका हुआ) |
| **बभ्राम ( Öभ्रम् + लिट् )** | भ्रमणं कृतवान् | भ्रमण किया |
| **पिपासाकुलितः** | तृषार्तः | प्यास से पीडित |
| **आलापयिष्यति** | कथयिष्यति | कहेगा |
| **आह** | ब्रवीति | कहता है |

## व्याकरणम्

### (क) सन्धिविच्छेद

| | | |
|---|---|---|
| **कस्मिंश्चित्** | – | कस्मिन् + चित् |
| **दारिद्र्योपहता** | – | दारिद्र्य + उपहता |
| **धिगियम्** | – | धिक् + इयम् |
| **उक्तञ्च** | – | उक्तम् + च |
| **कुत्रचिदर्थाय** | – | कुत्रचित् + अर्थाय |
| **यावन्निर्गच्छन्ति** | – | यावत् + निः + गच्छन्ति |
| **ततस्तैरभिहितम्** | – | ततः + तैः + अभिहितम् |



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

| | | |
|---|---|---|
| **धनाप्तिर्मृत्युर्वा** | – | धन + आप्तिः + मृत्युः + वा |
| **भविष्यतीति** | – | भविष्यति + इति |
| **सोऽप्यदृष्टाख्यः** | – | सः + अपि + अदृष्ट + आख्यः |
| **तत्कथ्यतामस्माकम्** | – | तत् + कथ्यताम् + अस्माकम् |
| **कश्चिद्धनोपायः** | – | कः + चित् + धन + उपायः |
| **वयमप्यतिसाहसिकाः** | – | वयम् + अपि + अतिसाहसिकाः |
| **समुद्रादन्यः** | – | समुद्रात् + अन्यः |
| **सिद्ध्यर्थम्** | – | सिद्धि + अर्थम् |
| **प्रोचुः** | – | प्र + ऊचुः |
| **तदुत्तिष्ठ** | – | तत् + उत्तिष्ठ |
| **सोऽब्रवीत्** | – | सः + अब्रवीत् |
| **त्रयोऽप्यग्रे** | – | त्रयः + अपि + अग्रे |
| **किञ्चिन्मात्रम्** | – | किम् + चित् + मात्रम् |
| **द्वावप्यग्रे** | – | द्वौ + अपि + अग्रे |
| **तयोरपि** | – | तयोः + अपि |
| **गच्छतोरेकस्याग्रे** | – | गच्छतः + एकस्य + अग्रे |
| **सुवर्णादन्यन्न** | – | सुवर्णात् + अन्यत् + न |
| **किञ्चिदुत्तमम्** | – | किम् + चित् + उत्तमम् |
| **गच्छन्नेकाकी** | – | गच्छन् + एकाकी |
| **इतश्चेतश्च** | – | इतः + च + इतः + च |
| **स्वेच्छया** | – | स्व + इच्छया |
| **स्थलोपरि** | – | स्थल + उपरि |
| **कुत्रचिज्जलम्** | – | कुत्रचित् + जलम् |
| **प्रवदतस्तच्चक्रम्** | – | प्रवदतः + तत् + चक्रम् |
| **तत्क्षणात्तस्य** | – | तत् + क्षणात् + तस्य |



| | | |
|---|---|---|
| **ममाप्येवमेतच्छिरसि** | – | मम + अपि + एवम् + एतत् + शिरसि |
| **कदैतदुत्तरिष्यति** | – | कदा + एतत् + उत्तरिष्यति |
| **त्वमिव** | – | त्वम् + इव |
| **धृतसिद्धवर्तिरेवमागत्य** | – | धृतसिद्धवर्तिः + एवम् + आगत्य |

## ( ख ) समासः

| | | |
|---|---|---|
| **ब्राह्मणपुत्राः** | – | ब्राह्मणस्य पुत्राः ( षष्ठी तत्पुरुष समास ) |
| **दारिद्र्योपहताः** | – | दारिद्र्येन उपहताः ( तृतीया तत्पुरुष स० ) |
| **बहुकण्टकावृतम्** | – | बहूनि कण्टकानि ( कर्मधारय ) तैः आवृतम् ( तृतीया तत्पुरुष स० ) |
| **बन्धुमध्ये** | – | बन्धूनां मध्ये ( षष्ठी तत्पुरुष ) |
| **कृतस्नानाः** | – | कृतं स्नानं यैः ते ( बहुव्रीहि समास ) |
| **धनाप्तिः** | – | धनस्य आप्तिः ( षष्ठी तत्पुरुष ) |
| **स्वेच्छया** | – | स्वस्य इच्छया ( षष्ठी तत्पुष ) |
| **बहूपायम्** | – | बहवः उपायाः यस्मिन् तत् ( बहुव्रीहि ) |
| **सिद्धियात्रिकाः** | – | सिद्धेः यात्रिकाः ( षष्ठी तत्पुरुष ) |
| **मार्गाच्युतः** | – | मार्गात् च्युतः ( पञ्चमी तत्पुरुष ) |
| **ग्रीष्मसन्तप्ततनुः** | – | ग्रीष्मेन सन्तप्ता ( तृतीया तत्पुरुष ) तथाभूता तनुः यस्य सः ( बहुव्रीहि ) |
| **पिपासाकुलितः** | – | पिपासया आकुलितः ( तृतीया तत्पुरुष ) |
| **भ्रमच्चक्रमस्तकम्** | – | भ्रमत् च तत् चक्रं भ्रमच्चक्रम् ( कर्मधारय स० ) भ्रमच्चक्रं मस्तके यस्य तम् भ्रमच्चक्रमस्तकम् ( बहुव्रीहि स० ) |
| **सिद्धवर्तिचतुष्टयम्** | – | सिद्धाः वर्तयः, तासां चतुष्टयम् ( कर्मधारयः, षष्ठी तत्पुरुष ) |

## ( ग ) व्युत्पत्तिः ( प्रकृति-प्रत्यय विभागः )

| | | |
|---|---|---|
| **उक्तम्** | – | Öवच् + क्त |
| **संमन्त्र्य** | – | सम् + Öमन्त्र् + ल्यप् |



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

| | | |
|---|---|---|
| **परित्यज्य** | – | परि + Öत्यज् + ल्यप् |
| **प्रस्थिताः** | – | प्र + Öस्था + क्तः |
| **प्रणम्य** | – | प्र + Öनम् + ल्यप् |
| **पृष्टः** | – | Öप्रच्छ् + क्त |
| **समायाताः** | – | सम + आ + Öया + क्त |
| **कृत्वा** | – | Öकृ + क्त्वा |
| **गृहीत्वा** | – | Öग्रह् + क्त्वा |
| **निवृत्तः** | – | नि + Öवृत् + क्त |
| **उक्त्वा** | – | Öवच् + क्त्वा |
| **आदाय** | – | आ + Öदा + ल्यप् |
| **प्रहृष्टः** | – | प्र + Öहृष् + क्त |
| **दृष्ट्वा** | – | Öदृश् + क्त्वा |

## अभ्यासः (मौखिकः)

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकपदेन दत्त–

(क) गृहं परित्यज्य ब्राह्मणपुत्राः प्रथमं कुत्र गताः?

(ख) योगी भैरवानन्दः तान् किम् आर्पयत्?

(ग) ताम्रस्य अनन्तरं तेन किं प्राप्तम्?

(घ) तृतीयः ब्राह्मणः खनित्वा किम् अपश्यत्?

(ङ) अतिलोभाभिभूतस्य जनस्य मस्तके किं भ्रमति?

2. सन्धिविच्छेदं कुरुत–

इतश्चेतश्च, किञ्चिन्मात्रम्, त्रयोऽप्यग्रे, समुद्रादन्यः, तयोरपि

3. समासविग्रहं कुरुत–



पिपासाकुलितः, स्वेच्छया, कृतस्नानाः, बन्धुमध्ये, धनाप्तिः

4. प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत–

प्रणम्य, परित्यज्य, आदाय, उक्त्वा, प्रस्थितः

5. विपरीतार्थकान् शब्दान् वदत–

बन्धुः, निश्चयः, क्षितिः, आदाय, अस्माकम्

## अभ्यासः (लिखितः)

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

(क) कस्मिंश्चिदधिष्ठाने के वसन्ति स्म?

(ख) 'गृह्यतां स्वेच्छया ताम्रम्'– एतत् कस्य वचनमस्ति?

(ग) ते किं संमन्त्र्य स्वदेशं परित्यज्य प्रस्थिताः?

(घ) स्वर्णभूमिं दृष्ट्वा तृतीयः ब्राह्मणपुत्रः किम् अवदत्?

(ङ) भैरवानन्दः किम् अपृच्छत्?

2. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कि.तपदानि आधारीकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) ते चापि दारिद्र्योपहता <u>मन्त्रं</u> चक्रुः।

(ख) बन्धुमध्ये धनहीनजीवितं न वरम्।

(ग) अथ किञ्चिन्मात्रं गतस्य अग्रेसरस्य <u>वर्तिः</u> निपपात।

(घ) सिद्धिमार्गच्युतः सः <u>इतश्चेतश्च</u> बभ्राम।

(ङ) सः यावत् खनति तावत् सुवर्णभूमिं दृष्ट्वा प्राह।

3. अधोलिखित-क्रियापदानां स्ववाक्येषु संस्कृते प्रयोगं कुरुत–



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गच्छाम:, अभिहितम्, प्राक्, तिष्ठसि, उक्त्वा

4. कोष्ठान्तर्गतानां शब्दानां साहाय्येन रिक्तस्थानानि पूरयत–

प्रदेशं, नाहमग्रे, वेत्सि, रत्नानि, स्वर्णम्

(क) सोऽब्रवीत्– यान्तु भवन्त:, ·············· यास्मि।

(ख) स प्राह– 'मूढ! न किञ्चिद् ··············।

(ग) अथासौ यावन्तं ·············· खनति तावत्ताम्रमयी भूमि:।

(घ) तृतीय: यथेच्छया ·············· गृहीत्वा निवृत्त:।

(ङ) नूनम् अत:परं ·············· भविष्यन्ति।

5. रेखाङ्कि.तपदेषु प्रयुक्तां विभक्तिं लिखत–

(क) भो मूढ! किम् अनेन क्रियते?

(ख) रामस्य भ्राता कुत्र गत:?

(ग) मह्यं फलं रोचते।

(घ) स: गृहात् बहि: अगच्छत्।

(ङ) एकस्मिन् नगरे एक: नृप: आसीत्।

———

## योग्यता–विस्तार:

1. (क) पूर्वकालिक क्रिया ('करके' अर्थवाली) का अनुवाद करने के लिए क्त्वा अथवा ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग करते हैं। क्त्वा में त्वा और ल्यप् में य शेष बचता है जो धातु से लगता है। उपसर्ग युक्त धातु से क्त्वा के स्थान में ल्यप् प्रत्यय लगता है। यथा–

| धातव: | प्रत्यय: | पदानि | अर्था: |
|---|---|---|---|
| Öकृ + | क्त्वा | कृत्वा | करके |
| Öदृश् + | क्त्वा | दृष्ट्वा | देखकर |
| Öपठ् + | क्त्वा | पठित्वा | पढ़कर |
| Öगम् + | क्त्वा | गत्वा | जाकर |
| Öस्था + | क्त्वा | स्थित्वा | बैठकर |
| Öखन् + | क्त्वा | खनित्वा | खोदकर |
| आ + Öगम् + | ल्यप् | आगम्य | आकर |
| प्र + Öविश् + | ल्यप् | प्रविश्य | प्रवेशकर |
| वि + Öचर् + | ल्यप् | विचार्य | विचार कर |
| अभि + Öधा + | ल्यप् | अभिधाय | बोलकर |



(ख) माध्यमिक स्तर तक बच्चों के लिए लट्, लृट् और विधिलिङ् लकार के अध्यापन की व्यवस्था है। परंतु इस पाठ में तथा प्राय: साहित्य में लिट् लकार का प्रयोग बहुत मिलता है। इस का प्रयोग परोक्ष भूतकाल में होता है। अत: लिट् लकार का धातुरूप प्रथमपुरुष में दिया जा रहा है।

### Öकृ करना-परस्मैपद

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | चकार | चक्रतु: | चक्रु: |

### आत्मनेपद

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | चक्रे | चक्राते | चक्रिरे |

### Öब्रू =बोलना (उभयपदी) परस्मैपद

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | उवाच | ऊचतु: | ऊचु: |

### आत्मनेपद



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | ऊचे | ऊचाते | ऊचिरे |

**क्षिप्रा** – यह मध्यप्रदेश में बहनेवाली एक नदी है।

**महाकाल** – मध्यप्रदेश के उज्जैन में महाकाल महादेव का प्रसिद्ध मंदिर है।

**भैरवानन्द** – एक कौल संन्यासी जो शिव और शक्ति का उपासक होता है।

**सिद्धियात्रिक** – सिद्धिप्राप्ति हेतु यात्रा पर चलने वाला व्यक्ति।

अग्नि तीन प्रकार की होती है। दावाग्नि, जठराग्नि और वडवाग्नि।

समुद्र में रात को नाविकों को अग्नि की चमक दिखाई पड़ती है। उसे **बडवानल** या **वडवाग्नि** कहते हैं।



तृतीयः पाठः

# यक्षयुधिष्ठिरसंवादः

[अयं पाठः व्यासरचितस्य महाभारतस्य वनपर्वणः (अध्यायः-313) संकलितः। महाभारतं संस्कृतभाषायाः विशालतमो ग्रन्थः लक्षश्लोकात्मकः। अस्मिन् ग्रन्थे अष्टादश पर्वाणि सन्ति। तेषु वनपर्व अन्यतमम्। तत्र पाण्डवाः वने विचरन्ति। एकदा ते एकं सरोवरं गताः। तस्य स्वामी यक्षः। ये सरोवरात् जलं पातुम् इच्छन्ति, तान् स यक्षः प्रश्नान् करोति। उत्तरम् अदत्त्वा ये जलं पिबन्ति ते मूर्च्छिताः पतन्ति। सैव गतिः भीमस्य अर्जुनस्य नकुलस्य सहदेवस्य च जाता। अन्ततः युधिष्ठिरः तत्र गतः। स एव यक्षप्रश्नानां समुचितम् उत्तरं ददाति। प्रश्नोत्तरेषु नीतिः सदाचारश्च वर्णितौ।]

यक्षः- **केन स्विदावृतो लोकः केनस्विन्न प्रकाशते ।**
**केन त्यजति मित्राणि केन स्वर्गं न गच्छति ॥1॥**

युधिष्ठिरः- **अज्ञानेनावृतो लोकस्तमसा न प्रकाशते ।**
**लोभात् त्यजति मित्राणि सङ्गात् स्वर्गं न गच्छति ॥2॥**

यक्षः- **किं ज्ञानं प्रोच्यते राजन् कः शमश्च प्रकीर्तितः ।**
**दया च का परा प्रोक्ता किं चार्जवमुदाहृतम् ॥3॥**

युधिष्ठिरः- **ज्ञानं तत्त्वार्थसम्बोधः शमश्चित्तप्रशान्तता ।**
**दया सर्वसुखैषित्वमार्जवं समचित्तता ॥4॥**

यक्षः- **कः शत्रुर्दुर्जयः पुंसां कश्च व्याधिरनन्तकः ।**
**को वा स्यात् पुरुषः साधुरसाधुः पुरुषश्च कः ॥5॥**

युधिष्ठिरः- **क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुर्लोभो व्याधिरनन्तकः ।**
**सर्वभूतहितः साधुरसाधुर्निर्दयः स्मृतः ॥6॥**



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

यक्षः- किं स्थैर्यमृषिभिः प्रोक्तं किं च धैर्यमुदाहृतम् ।
स्नानं च किं परं प्रोक्तं दानं च किमिहोच्यते ॥ ÷॥

युधिष्ठिरः- स्वधर्मे स्थिरता स्थैर्यं धैर्यमिन्द्रियनिग्रहः ।
स्नानं मनोमलत्यागो दानं वै भूतरक्षणम् ॥8॥

यक्षः- कः पण्डितः पुमाञ्ज्ञेयो नास्तिकः कश्च उच्यते ।
को मूर्खः कश्च कामः स्यात् को मत्सर इति स्मृतः ॥9॥

युधिष्ठिरः- धर्मज्ञः पण्डितो ज्ञेयो नास्तिको मूर्ख उच्यते ।
कामः संसारहेतुश्च हृत्तापो मत्सरः स्मृतः ॥10॥

## शब्दार्थाः

| | | |
|---|---|---|
| **स्मृतः** | कथितः | कहा गया है |
| **प्रकीर्तितः** | कथितः | कहा गया है |
| **प्रोच्यते** | विशेषेण कथ्यते | बताया गया है |
| **आवृतः** | आच्छन्न | घिरा हुआ |
| **तमसा** | अन्धकारेण | अन्धकार से |
| **शमः** | मनसः शान्तिः | चित्तशान्ति |
| **पुंसाम्** | पुरुषाणाम् | पुरुषों के |
| **केनस्वित्** | केन | किस से |
| **भूतरक्षणम्** | जीवानां रक्षा | जीवों की रक्षा |
| **मत्सरः** | ईर्ष्या | डाह, जलन |
| **हृत्** | हृदयम् | हृदय |
| **सुखैषित्वम्** | सुखस्य इच्छा | सुख की कामना |



## व्याकरणम्

(क) सन्धिविच्छेदः–

| | | |
|---|---|---|
| **केनस्विदावृतः** | – | केनस्वित् + आवृतः |
| **केनस्विन्न** | – | केनस्वित् + न |
| **अज्ञानेनावृतः** | – | अज्ञानेन + आवृतः |
| **लोकस्तमसा** | – | लोकः + तमसा |
| **प्रोच्यते** | – | प्र + उच्यते |
| **युधिष्ठिरः** | – | युधि + स्थिरः |
| **दुर्जयः** | – | दुः + जयः |
| **व्याधिरनन्तकः** | – | व्याधिः + अनन्तकः |
| **साधुरसाधुः** | – | साधुः + असाधुः |
| **निर्दयः** | – | निर् + दयः |
| **किमिहोच्यते** | – | किम् + इह + उच्यते |
| **पुमाञ्ज्ञेयः** | – | पुमान् + ज्ञेयः |
| **कश्च** | – | कः + च |

## अभ्यासः (मौखिकः)

1. संस्कृतभाषया उत्तराणि वदत–
   (क) केनस्वित् आश्रितो लोकः?
   (ख) किं ज्ञानम्?
   (ग) पुंसां दुर्जयः शत्रुः कः?
   (घ) कः अनन्तकः व्याधिः?
   (ङ) कः साधुः?
   (च) कुतः मित्राणि त्यजति?



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(छ) केन स्वर्गं न गच्छति?

(ज) का दया?

(झ) किं ज्ञानम्?

(ञ) किं स्थैर्यम्?

## अभ्यासः (लिखितः)

1. एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तराणि लिखत–

(क) किं धैर्यमुदाहृतम्?

(ख) स्नानं किमुच्यते?

(ग) भूतानां लक्षणं किमस्ति?

(घ) कः पुमान् पण्डितः ज्ञेयः?

(ङ) संसारहेतुः कोऽस्ति?

2. उदाहरणम् अनुसृत्य अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कि.तपदानि आधृत्य प्रश्नान् विरचयत–

उदाहरणम्– **सूर्योदयेन अन्धकारः नश्यति।**

प्रश्नः– केन अन्धकारः नश्यति?

(क) तमसा लोकः न प्रकाशते ।

(ख) ज्ञानं तत्वार्थसम्बोधः ।

(ग) क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुः ।

(घ) अनन्तकः व्याधिः लोभः ।

(ङ) स्वधर्मे स्थिरता स्थैर्यम् ।

3. अधोलिखितवाक्येषु कोष्ठात् समुचितं पदमादाय रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) लोकः ............ आवृतः। (**अज्ञानेन, ज्ञानेन**)

(ख) ............ सुदुर्जयः शत्रुः। (**लोभः, क्रोधः**)



(ग) अनन्तकः व्याधिः ............। (**लोभः, क्रोधः**)

(घ) साधुः ............ स्मृतः। (**सदयः, निर्दयः**)

(ङ) इन्द्रियनिग्रहः ............। (**अधैर्यम्, धैर्यम्**)

4. सन्धिविच्छेदं कुरुत–

केनस्विदावृतः, केनस्विन्न, सुखैषित्वम्, व्याधिरनन्तकः, प्रोच्यते।

## योग्यता-विस्तारः

धातुओं से लगने वाला क्त प्रत्यय भूतकाल के अर्थ में होता है। यहाँ इसके कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

| उपसर्ग + | धातु + | प्रत्यय | शब्द | पुं० | स्त्री० | नपुं० |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आ + | Öवृ + | क्त | आवृत | आवृतः | आवृता | आवृतम् |
| सम् + | Öबुध् + | क्त | सम्बुद्ध | सम्बुद्धः | सम्बुद्धा | सम्बुधम् |
| वि + | Öस्मृ + | क्त | विस्मृत | विस्मृतः | विस्मृता | विस्मृतम् |
| | Öवद् + | क्त | उक्त | उक्तः | उक्ता | उक्तम् |

घञ् प्रत्यय– यह भाव के अर्थ में होता है। जैसे–

Öपच् + घञ् – पाकः

Öत्यज् + घञ् – त्यागः

Öरुज् + घञ् – रोगः

Öलभ् + घञ् – लाभः

Öपठ् + घञ् – पाठः

Öभू + घञ् – भावः



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चतुर्थः पाठः

# चत्वारो वेदाः

[भारतवर्षस्य सांस्कृतिकनिधिषु वेदाः प्रधानपदं धारयन्ति। संसारस्य उपलब्धग्रन्थेषु ते एव प्राचीनतमाः सन्ति। भारतीयाः सर्वेऽपि वेदसम्बन्धेन गौरवमनुभवन्ति। ज्ञानस्य पर्याय एव वेदो वर्तते। शास्त्राणि वेदानामुद्धरणैः स्वसिद्धान्तान् प्रतिपादयन्ति। प्रस्तुते पाठे चतुर्णां वेदानां स्वरूपं मुख्यं च प्रतिपाद्यं दर्शितमस्ति।]

अस्माकं प्राचीना संस्कृतिर्वेदेषु सुरक्षिता वर्तते। संसारस्य च प्राचीनतमं साहित्यं वेदेषूपलभ्यते। सप्तसिन्धुप्रदेशे निवसन्तः ऋषयस्तात्कालिकं सर्वं ज्ञानं वेदरूपमधारयन्। विशेषतो यज्ञसंचालनाय एकस्यापि वेदस्य चत्वारि रूपाणि कृतान्यासन्। अतएव चत्वारो वेदाः इति परम्परा प्रवृत्ता। ते च वेदाः ऋग्वेदः यजुर्वेदः सामवेदः अथर्ववेदश्चेति सन्ति।

ऋग्वेदः प्राचीनतमान् मन्त्रान् धारयति। अतएव इतिहासस्य विद्वांसस्तस्य महत्त्वमतितरां मन्यन्ते। अयं वेदो दशसु मण्डलेषु विभक्तः। प्रतिमण्डलं च ऋक्समूहरूपाणि सूक्तानि बहूनि विद्यन्ते। सूक्तानां देवताः ऋषयः छन्दांसि च पृथक् सन्ति। सम्पूर्णे ऋग्वेदे 1028 सूक्तानि, 10552 ऋचः वर्तन्ते। ऋचः एव मन्त्राः अपि कथ्यन्ते। ऋग्वेदे देवानामावाहनार्थं मन्त्रा इति कर्मकाण्डोपयोगः।

यजुर्वेदः शुक्ल-कृष्णरूपेण द्विविधः। प्रायेण शुक्लयजुर्वेदः एव उत्तरभारते प्रचलितः। तस्मिन् चत्वारिंशदध्यायाः सन्ति। अध्यायेष्वनेके गद्य-पद्यात्मका मन्त्राः सन्ति। तेषु मुख्यतो विविधकर्मसम्पादनाय विधयो दर्शिताः। यजुर्वेदस्य अर्थ एव वर्तते यज्ञवेदः। प्रचलिते शुक्लयजुर्वेदे 1975 मन्त्राः संकलिताः। यज्ञेष्वस्य वेदस्य व्यापकः प्रयोगः।

सामवेदः प्रायेण ऋग्वेदस्य गेयात्मकैर्मन्त्रैः संकलितः। तत्र यज्ञे समाहूतानां देवानां प्रसादनं लक्ष्यमस्ति। प्रसादनं च गानेन भवति। अतएव सामवेदस्य गायकाः उद्गातारः कथ्यन्ते। भारतीयं संगीतं सामवेदादेव प्रारभते। सामवेदे 1875 मन्त्राः सन्ति। सामवेदश्च पूर्वार्चिक-उत्तरार्चिकभागयोः विभक्तः।



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अथर्ववेदो लौकिकं वैज्ञानिकं च विषयं विशेषेण धत्ते। अयं विंशतिकाण्डेषु विभक्तः। प्रतिकाण्डं च सूक्तानि वर्तन्ते, सूक्तेषु च ऋग्वेदवत् मन्त्राः सन्ति। सम्पूर्णेऽथर्ववेदे 730 सूक्तानि, 5987 मन्त्राश्च विद्यन्ते। अत्र द्वादशे काण्डे भूमिसूक्तं वर्तते यत्र मातृभूमेः स्तुतिर्विस्तरेण कृता।

एते सर्वे वेदाः मन्त्राणां संकलनत्वेन संहिताः अपि कथ्यन्ते। तदनन्तरं तद्व्याख्यारूपाणि ब्राह्मणानि बहूनि वर्तन्ते कर्मकाण्डपराणि। दार्शनिकचिन्तनपराणि आरण्यकानि, शुद्धदर्शनपराः उपनिषदश्च विकसिताः। सर्वेऽप्येते वेदसंहितानां कृते पृथक्-पृथक् सन्ति। अपि च वेदानामङ्ग.रूपेण शिक्षा, कल्पः, व्याकरणं, विनरुक्तं, छन्दः, ज्योतिषं चेति षड्वेदाङ्ग.ानि विपुलं साहित्यं प्रस्तुवन्ति। सर्वमिदं मिलित्वा विशालं वैदिकं साहित्यमिति वर्तते।

## शब्दार्थाः

| | | |
|---|---|---|
| **प्रवृत्ता** | प्रारब्धा, प्रचलिता | चल पड़ी, प्रचलित हुई |
| **अतितराम्** | अधिकतरम् | और भी अधिक |
| **आवाहनार्थम्** | आवाहनाय | बुलाने के लिए |
| **कर्मकाण्डम्** | याज्ञिकः क्रियासमूहः | यज्ञकार्य |
| **विधयः** | विधानानि | नियम |
| **गेयात्मकैः** | गानयोग्यैः | गाने के योग्य |
| **प्रसादनम्** | प्रीतिजननम् आराधनम् | प्रसन्न करना |
| **संकलनत्वेन** | संग्रहकारणेन | संग्रह होने के कारण |
| **उपलभ्यते** | प्राप्यते | पाया जाता है |
| **प्रतिपादयन्ति** | वर्णयन्ति | प्रतिपादन करते हैं |
| **प्रारभते** | आरभते | प्रारम्भ होता है |
| **धत्ते** | धारयति | धारण करता है |
| **प्रस्तुवन्ति** | प्रस्तुतं कुर्वन्ति | प्रस्तुत करते हैं |



## व्याकरणम्

### ( क ) सन्धिविच्छेदः

| | | |
|---|---|---|
| **संस्कृतिर्वेदेषु** | – | संस्कृतिः + वेदेषु |
| **ऋषयस्तात्कालिकम्** | – | ऋषयः + तात्कालिकम् |
| **कृतान्यासन्** | – | कृतानि + आसन् |
| **अथर्ववेदश्चेति** | – | अथर्ववेदः + च + इति |
| **देवानामावाहनार्थम्** | – | देवानाम् + आवाहन + अर्थम् |
| **चत्वारिंशदध्यायाः** | – | चत्वारिंशत् + अध्यायाः |
| **यज्ञेष्वस्य** | – | यज्ञेषु + अस्य |
| **गेयात्मकैर्मन्त्रैः** | – | गेयात्मकैः + मन्त्रैः |
| **सामवेदादेव** | – | सामवेदात् + एव |
| **अध्यायेष्वनेके** | – | अध्यायेषु + अनेके |

### ( ख ) प्रकृति-प्रत्यय विभागः

| | | |
|---|---|---|
| **उपलभ्यते** | – | उप + Öलभ् + कर्मवाच्य (य) + लट् लकार |
| **प्रवृत्ता** | – | प्र + Öवृत् + क्त + टाप् |
| **दर्शिता** | – | Öदृश् + णिच् + क्त + टाप् |
| **मिलित्वा** | – | Öमिल् + क्त्वा |
| **विभक्तः** | – | वि + Öभज् + क्त |
| **कृता** | – | Öकृ + क्त + टाप् |
| **निवसन्तः** | – | नि + Öवस् + शतृ |



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

## अभ्यासः (मौखिकः)

1. उत्तराणि वदत–

(क) अस्माकं प्राचीना संस्कृतिः कुत्र सुरक्षिता अस्ति?

(ख) वेदाः कति सन्ति?

(ग) ऋग्वेदः कीदृशान् मन्त्रान् धारयति?

(घ) ऋग्वेदे कति सूक्तानि सन्ति?

(ङ) यजुर्वेदे कति अध्यायाः सन्ति?

2. वेदाङ्ग.नां नामानि वदत।

## अभ्यासः (लिखितः)

1. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

(क) संसारस्य प्राचीनतमं साहित्यं कुत्र उपलभ्यते?

(ख) ऋग्वेदः कति मण्डलेषु विभक्तः?

(ग) सामवेदः ऋग्वेदस्य कीदृशैः मन्त्रैः संकलितः?

(घ) अथर्ववेदस्य द्वादशे काण्डे कस्याः स्तुतिः?

(ङ) वेदाङ्ग.नि कति सन्ति?तेषां नामानि लिखत।

ü. संस्कृतेऽनुवादं कुरुत–

(क) वेद चार हैं।

(ख) वेद संसार का सबसे प्राचीन साहित्य है।

(ग) हमारी प्राचीन संस्कृति वेदों में निहित है।

(घ) अथर्ववेद में लौकिक विषय आये हैं।

(ङ) हमें वेद पढ़ना चाहिए।



## योग्यता-विस्तार

वेद भारत के ही नहीं, संपूर्ण विश्व के प्रथम उपलब्ध ग्रन्थ हैं। ये वैदिक भाषा में हैं जो संस्कृत का ही प्राचीन रूप है। चारों वेदों के मन्त्रों का संकलन यज्ञ की दृष्टि से हुआ है। यज्ञ में देवों के आवाहन के मंत्र ऋग्वेद में, यज्ञ के विधि-विधान के मंत्र यजुर्वेद में, देवों को प्रसन्न करने के लिए संगीतमय मंत्र सामवेद में और यज्ञ के विघ्नों के निवारक मंत्र अथर्ववेद में हैं।

वेद को पुरुष का रूप देकर उसके छः प्रमुख अंगों के रूप में छः वेदांग (शास्त्र) बने। शिक्षा (उच्चारण का शास्त्र) नासिका है, कल्प (यज्ञ-विधान का शास्त्र) हाथ है, ज्योतिष (काल ज्ञान का शास्त्र) नेत्र है, निरुक्त (अर्थज्ञान का शास्त्र) कान है, छन्द (पद्यात्मक मंत्रों में चरण-व्यवस्था का शास्त्र) पैर है और व्याकरण (शुद्ध वाणी का शास्त्र) मुख है। इसलिए ये वेदांग (वेद के उपकारक) कहे गये हैं। अङ्ग. उपकारक होते हैं। कहा गया है– साङ्. वेदमधीयीत (वेद को अंङ्ग.ों के साथ पढ़ना चाहिए।)



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पञ्चमः पाठः

# संस्कृतस्य महिमा

[गुरुशिष्यमध्ये संस्कृतकक्षायां संस्कृतभाषायाः महत्त्वविषये रोचकः संवादः पाठेऽस्मिन् वर्तते। अनेन संवादेन छात्राणां ज्ञानवृद्धिः जिज्ञासा च प्रवर्तते। संस्कृतस्य व्यापकत्वं शब्दरचनाशक्तिम् अन्यमुपयोगं च दर्शयति पाठोऽयम् ।]

(संस्कृतशिक्षकः कक्षां प्रविशति। छात्राः स्वस्थानादुत्थाय अभिवादनं कुर्वन्ति।)

शिक्षकः – उपविशन्तु सर्वे। अद्य संस्कृतस्य महत्त्वं कथयामि।

रमेशः – गुरुदेव! अपि संस्कृतस्य अध्ययनं लाभकरम्?

शिक्षकः – न जानासि वत्स?संस्कृतं विना न संस्कृतिः।

राजीवः – का नाम संस्कृतिः?

शिक्षकः – संस्कृते एव आचाराः विचाराः भावनाश्च सन्ति। यत्रेमे भवन्ति, तत्रैव संस्कृतिः।

पुष्करः – कथयन्ति जनाःयत् इयं मृता भाषा।

शिक्षकः – वत्स! ज्ञानहीनास्ते। अस्यामेव भारतीयभाषाणां जीवनम्। अस्या एव भारतीयाः भाषाः निर्गताः। एतदर्थं सा भाषाणां जननी कथ्यते। नेयं मृता भाषा, अपितु अजरा अमरा चेति। अद्यापि सा जीवति।

रमेशः – अस्यामेव भारतीयभाषाणां जीवनम्?

शिक्षकः – अथ किम्? सर्वाः भारतीयभाषाःसंस्कृतभाषायाः ऋणं धारयन्ति। अत्रैव प्राचीनं वेदादिशास्त्रं रचितम्।

कमालः – शब्दज्ञानाय संस्कृतकोशोऽपि वर्तते किम् ?



शिक्षकः – आम् आम्। प्राचीनाः नवीनाश्च अनेके संस्कृतकोशाः सन्ति। शब्दरचनाविधिरपि व्याकरणे वर्तते। तेन लक्षशः शब्दाः निर्मीयन्ते, अन्यासु भाषासु प्रदीयन्ते।

पुष्करः – अस्याः व्याकरणम् अपूर्वं तर्हि।

शिक्षकः – अत्र पाणिनिः श्रेष्ठः वैयाकरणः आसीत्। तत्सदृशः न कुत्रापि वैयाकरणो जातः।

लतिकाः – किं पाणिनिसमानः कुत्रापि वैयाकरणो नास्ति?

शिक्षकः – आम्, अस्योत्तरं सर्वत्र मौनमस्ति।

रमाः – गुरुदेव! मम पिता कथयति यत् संगणके (कंप्यूटरयन्त्रे) अपि संस्कृतं सहायकं भवति।

शिकक्षः – सत्यं वदति ते पिता। अपि च– योगशास्त्रे पतञ्जलिकृतं योगदर्शनमपि अपूर्वम्।

कमालः – पूज्यवर। श्रूयते यत् संस्कृते क्रियारूपाणि असंख्यानि सन्ति।

शिक्षकः – सत्यमेतत्। धातवः एव द्विसहस्राधिकाः। तेषां दशलकारेषु नाना रूपाणि भवन्ति। सर्वेषु लकारेषु नव-नव रूपाणि सन्ति।

पुष्करः – धातवोऽपि त्रिधा भवन्ति इति भवान् उक्तवान्।

शिक्षकः – आम्। केचिद् आत्मनेपदिनः, केचित् परस्मैपदिनः, केचिद् उभयपदिनः। एवं त्रिधा ते भवन्ति।

रहीमः – तदा तु भाषेयम् अतीव जटिला।

शिक्षकः – न न। सरलापि सा, कठिनापि सा। सामान्यप्रयोगे सरला, गूढविषयनिरूपणे जटिला। यथेच्छं प्रयोगः क्रियते।

रमाः – गुरुदेव! किं विज्ञानानि अपि संस्कृते सन्ति?

शिक्षकः – किं कथयसि?भूगोल-खगोलविषये आर्यभटीयम्, बृहत्संहिता इत्यादयः ग्रन्थाः प्रसिद्धाः।

राजीवः – अतः परं नास्ति किमपि?

शिक्षकः – कथं नास्ति?बीजगणितं चिकित्साशास्त्रं भौतिकविज्ञानं रसायनशास्त्रं वनस्पतिविज्ञानं वास्तुविज्ञानं विधिशास्त्रं संगीतशास्त्रम् इत्यादीनि नानाग्रन्थेषु प्रकाशितानि सन्ति। प्राचीनं भारतीयं विज्ञानं पठितव्यम्।



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

**रमा:** – किं प्रतियोगिपरीक्षासु संस्कृतम् उपयोगि वर्तते?

**शिक्षक:** – प्राय: सर्वत्र प्रशासनिकपरीक्षासु संस्कृतमपि ऐच्छिको विषय:।

**रहीम:** – तदा तु इयमतीव उपयोगिनी भाषा।

**शिक्षक:** – अथ किम्।

**पुष्कर:** – तर्हि नूनमेव सर्वैरस्माभि: मनोयोगेन संस्कृतं पठनीयम्। धन्येयं भाषा।

## शब्दार्था:

| | | |
|---|---|---|
| **अथ किम्** | आम्, निर्विवादम् | हाँ, अवश्य |
| **अजरा** | अनश्वरा, न भवति जीर्णा | क्षीण न होने वाली |
| **लक्षश: ( लक्ष + शस् )** | अनेक-लक्षसंख्यायाम् | लाखों की संख्या में |
| **निर्मीयन्ते** | रच्यन्ते | रचे जाते हैं, बनते हैं |
| **त्रिधा ( त्रि + धा )** | त्रिविधा: | तीन प्रकार के |
| **जटिला ( जटा + इलच् )** | कठिना | उलझी हुई, कठिन |
| **गूढ: ( Öगुह + क्त )** | कठिन:, गहन: | कठिन, भारी |
| **यथेच्छम्** | इच्छानुसारेण | इच्छा के अनुसार |
| **मनोयोगेन** | ध्यानसहितम् | मन लगाकर |
| **निर्गता:** | उत्पन्ना: | निकली हैं |

## व्याकरणम्

**( क ) व्युत्पत्ति :**

| | | |
|---|---|---|
| **संस्कृति:** | – | सम् + Öकृ + क्तिन् |
| **संस्कृतम्** | – | सम् + Öकृ+ क्त |
| **उत्थाय** | – | उद् + Öस्था + ल्यप् |
| **मृता** | – | Öमृञ् + क्त + टाप् |
| **त्रिधा** | – | त्रि + धा (तद्धित प्रत्यय) |



| | | |
|---|---|---|
| **आर्यभटीयम्** | – | आर्यभट + छ |
| **तर्हि** | – | तद् + र्हिल् |
| **जीवनम्** | – | ⌦जीव् + ल्युट् |
| **जटिला** | – | जटा + इलच् + टाप् |

**( ख ) सन्धि-विच्छेद :**

| | | |
|---|---|---|
| **ज्ञानहीनास्ते** | – | ज्ञानहीना: + ते |
| **नेयम्** | – | न + इयम् |
| **विधिरपि** | – | विधि: + अपि |
| **कोशोऽपि** | – | कोश: + अपि |
| **नास्ति** | – | न + अस्ति |
| **सर्वैरस्माभि:** | – | सर्वै: + अस्माभि: |

## अभ्यास: ( मौखिक: )

1. **एकपदेन उत्तरं वदत**

उदाहरणम्– **रामं विना का नास्ति – अयोध्या**

(क) संस्कृतं विना का नास्ति?

(ख) कस्य अध्ययनम् आवश्यकम्?

(ग) संस्कृते के सन्ति?

(घ) संस्कृतं प्रति जना: किं कथयन्ति?

(ङ) कस्यां भाषायां वेदा: उपलभ्यन्ते?

(च) पाणिनि: कस्मिन् शास्त्रे निपुण:?

2. **एकवाक्येन उत्तरं दत्त**

उदाहरणम्– **किम् अध्ययनं आवश्यकम्? संस्कृताध्ययनम् आवश्यकम्।**

(क) कस्यां भाषायां शब्द निर्माण-पद्धतिरस्ति?

(ख) कस्या: भाषाया: व्याकरणम् अपूर्वम्?



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ग) संगीतरत्नाकरः कस्मिन् शास्त्रे ग्रन्थः?

(घ) धातवः कतिधा सन्ति?

(ङ) आर्यभटः कस्य शास्त्रस्य ग्रन्थकारः?

## अभ्यासः (लिखितः)

**1. सन्धिविच्छेदं कुरुत–**

वार्तालापः, नेयम्, एतदर्थम्, अत्रैव, विषयेऽस्मिन्

**2. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्नान् रचयत–**

(क) संस्कृतं विना न संस्कृतिः।

(ख) संस्कृते एव आचारादयः।

(ग) भारतीयाः भाषा अस्याः ऋणं धारयन्ति।

(घ) दश उपनिषदः सन्ति।

(ङ) पाणिनिः वैयाकरणः अस्ति।

**3. अधोलिखितवाक्येषु कोष्ठकात् समुचितं पदमादाय रिक्तस्थानानि पूरयत–**

(क) संस्कृतं विना न ......................। (**ज्ञानम्, संस्कृतिः, संरक्षणम्**)

(ख) भाषाणां जननी ......................। (**संस्कृतम्, हिन्दी, अंग्रेजी**)

(ग) इयं भाषा ...................... अस्ति। (**अजरा-अमरा, मृता**)

(घ) क्रियार्थं ...................... लकाराः सन्ति। (**पञ्च, दश, अष्टौ**)

(ङ) व्याकरणशास्त्रस्य लेखकः ......................। (**यास्कः, पाणिनिः**)

**4. संस्कृतभाषायामनुवादं कुरुत–**

विनय के बिना विद्या व्यर्थ है। ज्ञान के विना सुख नहीं। राम के विना अयोध्या नहीं। वेद चार हैं। पुराण अठारह हैं। स्मृतियाँ 108 हैं।



## योग्यता-विस्तारः

(क) अस्मिन् पाठे संस्कृतस्य वैशिष्ट्यं वर्णितमस्ति। संस्कृते एव संस्काराः संस्कृतयश्च वर्तन्ते। अष्टादश पुराणानि चत्वारो वेदाः उपनिषदोऽपि अत्रैव। सर्वाणि शास्त्राणि संस्कृतभाषायां सन्ति। सङ्गणकेऽपि अस्याः योगदानमपूर्वम्।

(ख) **'अपि'** शब्दस्य प्रयोगः वाक्यस्य आदौ यदि भवेत् तदा स प्रश्नवाचकः। यथा–

अपि त्वं गच्छसि?

अपि भवान् पठति?

अपि अहं गच्छामि?

(ग) पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् एभिर्योगे द्वितीया स्यात् पञ्चमी, तृतीया च। यथा–

रामं/ रामेण/ रामात् पृथक् न वसामि

संस्कृतं/ संस्कृतेन/ संस्कृतात् विना न संस्कृतिः

(घ) रेखागणितस्य ज्ञाता – बौधायनः

बीजगणितस्य – आर्यभटः

शल्यचिकित्सायाः – सुश्रुतः

पशुचिकित्सायाः – शालिहोत्रः

भौतिकविज्ञानस्य – कणादः

रसायनविज्ञानस्य – पतञ्जलिः

भाषाविज्ञानस्य – यास्क, पाणिनिः, पतञ्जलिः

विधिशास्त्रस्य – मनुः

विधिविज्ञानस्य – याज्ञवल्क्यः नारदः

कामशास्त्रस्य – वात्स्यायनः



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ङ) (i) दश लकारा: भवन्ति – लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ्, लृङ्।

(ii) धातु: त्रिधा– आत्मनेपदी परस्मैपदी उभयपदी च।

आत्मनेपदी यथा – लभते लभेते लभन्ते।

परस्मैयदी यथा – पठति पठत: पठन्ति।

उभयपदी यथा – कुरुते कुर्वाते कुर्वते (आ०)

करोति कुरुत: कुर्वन्ति (प०)



षष्ठ: पाठ:

# संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणम्

[अधुना वैज्ञानिके युगे यदा प्रकृति: असन्तुलिता जाता तदा पर्यावरणस्य चर्चा भवति। कथं प्रदूषणं दूरीकरणीयम्, प्रकृति: सन्तुलिता भवेत्, पशुपक्षिण: स्वस्वरूपेषु स्थिता भवन्तु, मानवश्च शुद्धं जलं वायुं च लभेत, जीवनं च कल्याणमयं स्यादिति प्रश्न: भूयोभूय: सर्वान् आन्दोलयति। संस्कृतसाहित्ये नेयमवस्था आसीदिति पाठेऽस्मिन् संक्षेपेण आदर्शरूपस्य पर्यावरणस्य निरूपणं वर्तते।]

**भूमिर्जलं नभो वायुरन्तरिक्षं पशुस्तृणम् ।**
**साम्यं स्वस्थत्वमेतेषां पर्यावरणसंज्ञकम् ॥**

संस्कृतसाहित्यस्य महती परम्परा संसारस्य सर्वान् विषयानूरीकृत्य प्रचलिता। प्रकृतिसंरक्षणं पर्यावरणस्य संतुलनं वा तत्र स्वभावत: उपस्थापितमस्ति। वैदिककाले प्रकृतेरुपकरणानि देवरूपाणि प्रकल्पितान्यभवन्। पर्जन्यो वेदे इत्थं स्तूयते–

**इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते**
**यत्पर्जन्य: पृथिवीं रेतसावति ।**

मेघ: पृथिवीं जलेन रक्षति तदा सर्वेभ्य: अन्नं भवति। एवमेव ये वनस्पतय: फलयुक्ता अफला वा, पुष्पवन्त: अपुष्पा वा सर्वेऽपि ते मानवान् रक्षन्तु, पापानि अर्थात् मलानि दूरीकुर्वन्तु–

**या: फलिनी या अफला: अपुष्पा याश्च पुष्पिणी: ।**
**बृहस्पति-प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहस: ॥**

अत्र ओषधयो देव्य: स्तूयन्ते।

संस्कृतकाव्येषु प्रकृतिवर्णनम् आवश्यकं विद्यते। कथ्यते यत् ऋतु:, सागर:, नदी, सूर्योदय:, सन्ध्या, चन्द्रोदय:, सरोवर:, उद्यानम्, वनम्– इत्यादीनि उपादानानि अवश्यं वर्णनीयानि भवन्ति महाकाव्ये। वाल्मीकि: सरोवरश्रेष्ठां पम्पां वर्णयति–



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

**नाना-द्रुमलताकीर्णां शीतवारिनिधिं शुभाम् ।**

**पद्मसौगन्धिकैस्ताम्रां शुक्लां कुमुदमण्डलैः ॥**

संस्कृतकाव्येषु स्वस्थपर्यावरणस्य कल्पनया स्वाभाविकरूपेण प्रवहन्तीनां नदीनां वर्णनं बाहुल्येन लभ्यते, जलप्लावनस्य वर्णनं तु विरलमेव। सूर्यतापितः ज्येष्ठमासस्य मध्याह्नः बाणभट्टेन वर्णितः। स च स्वाभाविकः। वस्तुतः स्वाभाविकरूपेण प्रवर्तमानानाम् ऋतूनां वर्णनेन पर्यावरणं प्रति कवीनामास्था दृश्यते। ग्रीष्मातपेन सन्तप्तस्य रक्षां वृक्षाः कुर्वन्ति इति प्रकृतिवरदानम्। अतएव मार्गेषु वृक्षारोपणं पुण्यमिति प्रतिपादितम्। फलवन्तो वृक्षास्तु परोपकारिणः इति कथयति नीतिकारः–

**स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः**

**स्वयं न वारीणि पिबन्ति नद्यः ।**

नरा कन्याश्च वृक्षान् प्रति ममताशीला इति शाकुन्तले नाटके वर्ण्यते। शकुन्तला वृक्षान् जलेन तर्पयित्वैव स्वयं जलं पिबति–

**पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या ।**

किं च भट्टिः शरत्काले जलाशयेषु कमलानां तद्वर्तिनां भ्रमराणां च वर्णनं करोति–

**न तज्जलं यन्न सुचारुपङ्कजं**

**न पङ्कजं तद् यदलीनषट्पदम् ।**

वसन्ते तु सर्वा प्रकृतिः शोभनतरा भवति इति कालिदासः कथयति–

**द्रुमाः सुपुष्पाः सलिलं सपद्मं**

**सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते ।**

कालिदासः पशूनां स्वाभाविकस्थितेः निरूपणमेव करोति–

**गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृङ्गैर्मुहुस्ताडितं**

**छाया-बद्धकदम्बकं मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु ।**

एवं प्राचीनभारते साहित्यकाराः सर्वस्यापि पर्यावरणस्य स्वस्थतां प्रति जागरूका अभवन्। कुत्रापि प्रकृतेः असन्तुलनं न भवेत् इति प्रयासशीलाः आसन्।



## शब्दार्थाः

| | | |
|---|---|---|
| **पर्यावरणम्** | प्राकृतिकवस्तूनां संतुलनम् | पृथिवी, जल, वायु आदि वस्तुओं (परितः आवरणम्)की साम्यावस्था |
| **अन्तरिक्षम्** | स्वर्गपृथिव्योः अन्तरम् | आकाश |
| **ऊरीवृत्य** | अंगीकृत्य | स्वीकार करके |
| **पर्जन्यः** | जलदः | बरसने वाला मेघ |
| **इरा** | पृथिवी (इं कामं राति इति) | धरती |
| **रेतसावति** | जलेन रक्षति | जल द्वारा रक्षा करता है |
| **फलिनीः** | फलयुक्ताः | फलों से परिपूर्ण |
| **अंहसः ( अंहस् + पञ्चमी )** | पापात् | पाप से |
| **द्रुमलताकीर्णा** | द्रुमैः लतामिश्च आकीर्णा (वृक्षलतापूर्णा) | वृक्षों और लताओं से भरी |
| **पद्मसौगन्धिकैः** | कमलसौरभैः | कमलों की सुगन्धों से |
| **कुमुदमण्डलैः** | कुमुदपुष्पसमूहैः | कुमुदिनी के फूलों से |
| **जलप्लावनस्य** | जलौघस्य, जलपूरस्य | बाढ़ का |
| **विरलम्** | दुर्लभम् | दुर्लभ, बहुत कम |
| **व्यवस्यति** | प्रयतते | प्रयास करता है |
| **अलीनषट्पदम्** | भ्रमरवियुक्तम् | भौरों से शून्य |
| **द्रुमाः** | वृक्षाः | पेड़ |
| **गाहन्तां** | निमज्जन्तु | डुबकी लगायें |
| **निपानसलिलं** | सरोवरजलम् | तालाब का पानी |
| **रोमन्थम्** | भुक्तग्रासचर्वणम् | जुगाली, पागुर |



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

## व्याकरणम्

**( क ) संधिविच्छेदः–**

| | |
|---|---|
| **पर्यावरणम्** | परि + आवरणम् |
| **नेयम्** | न + इयम् |
| **मुञ्चन्त्वंहसः** | मुञ्चन्तु + अंहसः |
| **प्रकल्पितान्यभवन्** | प्रकल्पितानि + अभवन् |
| **सौगन्धिकैस्ताम्रम्** | सौगन्धिकैः + ताम्रम् |
| **तर्पयित्वैव** | तर्पयित्वा + एव |
| **युष्मास्वपीतेषु** | युष्मासु + अपीतेषु |
| **यदलीनषट्पदम्** | यत् + अलीनषट्पदम् |
| **शृङ्गैर्मुहुस्ताडितम्** | शृङ्गै : + मुहुः + ताडितम् |

**( ख ) व्युत्पतिः/ विग्रहः**

| | | |
|---|---|---|
| **पर्यावरणम्** | – | परितः आवरणम् (परि + आ + Öवृ + ल्युट्) |
| **साम्यम्** | – | समस्य भावः (सम + ष्यञ्) |
| **ऊरीकृत्य** | – | ऊरी + Öकृ + ल्यप् |
| **द्रुमलताकीर्णा** | – | द्रुमैःलताभिश्च आकीर्णा (द्वन्द्वः, तृतीया तत्पुरुष) |
| **शीतवारिनिधिः** | – | शीतश्च असौ वारिनिधिः (कर्मधारय) |
| **सुचारुपङ्कजम्** | – | सुचारूणि पंकजानि येषु तत् (बहुव्रीहि) |
| **सपद्मः** | – | पद्मेन सह वर्तमानः (सहार्थ बहुव्रीहिः) |



## अभ्यासः ( मौखिकः )

1. **अधोलिखितानां प्रश्नाम् उत्तराणि वदत–**

(क) प्रकृतेः उपकरणानि कथं प्रकल्पितानि?

(ख) प्रकृतिवर्णनं कुत्र आवश्यकम्?

(ग) वाल्मीकिः कं सरोवरं वर्णयति?

(घ) ज्येष्ठमासस्य मध्याह्नः केन वर्णितः?

(ङ) जलाशयेषु कमलानां वर्णनं कः करोति?

## अभ्यासः ( लिखितः )

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषायां पूर्णवाक्येन लिखत–**

(क) अन्नं कथं भवति?

(ख) संस्कृतकाव्येषु नदीनां वर्णनं किमुद्देश्यकम्?

(ग) प्रकृतिवरदानं किम्?

(घ) शाकुन्तले नाटके किं वर्ण्यते?

(ङ) पर्यावरणस्य स्वास्थ्यं प्रति के जागरूकाः?

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–**

(क) पर्यावरणस्य किं स्वरूपम्?

(ख) ओषधयो देव्यः कुत्र कथञ्च स्तूयन्ते?

(ग) संस्कृतकाव्येषु प्रकृतेः केषाम् उपादानानां वर्णनं भवति?

(घ) वृक्षारोपणं पुण्यं कथम्?

(ङ) कालिदासमतेन वसन्ते किं भवति?



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

**3. अधोलिखितकथनेषु रेखांकितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**

(क) संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणस्य चर्चा अस्ति।

(ख) पर्जन्यो वेदे स्तूयते।

(ग) मेघ: पृथिवीं जलेन रक्षति।

(घ) पृथिवी सर्वेभ्य: अन्नं ददाति।

(ङ) वेदे ओषधयो देव्य: स्तूयन्ते।

(च) संस्कृतमहाकाव्येषु प्रकृतिवर्णनम् आवश्यकम्।

**4. कोष्ठकाद् उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–**

(क) इरा विश्वस्मै ........................ जायते। (**देवाय/ भुवनाय**)

(ख) ता नो ........................ अंहस:। (**गच्छन्तु/ मुञ्चन्तु**)

(ग) वाल्मीकि: ........................ पम्पां वर्णयति। (**सरोवरश्रेष्ठां/ नदीश्रेष्ठाम्**)

(घ) सर्वं प्रिये ........................ वसन्ते। (**निम्नतरं/ चारुतरम्**)

(ङ) मृगकुलं ........................ अभ्यस्यतु। (**पाठं/ रोमन्थम्**)

(च) स्वयं न ........................ पिबन्ति नद्य:। (**दुग्धानि/ वारीणि**)

**5. अधोलिखितपदानां सन्धिविच्छेदं कृत्वा पूर्ववर्णं परवर्णञ्च निर्दिशत–**

यथा– **बालकस्तु = बालक: + तु।( अ: + त् )**

1. **कालिदासस्तु** = .................... + ....................
2. **वृक्षास्तु** = .................... + ....................
3. **कन्याश्च** = .................... + ....................
4. **पठितस्तेन** = .................... + ....................
5. **मुहुस्ताडितम्** = .................... + ....................
6. **मानवश्च** = .................... + ....................



**6. अधोलिखितपदेषु मूलशब्दं विभक्तिं वचनं च लिखत–**

| | | मूलशब्द: | विभक्ति: | वचनम् |
|---|---|---|---|---|
| यथा– | **वैज्ञानिके** | वैज्ञानिक | सप्तमी | एकवचनम् |
| 1. | पर्यावरणम् | | | |
| 2. | साहित्ये | | | |
| 3. | भुवनाय | | | |
| 4. | सर्वेभ्य: | | | |
| 5. | स्वरूपेषु | | | |
| 6. | वृक्षान् | | | |

**7. अधोलिखित क्रियापदेषु धातुं, लकारं, पुरुषं वचनञ्च निर्दिशत:–**

| | | धातु: | लकार: | पुरुष: | वचनम् |
|---|---|---|---|---|---|
| यथा– | कथयति | कथ् | लट् | प्रथमपुरुष | एकवचन |
| 1. | भवति | .......... | .......... | .......... | .......... |
| 2. | रक्षति | .......... | .......... | .......... | .......... |
| 3. | कुर्वन्तु | .......... | .......... | .......... | .......... |
| 4. | मुञ्चन्तु | .......... | .......... | .......... | .......... |
| 5. | आसन् | .......... | .......... | .......... | .......... |

**8. उदाहरणमनुसृत्य प्रत्येकम् अव्ययपदेन वाक्यद्वयं रचयत–**

1. अधुना – अधुना पर्यावरणस्य चर्चा भवति।
2. अत्र – अत्र पर्यन्यदेव: स्तूयते।
3. इति – जलं शुद्धं पेयञ्च तिष्ठेत् इति समस्या अस्ति।



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

## योग्यता-विस्तारः

वृक्षाः पर्यावरणस्य जनकाः सन्ति। अतस्ते अस्माकं वन्दनीयाः। भारतीयायां संस्कृतौ वृक्षाः पूज्याः तेषामुत्पाटनं वर्जितम्। वृक्षारोपणं तद्रक्षणं तु पुण्यतमं मन्यते। तद्यथा–

**दशकूपसमावापी दशवापीसमः ह्रदः ।**
**दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः ॥**
(मत्स्यपुराणम्)

अन्यत्रापि कथितम्–

**देवलोकगतस्यापि नाम तस्य न नश्यति ।**
**अतीतानागताँश्चैव पितृवंशाँश्च भारत ॥**
**तारयेद् वृक्षरोपी तु तस्माद् वृक्षान् विरोपयेत् ।**
**तस्य पुत्रा भवन्त्येव पादपानामसंशयम् ॥**

तुलसीपादपः वायुप्रदूषणम् अपनयति इति निगदितं पुराणेषु–

**तुलसी कानने चैव गृहे यस्यावतिष्ठते ।**
**तद्गृहं तीर्थमित्याहुः नायान्ति यमकिंकराः ॥**
**तुलसीगन्धमादाय यत्र गच्छति मारुतः ।**
**दिशो दश पुनात्याशु भूतग्रामाँश्चतुर्विधान् ॥**
(पद्मोत्तरखण्डम्)

तुलसी विषमज्वरं नाशयति–

**पीतो मरीचिचूर्णेन तुलसीपत्रजो रसः ।**
**द्रोणपुष्परसोऽप्येवं निहन्ति विषमं ज्वरम् ॥**



सप्तमः पाठः

# ज्ञानं भारः क्रियां विना

[पञ्चतन्त्रनामकस्य संस्कृतनीतिकथाग्रन्थस्य अन्तिमे तन्त्रे विद्यमानायाः कथायाः सम्पादितः अंशोऽयं पाठः। अस्यां कथायां व्यवहारं विना शुष्कस्य ज्ञानस्य निरर्थकता दर्शिता। उक्तं च– 'शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खाः, यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान्।' अत्रोपदेशो लभ्यते यत् व्यवहारो बुद्धिः क्रिया वा ज्ञानस्य परिणामः भवति। व्यवहारं विना तु पाण्डित्यं व्यर्थं भारभूतं च।]

**वरं बुद्धिर्न सा विद्या विद्याया बुद्धिरुत्तमा ।**
**बुद्धिहीना विनश्यन्ति यथा ते सिंहकारकाः ॥**

एकस्मिन् नगरे चत्वारः युवानः परस्परं मित्रभावेन निवसन्ति स्म। तेषां त्रयः शास्त्रपारंगताः, परन्तु बुद्धिरहिताः। एकस्तु बुद्धिमान् केवलं शास्त्रपराङ्मुखः। अथ तैः कदाचिन्मित्रैर्मन्त्रितम्– 'को गुणो विद्यायाः येन देशान्तरं गत्वा भूपतीन् परितोष्य अर्थोपार्जना न क्रियते? तत्पूर्वदेशं गच्छामः।' तथानुष्ठिते किञ्चिन्मार्गं गत्वा तेषां ज्येष्ठतरः प्राह– 'अहो! अस्माकमेकश्चतुर्थो मूढः केवलं बुद्धिमान्। न च राजप्रतिग्रहो बुद्ध्या लभ्यते विद्यां विना। तन्नास्मै स्वोपार्जितं दास्यामः। तद्गच्छतु गृहम्।' ततो द्वितीयेनाभिहितम्– 'भोः सुबुद्धे! गच्छ त्वं स्वगृहम्, यतस्ते विद्या नास्ति।'

ततस्तृतीयेनाभिहितम्– 'अहो, न युज्यते एवं कर्तुम्। यतो वयं बाल्यात्प्रभृत्येकत्र क्रीडिताः। तदागच्छतु महानुभावोऽस्मदुपर्जितवित्तस्य समभागी भविष्यतीति। उक्तञ्च–

**अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।**
**उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥**

तदागच्छतु एषोऽपि इति। तथानुष्ठिते तैः मार्गाश्रितैरटव्यां कतिचिदस्थीनि दृष्टानि। ततश्चैकेनाभिहितम्– 'अहो! अद्य विद्यापरीक्षा क्रियते। कतिचिदेतानि मृतसत्त्वस्यास्थीनि तिष्ठन्ति। तद्विद्याप्रभावेण जीवनसहितानि कुर्मः। अहमस्थिसञ्चयं करोमि। ततश्च तेनौत्सुक्यात् अस्थिसञ्चयः



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कृत:। द्वितीयेन चर्ममांसरुधिरं संयोजितम्। तृतीयोऽपि यावज्जीवनं सञ्चारयति तावत्सुबुद्धिना वारित:– 'भो: तिष्ठतु भवान्, एष सिंहो निष्पाद्यते। यद्येनं सजीवं करिष्यसि तत: सर्वानपि व्यापादयिष्यति, इति तेनाभिहित: स आह– 'धिङ मूर्ख! नाहं विद्याया विफलतां करोमि।' ततस्तेनाभिहितम्– 'तर्हि प्रतीक्षस्व क्षणं यावदहं वृक्षमारोहामि।' तथानुष्ठिते यावत् सजीव: कृतस्तावत्ते त्रयोऽपि सिंहेनोत्थाय व्यापादिता:। स च पुनर्वृक्षादवतीर्य गृहं गत:। अत: उच्यते–

अवशेन्द्रियचित्तानां हस्तिस्नानमिव क्रिया ।
दुर्भगाभरणप्रायो ज्ञानं भार: क्रियां विना ॥

## शब्दार्था:

| | | |
|---|---|---|
| **पारंगता:** | निष्णाता: | निपुण |
| **बुद्धिरहिता:** | व्यवहारज्ञानशून्या: | व्यावहारिक ज्ञान न रखने वाला |
| **शास्त्रपराङ्मुख:** | अनधीतशास्त्र: | शास्त्रों के अध्ययन से रहित |
| **देशान्तरम्** | अन्य: देश: | अन्य देश |
| **अर्थोपार्जना** | धनलाभ: | धन की प्राप्ति |
| **राजप्रतिग्रह:** | राजानुग्रह: | राजा से प्राप्त धन आदि |
| **अभिहितम्** | कथितम् | कहा |
| **वित्तस्य** | धनस्य | धन का |
| **समभागी** | समानलाभयुक्त: | समान लाभ पाने वाला |
| **लघुचेतसाम्** | क्षुद्रचित्तानाम् | नीच बुद्धि वालों का |
| **कुटुम्बकम्** | परिवार: | परिवार |
| **सत्त्वस्य** | जीवस्य | जीव का |
| **रुधिरम्** | रक्तम् | रक्त, खून |
| **संयोजितम्** | समाहरणं कृतम् | इकट्ठा किया |
| **प्रतीक्षस्व** | प्रतीक्षां कुरु | प्रतीक्षा करो |
| **वारित:** | न करणाय प्रेरित: | रोका गया |



| | | |
|---|---|---|
| **निष्पाद्यते** | निर्मित: भवति | बन जाता है |
| **व्यापादयिष्यति** | मारयिष्यति | मार देगा |
| **अवशेन्द्रियचित्तानाम्** | येषाम् इन्द्रियाणि चित्तं च स्ववशे न सन्ति | जिनके इन्द्रिय और मन अपने वश में नहीं |
| **दुर्भगाभरणप्राय:** | कुरूपस्य अनेकाभूषणै: अलंकरणम् | असुन्दर को अलंकारों से लादना |
| **अटव्याम्** (अटवी + सप्तमी) | वने, अरण्ये | वन में |

## व्याकरणम्

**(क) सन्धिविच्छेद–**

| | | |
|---|---|---|
| **बुद्धिर्न** | – | बुद्धि + न |
| **बुद्धिरुत्तमा** | – | बुद्धि: + उत्तमा |
| **एकस्तु** | – | एक: + तु |
| **कदाचिन्मित्रैर्मन्त्रितम्** | – | कदाचित् + मित्रै: + मन्त्रितम् |
| **अर्थोपार्जना** | – | अर्थ + उपार्जना |
| **तथानुष्ठिते** | – | तथा + अनुष्ठिते |
| **किञ्चिन्मार्गम्** | – | किम् + चित् + मार्गम् |
| **अस्माकमेकश्चतुर्थ:** | – | अस्माकम् + एक: + चतुर्थ: |
| **तन्नास्मै** | – | तत् + न + अस्मै |
| **स्वोपार्जितम्** | – | स्व + उपाजितम् |
| **ततस्तृतीयेनाभिहित्तम्** | – | तत: + तृतीयेन + अभिहितम् |
| **बाल्यात्प्रभृत्येकत्र** | – | बाल्यात् + प्रभृति + एकत्र |
| **महानुभावोऽस्मदुपार्जितवित्तस्य** | – | महानुभाव: + अस्मत् + उपार्जितवित्तस्य |
| **उदारचरितानान्तु** | – | उदारचरितानाम् + तु |
| **एषोऽपि** | – | एष: + अपि |



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

| | | |
|---|---|---|
| **मार्गाश्रितैरटव्याम्** | – | मार्ग + आश्रितैः + अटव्याम् |
| **कतिचिदस्थीनि** | – | कतिचित् + अस्थीनि |
| **ततश्चैकेनाभिहितम्** | – | ततः + च + एकेन + अभिहितम् |
| **कतिचिदेतानि** | – | कतिचित् + एतानि |
| **तेनौत्सुक्यात्** | – | तेन + औत्सुक्यात् |
| **यावज्जीवनम्** | – | यावत् + जीवनम् |
| **यद्येनम्** | – | यदि + एनम् |
| **कृतस्तावत्ते** | – | कृतः + तावत् + ते |
| **सिंहेनोत्थाय** | – | सिंहेन + उत्थाय |
| **पुनर्वृक्षादवतीर्य** | – | पुनः + वृक्षात् + अवतीर्य |

**( ख ) समासविग्रहः**

| | | |
|---|---|---|
| **बुद्धिहीनाः** | – | बुद्ध्या हीनाः (तृतीया तत्पु०) |
| **शास्त्रपारंगताः** | – | शास्त्रेषु पारंगता (सप्तमी तत्पु०) |
| **बुद्धिरहिताः** | – | बुद्ध्या रहिताः (तृतीया तत्पु०) |
| **शास्त्रपराङ्मुखः** | – | शास्त्रेभ्यः पराङ्मुखः (पञ्चमी तत्पु०) |
| **देशान्तरम्** | – | अन्यः देशः (कर्मधारय) |
| **अर्थोपार्जना** | – | अर्थस्य उपार्जना (षष्ठी तत्पु०) |
| **महानुभावः** | – | महान् चासौ अनुभावः (कर्मधारय) |
| **लघुचेतसाम्** | – | लघु चेतो येषां ते (बहुव्रीहि) तेषाम् |
| **उदारचरितानाम्** | – | उदारं चरितं येषां ते (बहुव्रीहि) तेषाम् |
| **मार्गाश्रितैः** | – | मार्गम् आश्रितः (द्वितीयाः तत्पु०) तैः |
| **अस्थिसञ्चयः** | – | अस्थीनां सञ्चयः (षष्ठी तत्पु०) |
| **चर्ममांसरुधिरम्** | – | चर्म च मांसं च रुधिरं च तेषां समाहारः (द्वन्द्वः) |



| | | |
|---|---|---|
| **अवशेन्द्रियचित्तानाम्** | – | न वशे सन्ति इन्द्रियाणि चित्तं च येषाम् (ब०व्री०) |
| **दुर्भगाभरणम्** | – | दुर्भगानाम् आभरणम् (षष्ठी तत्पु०) |
| **सजीवः** | – | जीवनेन सह वर्तमानः (सहार्थ बहुव्रीहि) |

**( ग ) व्युत्पत्तिः ( प्रकृतिप्रत्ययविभागः )**

| | | |
|---|---|---|
| **परितोष्य** | – | परि + Öतुष् + णिच् + ल्यप् |
| **कर्तुम्** | – | Öकृ + तुमुन् |
| **मूढः** | – | Öमुह् + क्त |
| **एकत्र** | – | एक + त्रल् (तद्धित) |
| **व्यापादितः** | – | वि + आ + Öपद् + णिच् + क्त |
| **अवतीर्य** | – | अव + Öतृ + ल्यप् |
| **अभिहितम्** | – | अभि + Öधा + क्त |
| **अनुष्ठितः** | – | अनु + Öस्था + क्त |
| **उपार्जितः** | – | उप + Öअर्ज् + क्त |
| **आश्रितः** | – | आ + Öश्रि + क्त |

## अभ्यासः ( लिखितः )

**1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकपदेन वदत–**

(क) तेषां त्रयः केन व्यापादिताः?

(ख) तेषां त्रयः शास्त्रपारंगताः किन्तु कीदृशाः आसन्?

(ग) प्रथमः युवकः किम् अकरोत्?

(घ) चर्ममांसरुधिरं केन संयोजितम्?

(ङ) चतुर्थः वृक्षादवतीर्य कुत्र गतः?



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

**2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकवाक्येन वदत–**

(क) अयं निज: पर: वा इति कस्य गणना भवति?

(ख) विद्याया: का उत्तमा?

(ग) त्रयोऽपि केन व्यापादिता:?

(घ) मार्गाश्रितै: तै: अटव्यां कानि दृष्टानि?

(ङ) किं सिंह: वन्यपशु: अस्ति?

## अभ्यास: (मौखिक:)

**1. सन्धिविच्छेदं कुरुत–**

एकस्तु, मित्रैर्मन्त्रितम्, भविष्यतीति, मार्गाश्रितै:, ततश्च, यावज्जीवनम् ।

**2. समासविग्रहं कुरुत–**

बुद्धिहीना:, देशान्तरम्, अर्थोपार्जना, उदारचरित:, अस्थिसञ्चय:, सजीव:

**3. प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत–**

मूढ:, कर्तुम्, अवतीर्य, एकत्र, अभिहितम्, आश्रित:।

**4. संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत–**

(क) किसी गाँव में चार युवक रहते थे।

(ख) वे परस्पर मित्रभाव से रहते थे।

(ग) अर्थोपार्जन के लिए वे दूसरे देश में गये।

(घ) उन्होंने एक स्थान पर अस्थियाँ देखीं।

(ङ) वे अस्थियाँ एक सिंह की थीं।



**ÿ. अधोलिखितेषु कोष्ठपदेन समुचितेन रिक्तस्थानं पूरयत–**

(क) कदाचित् तै: .................... मन्त्रितम्। (**विप्रै:/ साधुभि:/ मित्रै:**)

(ख) राजपरिग्रह: .................... विना न लभ्यते। (**धनं/ बुद्धिं/ विद्यां**)

(ग) .................... चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्। (**उदार/ विशाल**)

(घ) त्रयोऽपि .................... व्यापादिता:। (**दस्युना/ सिंहेन**)

(ङ) तृतीय: पुरुष: सुबुद्धिना ....................। (**वारित:/ प्रेरित:**)

## योग्यता-विस्तार:

इस पाठ के अंत में एक पद्य है जिसमें ज्ञान और व्यवहार का सम्बन्ध दिखाया गया है। हाथी के स्नान का दृष्टांत है कि उसे अच्छी तरह कोई नहला भी दे तो वह पुन: धूल में लोट जाता है या सिर पर धूल अपनी सूँड़ से फेंकता है। स्नान उसके लिए व्यर्थ हो जाता है। जिन लोगों के मन और इन्द्रिय वश में नहीं रहते, हाथी के समान जो मनमाना करते हैं, उन्हें ज्ञान मिलना व्यर्थ है। उसका उपयोग वे नीचता दिखाने में ही करेंगे। ऐसे लोगों का ज्ञान वैसा ही है जैसे किसी कुरूप पर अलंकारों का बोझ लाद दें। उसका रूप तो नहीं बदलेगा, अलंकार उसके लिए भार-रूप रहेंगे।

'क्रिया' शब्द के अनेक अर्थ हैं–

(1) व्याकरण में–जाना, खाना आदि।

(2) व्यवहार

(3) विद्या

(4) कार्य

(5) संस्कार इत्यादि।



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अष्टमः पाठः

# नीतिपद्यानि

[संस्कृतभाषायां नीतिविषयकं विपुलं साहित्यं वर्तते। सदाचारस्य शिक्षया नीतिः मानवान् उन्नतान् करोति। नीतिः क्वचित् कथारूपेण प्रकाश्यते, क्वचित् पद्यरूपेण। पञ्चतन्त्रं कथात्मको नीतिग्रन्थः अस्ति। नीतिशतकं, चाणक्यनीतिदर्पणः, विदुरनीतिः एवमादयः ग्रन्थाः पद्यात्मकाः। सर्वेऽपि ते मानवस्य प्रगतिमुपदिशन्ति। तैः मानवः विचारपूर्वकं स्वकीयं मार्गं निश्चित्य सत्कार्यं कृत्वा उन्नतो भवति, समाजस्य हिताय उपयोगी च जायते। प्रस्तुते पाठे भर्तृहरिकृतस्य नीतिशतकस्य सरलानि पद्यानि संकलितानि सन्ति]

**अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः ।**
**ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति ॥1॥**

**येषां न विद्या न तपो न दानं न चापि शीलं न गुणो न धर्मः ।**
**ते मर्त्यलोके भुवि चारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥2॥**

**जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ।**
**चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥ 3॥**

**प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः ।**
**विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमाना प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति ॥ 4॥**

**निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।**
**अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥ 5॥**



**सिंहः शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु ।**
**प्रकृतिरियं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः ॥ 6॥**

**आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमुपैति पश्चात् ।**
**दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥ 7॥**

**विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः ।**
**यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥8॥**

## शब्दार्थाः

| | | |
|---|---|---|
| **अज्ञः** | ज्ञानहीनः | मूर्ख |
| **ज्ञानलवदुर्विदग्धम्** | अल्पेन ज्ञानेन अहंकारपूर्णः | दुष्ट पण्डित |
| **रञ्जयति** | आह्लादयति | प्रसन्न करता है |
| **मर्त्यलोके** | मनुष्यलोके | मनुष्य लोक में |
| **मृगाः** | पशवः | पशुगण |
| **जाड्यम्** | मूर्खताम् | अज्ञान को |
| **दिशति** | प्रयच्छति | बढ़ाती है |
| **अपाकरोति** | दूरीकरोति | दूर करती है |
| **दिक्षु** | दिशासु | दिशाओं में |
| **तनोति** | विस्तारयति | फैलाती है |
| **खलु** | निश्चयेन | निश्चय ही |
| **नीचैः** | अधमैः | नीच लोगों द्वारा |
| **विघ्नविहताः** | विघ्नैः प्रतिहताः | विघ्नों से आहत |
| **प्रतिहन्यमानाः** | समाक्रान्ताः | पीड़ित होते हुए |
| **नीतिनिपुणः** | नीतिज्ञः | नीतिकुशल |



https://www.studiestoday.com

| | | |
|---|---|---|
| **समाविशतु** | आगच्छतु | आये |
| **युगान्तरे** | अन्यस्मिन् काले | बहुत दिनों बाद |
| **निपतति** | आक्रामति | आक्रमण करता है |
| **कपोलम्** | गण्डस्थलम् | गाल |
| **सत्त्ववताम्** | बलशालिनाम् | बलवानों का |
| **गुर्वी** | बृहती, महती | बड़ी |
| **क्षयिणी** | क्षीयमाणा | क्षीण होने वाली |
| **लघ्वी** | सूक्ष्मा, अल्पकाया | छोटी |
| **पुरा** | पूर्वम् | पहले |
| **अभ्युदये** | सम्पदि | उन्नति काल में |
| **युधि** | समरे | युद्ध में |
| **व्यसनम्** | आसक्तिः | आसक्ति, लगाव |
| **श्रुतौ** | शास्त्रे | शास्त्र में |
| **न्याय्यः** | न्यायसंगतः, उचित | सही, उचित |

## व्याकरणम्

### ( क ) सन्धिविच्छेदः

**सर्वेऽपि** – सर्वे + अपि

**सुखमाराध्यः** – सुखम् + आराध्यः

**मृगाश्चरन्ति** – मृगाः + चरन्ति

**मानोन्नतिम्** – मान + उन्नतिम्

**यथेष्टम्** – यथा + इष्टम्

**प्रारब्धमुत्तमजनाः** – प्रारब्धम् + उत्तमजनाः

**शिशुरपि** – शिशुः + अपि



**अद्यैव** – अद्य + एव

**प्रकृतिरियम्** – प्रकृतिः + इयम्

**वृद्धिमुपैति** – वृद्धिम् + उप + एति

**छायेव** – छाया + इव

### ( ख ) व्युत्पत्तिः ( प्रकृतिप्रत्ययविग्रहः )

**अज्ञः** – नञ् + Öज्ञा + क

**विशेषज्ञः** – विशेषं जानाति, विशेष + Öज्ञा + क

**दुर्विदग्धः** – दुर् + वि + Öदह् + क्त

**उन्नतिः** – उत् + Öनम् + क्तिन्

**विहताः** – वि + Öहन् + क्त

**सत्त्ववताम्** – सत्त्व + मतुप् (षष्ठी बहुवचन)

**क्षयिणी** – क्षय + इनि + ङीप्

**लघ्वी** – लघु + ङीप् (स्त्री०)

**गुर्वी** – गुरु + ङीप् (स्त्री०)

**भिन्ना** – Öभिद् + क्त + टाप्

## अभ्यासः ( मौखिक )

1. **संस्कृतभाषया उत्तराणि वदत–**

(क) मनुष्यरूपेण के मृगाश्चरन्ति?

(ख) के भुवि भारभूताः सन्ति?

(ग) विघ्नविहताः प्रारभ्य के विरमन्ति?

(घ) न्यायात् पथः के न प्रविचलन्ति?

(ङ) महात्मनाम् विपदि किम् लक्षणम् भवति?



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

## अभ्यासः ( लिखितः )

1. **एकपदेन संस्कृतभाषया उत्तराणि लिखत–**

(क) कदा सिंहशिशुरपि निपतति?

(ख) मर्त्यलोके भुवि भारभूताः के सन्ति?

(ग) का धियः जाड्यम् हरति?

(घ) चेतः कः प्रसादयति?

(ङ) दिक्षु कीर्तिं कः तनोति?

(च) महात्मनाम् किम् लक्षणम् अस्ति?

2. **अधोलिखितानि रेखांकितपदानि बहुवचने परिवर्तयत–**

उदाहरणम् – **एकवचने– त्वं कार्ये प्रवृत्तः असि ।**

**बहुवचने – यूयं कार्ये प्रवृत्ताः स्थ।**

(क) यस्य पार्श्वे नास्ति विद्या सः मृग इव चरति।

(ख) सत्संगतिः पुरुषस्य वाचि सत्यम् सिञ्चति।

(ग) नीचैः विघ्नभयेन कार्यं न प्रारभ्यते।

(घ) सत्सङ्गतिः पुरुषस्य मानोन्नतिम् दिशति।

3. **उचितविभक्तिप्रयोगं कृत्वा वाक्यानां पूर्तिः कुरुत–**

उदाहरणम् – **बालकेन ……… अक्षरं लिखितम्। ( सुन्दर )**

**बालकेन सुन्दरम् अक्षरं लिखितम् ।**

(क) ज्ञानलवदुर्विदग्धं ……… ब्रह्मापि न रञ्जयति। (नर)

(ख) विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः ……… न परित्यजन्ति। (उत्तमजन)

(ग) धीराः ……… पथः न प्रविचलन्ति। (न्याय)

(घ) सज्जनानाम् मैत्री दिनस्य ……… छाया इव भवति। (परार्धभिन्न)

(ङ) उत्तमजनाः ……… न परित्यजन्ति। (प्रारब्धकार्य)



4. **अधोलिखितेषु शुद्धं पर्यायपदद्वयं रेखांकितं कुरुत–**

(क) **निपुणाः** – विज्ञाः, अज्ञाः, विशेषज्ञाः

(ख) **लक्ष्मीः** – इन्दिरा, रमा, शारदा

(ग) **पथः** – मार्गात्, सरण्याः, कुल्यायाः

(घ) **शिशुः** – बालः, श्येनः, नवजातः

(ङ) **सदसि** – सभायाम्, सरसि, परिषदि

5. **एकं समुचितं पदं लिखत–**

यथा– **यस्य पार्श्वे 'ज्ञा' नास्ति सः ………।**

**यस्य पार्श्वे 'ज्ञा' नास्ति सः अज्ञः।**

(क) विघ्नेन विशेषेण हताः ये ते ………।

(ख) नीतौ निपुणा ये ते ………।

(ग) सतां संगतिः ………।

(घ) महान् आत्मा अस्ति यः ………।

6. **स्तम्भद्वये लिखितानां विपरीतार्थकशब्दानां मेलनं कुरुत–**

| ( अ ) | | ( ब ) | |
|---|---|---|---|
| (i) | अज्ञः | (क) | दुःखम् |
| (ii) | सुखम् | (ख) | विज्ञः |
| (iii) | विशेषज्ञः | (ग) | दुरात्मनाम् |
| (iv) | विदग्धम् | (घ) | अधमाः |
| (v) | भुवि | (ङ) | उच्चैः |
| (vi) | नीचैः | (च) | रसातले |
| (vii) | उत्तमाः | (छ) | अल्पज्ञः |
| (viii) | महात्मनाम् | (ज) | मूर्खम् |



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

## योग्यता-विस्तार:

(क) इस पाठ के सभी पद्य लोकव्यवहार का वर्णन करते हैं। प्रथम पद्य में अधूरे ज्ञान वालों की निन्दा है। कुछ लोकोक्तियाँ भी हैं- (1) अधजल गगरी छलकत जाय (2) नीम-हकीम खतरे जान। दूसरे पद्य में मानव के आवश्यक गुणों की सूची है जिनके अभाव में वह पशुमात्र है। भर्तृहरि ने एक अन्य पद्य में भी कहा है–

साहित्यसंगीत-कला-विहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।

तीसरे पद्य में सत्संगति का महत्व और चौथे पद्य में आरम्भ किये गये काम को बीच में न छोड़ने का उपदेश है। तुलना करें– अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति। प्रायः यही बात पाँचवें पद्य में है कि बुद्धिमान लोग सही मार्ग से नहीं हटते, संसार कुछ भी कहे। छठे पद्य में सिंह के बच्चे का उदाहरण देकर तेजस्वियों की आयु का विचार न करने का उपदेश है। सातवें पद्य में दिन के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध की छाया की उपमा देकर मैत्री के दो रूपों का वर्णन है। अंतिम पद्य महापुरुषों के स्वभाव का चित्रण करता है।

(ख) अकः सवर्णे दीर्घः–

अकः सवर्णदचि परे दीर्घ एकादेशः स्यात्। स्वरवर्णात् परः समानवर्णः भवेत् तदा दीर्घस्वरो भवति।

यथा – **चापि** = च + अपि (अ + अ = आ)

**ब्रह्मापि** = ब्रह्मा + अपि (आ + अ = आ)

**युगान्तरे** = युग + अन्तरे (अ + अ = आ)

**मुनीन्द्रः** = मुनि + इन्द्रः (इ + इ = ई)

**सुधीन्द्रः** = सुधी + इन्द्रः ( ई + इ = ई)

**अथाभ्युदये** = अथ + अभ्युदये ( अ + अ = आ)

**चाभिरुचिः** = च + अभिरुचिः ( अ + अ = आ)



(ग) इस पाठ में गेय छन्दों का प्रयोग है। उन्हें योग्य व्यक्तियों से गाकर पढ़ने का अभ्यास करें। छन्दों के नाम–

(1) आर्या – प्रथम तथा षष्ठ पद्य।

(2) उपजाति – द्वितीय तथा सप्तम पद्य।

(3) वसन्ततिलका – पद्य संख्या 3, 4 तथा 5

(4) द्रुतविलम्बित – अष्टम पद्य।



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

नवमः पाठः

# बिहारस्य सांस्कृतिकं वैभवम्

[बिहारः सांस्कृतिकनिधिसम्पन्नं राज्यम्। इदं न केवलं धर्म-दर्शन-ज्योतिष-व्याकरणादिशास्त्राणां भूमिः अपितु संगीत-नृत्य-चित्र प्रभृतीनां कलानामपि विकासस्थलम्। अत्र प्रचलिताः विविधाः सांस्कृतिकाः क्रियाकलापाः पुरुषार्थ चतुष्टयेन सम्बद्धा आत्मानुरञ्जकाश्च। कलानां वृद्धौ राज्यस्य सांस्कृतिकसमृद्धौ च अत्रत्यानां सर्वेषां धर्मानुयायिनां विविधानां जातीनाञ्च योगदानम्]

संगीतं कलासु प्रमुखम्। गीतं नृत्यं त्र वाद्यं च चयं संगीतमुच्यते। देवाराधनस्य पुरुषार्थसम्प्राप्तेः प्रमुखं साधनमेतत्। एतदर्थं लोकजीवनस्य अभिन्नम् अङ्गमिदम्। जनैः समायोजितेषु संस्कारोत्सवेषु तत्तद्भावपुरस्सरं गीतानि गीयन्ते। तानि च गीतानि संस्कारगीतानि कथ्यन्ते। तेषु मुण्डन -यज्ञोपवीत -विवाह -कोहवर -सोहर - समदाओन-गीतानि मुख्यानि। अत्र संगीत-परम्परायां केचिद् विशिष्टाः साधकाः अभवन्। तेषु स्वनामधन्याः पण्डित रामचतुर–मल्लिक-पण्डित सियाराम तिवारी– प्रभृतयः विश्वविश्रुताः।

नृत्यं भाव-प्रकाशकं वर्तते। आचार्यज्योतिरीश्वर ठक्कुरेण 'वर्णरत्नाकरे' नृत्यस्य लास्य-ताण्डव सम्भा-हल्लीस-रासकेति बहवो भेदाः कथिताः। तत्र लास्यं माधुर्यभावसूचकं भवति।

अस्मिन् राज्ये लोकनृत्यस्य प्राचीना परम्परा। सर्वेषु अञ्चलेषु स्व-स्वलोकनृत्यानि प्रसिद्धानि। तत्र मिथिलायां जटजटिन सामा चकेवा-झिझिया-होली कमलापूजेति नृत्यप्रकाराः प्रचलिताः। एवमेव अञ्चलान्तरेष्वपि बहूनि लोकनृत्यानि। यथा मगधमण्डले 'खेलडिन'-डोमकचादयः भोजपुरमण्डले नेटुआ-जोगीरा-चैता-गौंड इत्यादयः नृत्यभेदाः प्रसिद्धाः।

नाट्यं जनरुचिवर्द्धकं लोकाराधनक्षमं विज्ञैः पञ्चमो वेदः कथ्यते। अत्र राज्ये विशिष्टेषु समारोहेषु पूजनावसरेषु च जनैः ऐतिहासिकवृत्तमिश्रितानि सामाजिकानि च नाट्यानि सोत्साहं प्रस्तूयन्ते जनैश्च बहुमन्यन्ते। गीत-नृत्यसमन्वितानि लोकनाट्यान्यपि प्रचलितानि। यथा मिथिलायां



रामलीला-किरतनिया-विदापत प्रभृतीनि नाट्यानि। भोजपुरी-अञ्चले भिखारी ठाकुरस्य 'विदेशिया' इति नामकं लोकनाट्यम् अतीव लोकप्रियम्।

राज्येऽस्मिन् सर्वेषु अञ्चलेषु चित्रकलायाः प्रचलनं संस्कारकार्येषु दृश्यते। मिथिलाक्षेत्रे देवपूजनावसरे संस्कारोत्सवेषु च स्त्रीभिः भूमौ 'अल्पना' भित्तिचित्राणि च निर्मीयन्ते। तानि च चित्राणि प्रायः गृहे प्राङ्गणे, भित्तौ, तुलसीचत्वरे कोवरगृहे च रच्यन्ते। इयं हि चित्रकला इदानीं मिथिला चित्रकला-नाम्ना विख्याता जाता। अस्यां चित्रविद्यायां कुशलाः पद्मश्री सम्मानिताः जगदम्बा–महासुन्दरी– प्रभृतयः स्त्रियः बिहारराज्यस्य गौरवभूताः।

मूर्तिकला अपि राज्यस्य वैभवम्। अत्र मृन्मयानि विविधवस्तुरचितानि च क्रीडनकानि आपणेषु बहुधा दृश्यन्ते। धार्मिकावसरेषु च प्रायः मूर्तिकलाविद्भिः तृण-कर्दम-मृद्भिः संरचिताः देवमूर्तयः स्थाप्यन्ते जनैः पूज्यन्ते च। कुम्भकारैः मृत्तिकानिर्मिताः गजानां घोटकानाञ्च मूर्तयः विवाहावसरेषु विशेषतः मण्डपाभ्यन्तरे स्थाप्यन्ते।

वस्तुतः बिहारः भारतवर्षे सांस्कृतिकदृष्ट्या गौरवमयं पदं धारयति।

## शब्दार्थाः

| | | |
|---|---|---|
| **सांस्कृतिकम्** | सांस्कृतिसम्बद्धम् | संस्कृति या परंपरा से जुड़ा हुआ |
| **वैभवम्** | ऐश्वर्यम् | सम्पत्ति, धरोहर |
| **पुरुषार्थः** | जीवनलक्ष्याणि | मानव जीवन के उद्देश्य |
| **वाद्यम्** | ध्वनिजनकम् उपकरणम् | बाजा |
| **देवाराधनायाः** | देवपूजायाः | देवता की आराधना |
| **अभिन्नम्** | अद्वितीयम् सम्बद्धम् | अभिन्न/ जुड़ा |
| **साधकाः** | साधनां कुर्वन्तः | साधना में लगे |
| **विश्वविश्रुताः** | जगत्प्रसिद्धाः | संसार में चर्चित |
| **भावप्रकाशकम्** | भावद्योतकम् | भावों को प्रकट करने वाला |
| **लोकाराधनम्** | जनतुष्टिकरम् | सबके लिए सुखकर |
| **वृत्तम्** | कथानकम् | कथा |



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

| | | |
|---|---|---|
| **अल्पना** | विशिष्ट रेखाचित्रम् | अरिपन/ अल्पना |
| **मृन्मयानि** | मृत्तिकानिर्मितानि | मिट्टी से बने |
| **क्रीडनकम्** | खेलोपकरणम् | खिलौना |
| **कर्गद:** | लेखनाधार: | कागज |
| **आपणेषु** | हट्टेषु | दुकानों में, बाजारों में |

## व्याकरणम्

### 1. सन्धिविच्छेद:

**आत्मानुरञ्जकाश्च** – आत्मा + अनुरञ्जका: + च
**धर्मानुयायिनाम्** – धर्म + अनुयायिनाम्
**सम्प्राप्तेश्च** – सम् + प्राप्ते: + च
**संस्कारोत्सवेषु** – संस्कार + उत्सवेषु
**पूजनोत्सवेषु** – पूजन + उत्सवेषु
**वृत्ताश्रितानि** – वृत्त + आश्रितानि
**राज्येऽस्मिन्** – राज्ये + अस्मिन्
**मण्डपाभ्यन्तरे** – मण्डप + अभ्यन्तरे

### 2. समास:

**देवाराधनम्** – देवानाम् आराधनम् (षष्ठी तत्पु०)
**संस्कारोत्सवेषु** – संस्काराणाम् उत्सवा: तेषु (षष्ठी तत्पु०)
**विश्वविश्रुता:** – विश्वस्मिन् विश्रुता: (सप्तमी तत्पु०)
**लोकाराधनम्** – लोकानाम् आराधनम् (षष्ठी तत्पु०)
**जनरुचिवर्धकम्** – जनानां रुचीनां वर्द्धकम् (षष्ठी तत्पु०)
**विविधवस्तुरचितानि** – विविधै: वस्तुभि: रचितानि (कर्मधारय, तृतीया तत्पु०)
**मण्डपाभ्यन्तरे** – मण्डपानाम् अभ्यन्तरे (षष्ठी तत्पु०)



## अभ्यास: (मौखिक:)

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकैनैव पदेन वदत–
   (क) कलासु प्रमुखं किम्?
   (ख) 'जट-जटिन' इति लोकनृत्यम् कस्मिन् अञ्चले प्रसिद्धम्?
   (ग) नाट्यं कतमो वेद: कथ्यते?
   (घ) पद्मश्री जगदम्बा देवी कस्यां कलायां प्रसिद्धा?
   (ङ) मण्डपाभ्यन्तरे केषां मूर्त्तय: स्थाप्यन्ते?

## अभ्यास: (लिखित:)

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया पूर्णवाक्येन लिखत–
   (क) किं नाम संगीतम्?
   (ख) लास्यं कीदृशं नृत्यम्?
   (ग) भोजपुरी अञ्चले कस्य किं नाम च नाटकं प्रसिद्धम्?
   (घ) संगीतकलायां प्रसिद्धा: साधका: के आसन्?
   (ङ) कस्मिन् अवसरे काभिश्च चित्राणि निर्मीयन्ते?

2. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–
   (क) संगीतं कलासु प्रमुखं कथम्?
   (ख) राज्यस्य अञ्चलेषु प्रसिद्धानां लोकनृत्यानां नामानि लिखत।
   (ग) मिथिला-चित्रकलाया: परिचयं दत्त।
   (घ) धार्मिकदृष्ट्या मूर्तिकलाया: किं महत्वम्?
   (ङ) बिहारस्य सांस्कृतिकं महत्वं वर्णयत।



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. 'क' स्तम्भे प्रदत्तानां पदानां 'ख' स्तम्भे लिखितपदैः सह समुचितं मेलनं कुरुत–

| क | ख |
|---|---|
| झिझिया | गीतम् |
| अल्पना | नृत्यम् |
| क्रीडनकम् | चित्रकला |
| भिखारी ठाकुरः | मूर्तिकला |
| समदाओन | नाट्यम् |

4. अधोलिखितेषु पदेषु धातुयुक्तम् उचितं प्रत्ययं निर्दिशत–

(क) **नृत्यम्** – Öनृत् + ल्यप्/ क्यप्

(ख) **वाद्यम्** – Öवद् + यत्/ ण्यत्

(ग) **साधनम्** – Öसाध् + घञ्/ ल्युट्

(घ) **भिन्नम्** – Öभिद् + क्त/ ल्युट्

(ङ) **जातम्** – Ö जन् + घञ्/ क्त

5. निम्नलिखितेषु पदेषु उपसर्गं धातुं च पृथक्कृत्य समुचितप्रत्ययरूपं लिखत–

(क) संगीतम् — सम् + गै (गी) क्त्वा/ क्त

(ख) सम्प्राप्तिः — सम् + प्र + आप्तुमुन्/ क्तिन्

(ग) संस्कृतिः — सम् + कृ — क्तिन्/ तुमुन्

(घ) विश्रुतः — वि + श्रु — यत्/ क्त

(ङ) प्रस्तोतव्यम् — प्र + स्तु ल्यप्/ तव्यत्

(च) प्रस्तुतम् — प्र + स्तु — क्त/ ल्यप्

Ö. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कि.तपदानां समुचितां विभक्तिं निर्दिशत–



(क) संगीतं कलासु प्रमुखम्। (**षष्ठी/ सप्तमी**)

(ख) 'सोहर' इति संस्कारगीतस्य भेदः। (**तृतीया/ षष्ठी**)

(ग) नाट्यं पञ्चमो वेदः कथ्यते। (**प्रथमा/ द्वितीया**)

(घ) संगीतं संस्कृतेः अभिन्नम् अङ्गम्। (**तृतीया/ षष्ठी**)

(ङ) कुम्भकारैः निर्मिताः गजानां मूर्तयः। (**चतुर्थी/ तृतीया**)

---

## योग्यता-विस्तारः

### गीतम्

शार्ङ्गदेवः संगीतरत्नाकर ग्रन्थस्य रचयिता। तेन संगीतस्य माहात्म्यसम्बन्धे उक्तम्–

**गीतेन प्रीयते देवः सर्वज्ञः पार्वतीपतिः ।**
**गोपीपतिरनन्तोऽपि वंशध्वनिवशंगतः ॥**
**तस्य गीतस्य माहात्म्यं के प्रशंसितुमीशते ।**
**धर्मार्थकाममोक्षाणामिदमेवैकसाधनम् ॥**

### ध्रुवपदम्

दरभंगा परम्परायाः ध्रुवपदगायकेषु रामचतुर मल्लिकः क्षितिपाल मल्लिकः सियाराम तिवारी चेत्यादयः कलाकाराः प्रसिद्धाः।

### नृत्यं नृत्तञ्च

'अन्यद्भावाश्रयं नृत्यं नृत्तंताललयाश्रयम्। 'ताण्डवनृत्यकाले शिवस्य ढक्कायाः अइउण् इत्यादीनि चतुर्दश सूत्राणि निर्गतानि। यथा चोक्तम्–

**नृत्यावसाने नटराजराजो**



केशाञ्चन लोकनृत्

1. जट जटिन –

2. झिझिया –

3. कमलापूजा –

छात्रैः करणीयम्

छात्रैः स्वस

विशेषज्ञैः स

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दशमः पाठः

# ईद-महोत्सवः

[ईदमहोत्सवः महम्मदीयानां सर्वोत्तमः उत्सवः। अस्मिन् उत्सवे सामाजिक-मानवीय- सद्भावनायाः अत्याकर्षकं दृश्यं लभ्यते। उत्सवेऽस्मिन् सर्वे जनाः परस्परं मिलन्ति सहैव खादन्ति आनन्दाब्धौ च निमज्जन्ति। उत्सवोऽयम् एकतायाः प्रसन्नतायाः औदार्यस्य च परिचायकः। अस्मिन् उत्सवे एकतायाः यादृशम् अभिज्ञानं प्राप्यते तादृशं नान्येषु उत्सवेषु।]

भारतदेस्य परम्परा धर्मप्रधाना। देशेऽस्मिन् नाना धर्माः सन्ति। येन प्रकारेण हिन्दूनां मुख्योत्सवाः दीपावली-रक्षाबन्धन-दुर्गापूजा-प्रभृतयः सन्ति तथैव महम्मदीयानाम् उत्सवेषु सर्वोत्तमः 'ईद' इति मन्यते। मूलतः उत्सवोऽयं तपस्यायाः उपासनायाश्च पर्व मन्यते। सामाजिक-मानवीय-सद्भावनायाः दृष्ट्या अपि अत्याकर्षकमिदं पर्व। अस्मिन् पर्वणि महम्मदीयाः रमजानमासे चन्द्रमसं विलोक्य 'रोजा' इति व्रतं प्रारभन्ते। अस्यां रोजायां पूर्णं दिनं व्रतधारिणः उपवासं कुर्वन्ति। पुनः संध्याकाले सम्मिल्य 'इफ़्तार' नामकम् उपवासभंगं कुर्वन्ति। मासमेकं यावत् इदम् पर्व भवति।

मासस्यान्तिमे शुक्रवारे (जुमा इति ख्याते) ते रमजानस्य मासावसाने च संध्यायां पुनः चन्द्रं दृष्ट्वा अन्येद्युः प्रातःकाले ईदस्य 'नमाज' इति प्रार्थनां कुर्वन्ति। अनुष्ठानमिदं सामूहिकरूपेण पूर्णं क्रियते। एतदर्थमेव नमाजस्थानम् 'ईदगाह' कथ्यते। नैतादृशम् आनन्ददायकम् अन्यत् पर्व। ईदमहोत्सवस्य दिने जनाः नवानि वसनानि धारयन्ति। मधुराणि पक्वान्नानि च मिलित्वा खादन्ति। पक्वान्नेषु- सूत्रिका (सेवई) प्रधाना। दुग्धयुक्तानि अन्यानि वस्तूनि च खाद्यन्ते। चिकित्साशास्त्रदृष्ट्या मनसः वचसः कर्मणश्च शुद्ध्यर्थमिदं पर्व मन्यते। अवसरेऽस्मिन् प्रायः सर्वे जनाः निर्धनाः धनिकाश्च यथाशक्ति दीनार्तानाम् सेवार्थं दानं कुर्वन्ति। तदेव दानं 'जकात' इति 'फितरा' इति च कथ्यते। तद्दानम् अनिवार्यं मन्यते। वर्षे वर्षे समागतस्य ईदमहोत्सवस्य प्रतीक्षा सर्वैः क्रियते। यतः सर्वानपि आनन्दसागरेऽयं निमज्जयति। धन्योऽयमुत्सवः एकतायाः प्रसन्नतायाश्च औदार्यस्य च प्रतीकः।

**सर्वधर्मसमत्वेन भारतेऽपि महोत्सवः ।**
**ईदाख्यो वार्षिकोऽप्येष परमानन्ददायकः ॥**



## शब्दार्थाः

| | | |
|---|---|---|
| **ईदगाह** | नमाजस्थानम् | नमाज का स्थान |
| **महम्मदीयाः** | मुस्लिमजनाः | मुसलमान लोग |
| **सम्मिल्य** | परस्परं मिलित्वा | परस्पर मिलकर |
| **अन्येद्युः** | अपरस्मिन् दिवसे | दूसरे दिन |
| **मासावसाने** | मासान्ते | महीने के अंत में |
| **शुद्ध्यर्थम्** | शुद्धये, शोधनाय | शुद्धि के लिए |
| **नैतादृशम्** | नैतत् समानम् | इसके समान नहीं |
| **उत्सवः** | समारोहः | आनन्द का अवसर |
| **जकात** | दानविशेषः | एक प्रकार का दान |

## व्याकरणम्

1. **सन्धिविच्छेदः**

| | | |
|---|---|---|
| **देशेऽस्मिन्** | - | देशे + अस्मिन् |
| **देशोऽयम्** | - | देशः + अयम् |
| **मुख्योत्सवाः** | - | मुख्य + उत्सवाः |
| **उपासनायाश्च** | - | उपासनायाः + च |
| **वार्षिकोऽप्येष** | - | वार्षिकः + अपि + एष |
| **परमानन्ददायकः** | - | परम + आनन्ददायकः |



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

## अभ्यासः (मौखिकः)

1. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि एकवाक्येन संस्कृतभाषया वदत–
   (क) हिन्दूनाम् मुख्योत्सवाः के के सन्ति?
   (ख) महम्मदीयानां सर्वोत्तमः उत्सवः कः मन्यते?
   (ग) ईदपर्व कीदृशम् पर्व अस्ति?
   (घ) ईदपर्वणि महम्मदीयाः किम् विलोक्य 'रोजां' प्रारभन्ते?
   (ङ) 'ईदगाहः' कः कथ्यते?

## अभ्यासः (लिखितः)

1. अधोलिखितप्रश्नानामुत्तराणि एकवाक्येन संस्कृतभाषया लिखत–
   (क) धर्मप्रधानदेशः कः?
   (ख) ईदपर्वणि व्रतधारिणः किं कुर्वन्ति?
   (ग) नमाजस्थानं किं कथ्यते?
   (घ) ईदपर्वणि निर्धनाः धनिकाश्च किं कुर्वन्ति?
   (ङ) ईदावसरे यत् दानं भवति तम् किं कथ्यते?

2. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानि आधारीकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–
   (क) <u>भारतदेशोऽयं</u> धर्मप्रधानः।
   (ख) <u>अस्मिन्</u> देशे बहवः धर्माः सन्ति।
   (ग) महम्मदीयानां सर्वोत्तमः उत्सवः '<u>ईद</u>' इति मन्यते।
   (घ) ईदानुष्ठानम् <u>सामूहिकरूपेण</u> पूर्णं क्रियते।
   (ङ) <u>ईदपर्व</u> एकस्मिन् वर्षे एकवारम् आयाति।

3. सन्धिविच्छेदं कुरुत–
   (i) देशोऽयम् (ii) देशेऽस्मिन् (iii) मुख्योत्सवाः (iv) उत्सवोऽयम् (v) अत्याकर्षकम् (vi) मासावसाने (vii) अनुष्ठानमिदं (viii) नैतादृशम् (ix) कर्मणश्च (x) धनिकाश्च।



4. रेखाङ्कितपदेषु विभक्तिकारणं लिखत–
   (क) <u>अत्याकर्षकम्</u> इदम् पर्व अस्ति।
   (ख) महम्मदीयाः <u>चन्द्रमसं</u> विलोक्य 'रोजा' इति रमजानमासे प्रारभन्ते।
   (ग) <u>मासमेकं</u> यावत् इदम् पर्व भवति।
   (घ) <u>चिकित्साशास्त्रदृष्ट्या</u> मनसः वचसः कर्मणश्च शुद्ध्यर्थम् इदम् पर्व मन्यते।

5. 'क' स्तम्भस्य प्रकृति-प्रत्ययां-योगः 'ख' स्तम्भे दत्तः। तयोः समुचितमेलनं कुरुत–

| क | ख |
|---|---|
| (i) मिल + क्त्वा | (क) बहुधा |
| (ii) बहु + धा | (ख) तथा |
| (iii) तत् + थाल् | (ग) मिलित्वा |
| (iv) दृश् + क्त्वा | (घ) विलोक्य |
| (v) वि + लोक् + ल्यप् | (ङ) दृष्ट्वा |

## योग्यता-विस्तारः

### (क) भावविस्तारः

सामाजिकमानवीयसद्भावनायाः दृष्ट्या अपि अत्याकर्षकं पर्व अस्ति। अस्मिन् पर्वणि सर्वे सम्मिल्य इफ्तारनामकं उपवासभंगं कुर्वन्ति। सर्वे सहैव अस्य महोत्सवस्य दिने खादन्ति मिलन्ति च।

### (ख) प्रमुखशब्दानाम् विशेषज्ञानम्

(i) **बहुधा** – अत्र बहुशब्दात् 'धा' प्रत्ययः।



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ii) **उत्सवः** – उद्गत सवः (दुःखम्) यत्र सः उत्सवः इति कथ्यते।

(iii) **विलोक्य** – 'वि' उपसर्गपूर्वकात् लोक् धातोः ल्यप् प्रत्ययः ततः 'विलोक्य' इति भवति।

(iv) **मूलतः** – मूलशब्दात् 'तसिल्' प्रत्ययः।

(ग) ईदमहोत्सवस्य विषये उर्दूभाषायां कश्चित् कविः कथयति–

ऐसी न शबेरात न बकरीद की खुशी ।
जैसी हरेक दिल में है इस ईद की खुशी ॥



**एकादशः पाठः**

# ग्राम्यजीवनम्

[अयं पाठः आधुनिकजीवनस्य वैषम्यं विडम्बनां च दर्शयति। पुरा सर्वत्र ग्राम्यजीवनस्य प्रशंसायां विपुलं साहित्यं रचितम्। किन्तु भौतिकजीवनस्य विकासेन सह ग्राम्यजीवनस्य समस्यावृद्धिर्जाता इति नोपेक्षणीयम्। नगरजीवनमिव ग्राम्यजीवनं न रोचते तद्वासिभ्योऽपि सम्प्रति। अतोऽद्यतनं जीवनं वैषम्यमयमिति दर्शितं लेखकेन। अस्माभिश्च किं करणीयमिति प्रतिपादितम्।]

अस्माकं देशे जनाः ग्रामे नगरे च वसन्ति। ग्रामाणां संख्या नगरापेक्षया नूनमधिका वर्तते। नगराणां संख्या तु क्रमशः वर्धते किन्तु ग्रामसंख्या न तथा वृद्धिं लभते। अधुना ये नगरवासिनः, प्राचीनकाले ते ग्रामवासिनः एव। केचित् स्वग्रामेण संबन्धमद्यापि निर्वहन्ति।

एका प्राचीनोक्तिर्वर्तते-प्रकृतिर्ग्राममसृजत्, नगरं तु मानवस्य रचनेति। अस्यार्थस्तु– ग्रामस्य विकासः प्राकृतिकः, नगराणि तु कृत्रिमाणि सन्ति। मानवः स्वस्य भौतिकीं सुखसमृद्धिं कल्पयित्वा महता प्रयासेन नगराणि निर्ममे। भोजनं वसनम् आवासश्चेति तिस्रः आवश्यकताः मानवस्य वर्तन्ते। ग्रामे एताः न्यूनतमाः प्राप्यन्ते इति तत्रत्याः जनाः सन्तोषप्रधानाः। किन्तु एतल्लाभार्थं धनमावश्यकम्। कृषिप्रधाना धनव्यवस्था ग्रामेऽद्यापि वर्तते। क्वचिदेव व्यापारः उद्योगो वा विद्यते। अतएव ग्राम्यजनाः धनार्जनाय नगरं प्रति पलायमाना दृश्यन्ते।

प्राचीनकाले ग्राम्यजीवनं बहुसुखमयं बभूव। सन्तुष्टाः ग्रामवासिनः यदा कदैव नगरं गच्छन्ति स्म। सुखस्य साधनानि तदानीमुपलब्धानि ग्रामीणेभ्यो रोचन्ते। शुद्धं जलं निर्मलो वायुः, स्वपरिश्रमार्जितमन्नं, समाजे सामञ्जस्यं, जनानां परिमिता च संख्या-एतत्सर्वं ग्राम्यजीवनस्य लक्षणं बभूव। कृत्रिमा भौतिकी संस्कृतिः भारतस्य ग्रामान् बहुकालं यावत् नास्पृशत्। विदेशेषु तु ग्रामेऽपि वैज्ञानिकी समृद्धिरागता यथा–विद्युत्प्रवाहः, आधुनिकसंचारव्यवस्था, यातायातसाधनानि, कृषिकर्मणे यन्त्रोपस्करादीनि च। नेदं भारतीयग्रामेषु दृश्यते प्रायेण। अतएवाद्य ग्राम्यजीवनं न वरदानरूपं मन्यते। सम्पन्नाः ग्रामीणा अपि



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

नगरं प्रति पलायनपराः, तत्र का कथा विपन्नानां वृत्तिहीनानां ग्रामजनानाम्?इमे नगरेषु जीविकां लभन्ते, पूर्वे तु सुखसमृद्धिजातं भौतिकीं सुविधां चेति।

अपि च, ग्रामे नाद्य स्वर्गस्य कल्पना वर्तते। अतः नाद्यत्वे ग्राम्यजीवनं प्रशस्तमिति साहित्येषु गीयते। अद्य क्वचिद् ग्रामेषु अनावृष्टिकारणात्, क्वचिच्चातिवृष्टिनिमित्तात्, कदाचिन्नदीषु जलपूरेण तटबन्धभङ्गात् महदेव ग्रामजनसंकटम् आपद्यते। विहारप्रदेशे तु सर्वमिदं युगपद् दृश्यते इत्यभिशापमेव मन्यन्ते ग्राम्यजीवनम्। समाजे च राजनीतिप्रसारेण दलप्रतिबद्धता, जातिवादः भूमिविवादः इत्याद्यपि संकटकारणं विशेषेण ग्रामेषु दृश्यते।

तदर्थं मानवतावादस्य विकासः आवश्यकः। युवका जने जने समताभावं दर्शयन्तु। प्रकृतिः सर्वान् मानवान् समानशरीरावयवैः रचयति। कुतस्तत्र कृत्रिमो मानवकृतो वैरभावः?ग्रामे कामं न भवतु भौतिकी समृद्धिः, किन्तु पर्यावरणस्य निर्मलता तत्रैव बाहुल्येन वर्तते इति न सन्देहः। नगरजीवनस्य समृद्धिःग्रामेऽपि समानेया प्रशासनेन। तदैव ग्राम्यजीवनं सुखदं काम्यं च भविष्यति। नगरं प्रति पलायनं चावरुद्धं स्यात्।

## शब्दार्थाः

| | | |
|---|---|---|
| **निर्वहन्ति** | यथा कथमपि धारयन्ति | निबाह रहे हैं |
| **असृजत्** | अरचयत् | सृष्टि की |
| **भौतिकीम्** | बाह्याम् | ऊपरी |
| **कल्पयित्वा** | विचार्य | विचार करके |
| **तत्रत्याः ( तत्र+त्यप् )** | तत्र स्थिताः | वहाँ के |
| **वसनम्** | वस्त्रम् | कपड़े, परिधान |
| **पलायमानाः** | धावन्तः | भागते हुए |
| **सामञ्जस्यम्** | समरसता, सहभावः | एक साथ रहना |
| **का कथा?** | किं वक्तव्यम्? | क्या कहना? |
| **वृत्तिहीनाः** | जीविकारहिताः | जीविका के साधन से रहित |
| **जातम्** | समूहः, उपादानानि | समूह |



| | | |
|---|---|---|
| **अद्यत्वे** | आधुनिके समये | आज कल |
| **दलप्रतिबद्धता** | राजनीतिदलं प्रति बन्धनम् | दलों से बँध जाना |
| **प्रशस्तम्** | शोभनम् | अच्छा |
| **कामम् ( अव्यय )** | यद्यपि | भले ही |
| **अवरुद्धम्** | निवारितम् | रुका हुआ |

## व्याकरणम्

**1. सन्धिविच्छेदः**

**आवासश्चेति** = आवासः + च + इति
**समृद्धिरागता** = समृद्धिः + आगता
**नास्पृशत्** = न + अस्पृशत्
**कदाचिन्नगरेषु** = कदाचित् + नगरेषु
**इत्याद्यपि** = इति + आदि + अपि
**चावरुद्धम्** = च + अवरुद्धम्
**एतल्लाभार्थम्** = एतत् + लाभार्थम्
**नोपेक्षणीयम्** = न + उपेक्षणीयम्
**वासिभ्योऽपि** = वासिभ्यः + अपि
**नगरापेक्षया** = नगर + अपेक्षया
**नूनमधिका** = नूनम् + अधिका
**कदैव** = कदा + एव

**2. प्रकृति-प्रत्ययविभागः**

**प्राकृतिकः** = प्रकृति + ठक्
**भौतिकी** = भूत + ठक् + ङीप्



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

**पलायमाना** = परा + ⌧ अय + शानच्
**संस्कृतिः** = सम् + ⌧ कृ + क्तिन्
**वैज्ञानिकी** = विज्ञान + ठक् + ङीप्
**निर्मलता** = निर्मल + तल् + टाप्
**ग्राम्यः** = ग्राम + यत्
**काम्यम्** = Öकम् + णिच् + ण्यत्
**अवरुद्धम्** = अव + Öरुध् + क्त
**कदा** = किम् + दा
**यदा** = यत् + दा

### 3. पद-परिचयः

वर्तते – वृत् धातु (आत्मनेदपद), लट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
असृजत् – सृज् धातु, लङ् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
प्राप्यन्ते – प्र उपसर्ग, आप् धातु कर्मवाच्य, लट् लकार, प्रथमपुरुष, बहुवचन
बभूव – भू धातु, लिट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
अस्पृश्यत् – स्पृश् धातु, लङ लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
स्यात् – अस् धातु, विधिलिङ्, प्रथमपुरुष, एकवचन

### 4. समास-विग्रहः

**नगरापेक्षया** – नगरस्य अपेक्षया (षष्ठी तत्पुरुष)
**सुखसमृद्धिः** – सुखसहिता समृद्धिः (मध्यमपदलोपी)
**धनार्जनाय** – धनस्य अर्जनाय (षष्ठी तत्पुरुष)
**ग्राम्यजीवनम्** – ग्राम्यं जीवनम् (कर्मधारय)
**अनावृष्टिः** – न आवृष्टिः (नञ् समासः)



## अभ्यासः (मौखिकः)

### 1. निम्नलिखितानां प्रश्नानामुत्तरं दत्त

(क) अस्माकं देशे जनाःकुत्र वसन्ति?
(ख) भारते केषां संख्या अधिका अस्ति?
(ग) प्राचीनकाले ग्राम्यजीवनं कीदृशम् आसीत्?
(घ) विदेशेषु ग्रामेऽपि कीदृशी समृद्धिः आगता?
(ङ) अद्य ग्रामे कस्य कल्पना नास्ति?

## अभ्यासः (लिखितः)

### 1. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया दत्त

(क) भारतं केषाम् देशः अस्ति?
(ख) देशे ग्रामापेक्षया केषां संख्या क्रमशः वर्धते?
(ग) मानवः कां कल्पयित्वा नगराणि निर्ममे?
(घ) मानवेभ्यः केषां वस्तूनाम् आवश्यकता वर्तते?
(ङ) अद्यत्वे ग्रामेषु कीदृशं संकटकारणं दृश्यते?

### 2. अधोलिखितानां पदानां प्रकृति-प्रत्ययविभागं लिखत–

संस्कृतिः, ग्राम्यम्, अवरुद्धम्, वैज्ञानिकः, कदा।

### 3. सन्धिविच्छेदं कुरुत–

(क) ग्रामेऽद्यपि – ......... + ......... + ......... ।
(ख) एतल्लाभः – ......... + ......... ।
(ग) धनार्जनम् – ......... + ......... ।
(घ) चेति – ......... + ......... ।
(ङ) प्राचीनोक्तिः – ......... + ......... ।



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

**4. अधोलिखितानां वाक्यानां संस्कृतभाषायामनुवादं कुरुत–**

(क) हमारे देश में अधिक लोग गाँव में रहते हैं।

(ख) प्राचीन काल में गाँव का जीवन सुखमय था।

(ग) गाँव में न्यूनतम सुविधाएँ हैं।

(घ) गाँव के लोग नगरों में जीविका पाते हैं।

(ङ) गाँव में आज स्वर्ग की कल्पना नहीं है।

**5. अधोलिखितानां पदानां स्ववाक्येषु प्रयोगं कुरुत–**

निर्वहन्ति, अधुना, पुरा, कदा, पलायते।



द्वादशः पाठः

# वीर कुँवर सिंहः

[भारतस्य प्रथमे स्वतंत्रतासंग्रामे नेतृरूपेण वीर कुँवर सिंहः वृद्धोऽपि वीरतया भागं गृहीतवान्। धूर्ताः वैदेशिकास्तेन पराजिताः। तस्य वीरस्य चरित्रमयं पाठः वर्णयति।]

शौर्यस्य पराक्रमस्य धैर्यस्य च समन्वयरूपो वीरकुँवरसिंहः देशस्य स्वतन्त्रतार्थम् आन्दोलनस्य अनुपमः सेनानीः आसीत्। बिहारराज्यस्य भोजपुरमंडलस्य जगदीशपुरग्रामेऽस्य जन्माभवत्। जनकोऽस्य साहेबजादासिंहः अतीव प्रभावशाली पुरुषः। देवीभक्तः कुँवरसिंहः आखेटकुशलः आसीत्।

तारुण्ये एतस्य विवाहः गयाप्रमण्डले स्थितस्य सूर्यतीर्थस्य 'देव' नामकस्य भूस्वामिनः फतेहनारायणसिंहस्य कन्यया जातः। कुँवरसिंहे सिंहासनमारूढे सति जगदीशपुरे अनेके जनकल्याणस्य कार्यक्रमाः सञ्चालिताः। अनेन उदारहृदयेन न्यायव्यवस्थायां सर्वेषां वर्गाणां प्रतिनिधित्वं नियोजितम्। सर्वत्र शान्तिः समृद्धिश्च संस्थापिते।

1845 तमे खीष्टवर्षे भारते प्रखररूपेण आंग्लशासनविरोधस्य ज्वाला प्रज्वलिता। तदानीम् आंग्लशासकेषु भयं व्याप्तम्। आंग्लानां विरोधे प्रचलितेषु आन्दोलनेषु कुँवरसिंहस्य सक्रिया भूमिका बभूव। 1857 तमे खीष्टवर्षे भारतस्य प्रथमः स्वतंत्रतासंग्रामोऽभवत्। कुँवरसिंहः स्वसेनायां वीरयुवकान् गृहीतवान्। आंग्लाधिकारिणः आन्दोलनं विफलीकर्तुं तथा आन्दोलनकारिणः अवरोद्धुं निग्रहीतुं, ताडयितुं च अनेकान् उपायान् अकुर्वन्। 1857 तमे खीष्टवर्षे जूनमासस्य 19 तमे दिनाङ्के पाटलिपुत्रे स्वतंत्रतासेनानिनः त्रिरङ्गं ध्वजं समुत्तोलितवन्तः। तत्र टेलरस्य दमनचक्रेण अनेके वीरपुत्राः निगृहीताः मृत्युदण्डं च प्राप्ताः।

तद्वर्षे जुलाईमासस्य 26 तमे दिनांके दानापुर-शिबिरस्य विद्रोहिणः सैनिकाः आरां प्रति प्रस्थातुम् आरब्धवन्तः कुँवरसिंहस्य नेतृत्वे आत्मनः उत्सर्गाय प्रस्तुताः। जुलाईमासस्य 29/30 दिनाङ्के 500 सैनिकैः सह डनवरनामकः आंग्लसैन्याधिकारी वीरकुँवरसिंहेन पराजितोऽभवत्। अनया घटनया



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

क्रांतिकारिषु उत्साह: वर्धित:। तदा सम्पूर्णे प्राचीनशाहाबादमंडले कुँवरसिंहस्य अधिकार: सञ्जात:। कुँवरसिंह: क्षेत्रात् क्षेत्रान्तरं गत्वा विद्रोहम् उदघोषयत् जनान् च संघटितान् अकरोत्। अस्मिन् क्रमे तेन रामगढस्य, मिर्जापुरस्य, विजयगढस्य च यात्रा कृता। नवम्बरस्य सप्तमे दिनाङ्के. ग्वालियरस्य सेना कुँवरसिंहस्य सेनायां समाविष्टा। कुँवरसिंहस्य विजयाभियानम् आजमगढे, गाजीपुरे, सिकन्दरपुरे च सफलतया सम्पन्नम्।

1858 तमे खीष्टाब्दे अप्रैल मासस्य 22 तमे दिनाङ्के. वीरकुँवरसिंहस्य स्वसैनिकै: सह गङ्ग.पारं गच्छत: आंग्लानां भुशुण्डीगोलिकाप्रहारेण दक्षिणहस्तो विकृतो जात:। स: स्वयमेव हस्तं खड्गेन खण्डयित्वा गङ्गायै समर्पितवान्। ततो द्वितीये दिने 23 तमे दिनाङ्के. 'ले ग्रैण्ड' नामकम् आंग्लसेनापतिं स पराजितवान्। अनेन सर्वत्र वीरकुँवरसिंहस्य जयघोष: समारब्ध:। अप्रैलमासस्य अयमेव 23 तमो दिनाङ्क.: विजयदिवस: इति समुद्घोषित:।

युद्धे सततं संघर्षरतस्य वीरकुँवरस्य शरीरावयवा: विकृता: व्रणान्विताश्च जाता:। फलत: अप्रैलमासस्य 26 तमो दिनाङ्के. भारतमातु: वीरपुत्रोऽयं दिवंगत: । सत्यमेव भणितम्– 'कीतिर्यस्य स जीवति।'

## शब्दार्था:

| | | |
|---|---|---|
| **समन्वय:** | समूह: | समूह |
| **सेनानी:** | सेनापति: | सेनानायक |
| **आखेटकुशल:** | मृगयायां निपुण: | शिकार में निपुण |
| **तारुण्ये** | यौवने | जवानी में |
| **आरूढे** | आसीने | बैठने पर |
| **ज्वाला** | अग्निशिखा | लौ/लपट |
| **उत्सर्गाय** | त्यागाय | त्याग के लिए |
| **भूमिका** | योगदानम् | सहभागिता |
| **उदघोषयत्** | उद्घोषणां कृतवान् | घोषणा की |
| **संग्राम:** | युद्धम् | लड़ाई |



| | | |
|---|---|---|
| **निग्रहीतुम्** | अधीनीकर्त्तुम्/ग्रहीतुम् | गिरफ्तार करने के लिए |
| **त्रिरङ्ग.म् ध्वजम्** | त्रिवर्णात्मिका पताका | तिरंगा झंडा |
| **समुत्तोलितवन्त:** | सम्यग् आकाशे उत्थापितवन्त: | फहरा दिया |
| **भुशुण्डीगोलिकाप्रहारेण** | भुशुण्डी नाम अस्त्रविशेष: तस्य गोलिकाघातेन | बन्दूक की गोली लगने से |
| **दिवंगत:** | स्वर्गं गत:/ मृत्युं प्राप्त: | मृत्यु को प्राप्त हो गये |

## व्याकरणम्

### 1. सन्धिविच्छेद:

**जन्माभवत्** = जन्म + अभवत्

**व्रणान्वितश्च** = व्रण + अन्वित: + च (व्रणै: अन्वितश्च)

**उदघोषयत्** = उत् + अघोषयत् (घुष् + णिच् + लङ्)

**कीतिर्यस्य** = कीर्ति: + यस्य

### 2. समासविग्रह:

**अनुपम:** = न उपमा यस्य स: (बहुव्रीहि:)

**जनकल्याणम्** = जनानां कल्याणम् (षष्ठी तत्पुरुष)

**क्षेत्रान्तरम्** = अन्यत् क्षेत्रम् (कर्मधारय:)

**उदारहृदयेन** = उदारं हृदयं यस्य तेन (बहुव्रीहि:)

**शरीरावयवा:** = शरीरस्य अवयवा: (षष्ठीतत्पुरुष)

**त्रिरङ्ग:** = त्रयो रङ्गा यस्मिन् (बहुव्रीहि:)



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

### 3. व्युत्पत्तिः ( प्रकृति-प्रत्ययविभागः )

| | | |
|---|---|---|
| **शौर्यम्** | – | शूर + ष्यञ् ( शूरस्य भावः) |
| **धैर्यम्** | – | धीर + ष्यञ् ( धीरस्य भावः) |
| **तारुण्यम्** | – | तरुण + ष्यञ् ( तरुणस्य भावः) |
| **आरूढः** | – | आ + Öरुह् + क्त |
| **विफलीकर्तुम्** | – | विफल + च्वि + Öकृ + तुमुन् |
| **अवरोद्धुम्** | – | अव + Öरुध् + तुमुन् |
| **निग्रहीतुम्** | – | नि + Öग्रह् + तुमुन् |
| **समुत्तोलितवन्तः** | – | सम् + उत् + Öतुल् + णिच् + क्तवतु |
| **निगृहीताः** | – | नि + Öग्रह + क्त |
| **खण्डयित्वा** | – | Öखण्ड् + णिच् + क्त्वा |
| **पराजितवान्** | – | परा + Öजि + क्तवतु |
| **विकृतः** | – | वि + Öकृ + क्त |
| **अभियानम्** | – | अभि + Öया + ल्युट् ( अन) |

## अभ्यासः ( मौखिकः )

### 1. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तरं वदत–

(क) भारतीय-स्वतन्त्रतान्दोलनस्य अनुपमः सेनानी कः आसीत्?

(ख) कुँवरसिंहस्य जन्म कस्मिन् ग्रामे अभवत्?

(ग) कुँवरसिंहस्य पिता कः आसीत्?

(घ) कुँवरसिंहः कस्मिन् कुशलः?

(ङ) कुँवरसिंहः कस्याः भक्तः आसीत्?



### 2. उत्तरं वदत–

(क) कस्य कन्यया कुँवरसिंहस्य विवाहः अभवत्?

(ख) कुत्र कुँवरसिंहेन सर्वेषां प्रतिनिधित्वम् नियोजितम्?

(ग) आंग्लविद्रोहस्य का प्रज्वलिता?

(घ) कुँवरसिंहस्य सक्रिया भूमिका कुत्र बभूव?

(ङ) केषां दमनचक्रेण वीरपुत्राः निगृहीताः।

### 3. अधोलिखितानां पदानां प्रत्ययं वदत–

(क) ताडयितुम् ........................

(ख) अभियानम् ........................

(ग) खण्डयित्वा ........................

(घ) विकृतः ........................

(ङ) पराजितवान् ........................

## अभ्यासः ( लिखितः )

### 1. एकपदेन उत्तरं दत्त–

(क) भोजपुरमण्डलं कुत्र विद्यते?

(ख) कुँवरसिंहस्य पिता कः आसीत्?

(ग) फतेहनारायण सिंहः कस्य भूस्वामी आसीत्?

(घ) कति सैनिकैः सह कुँवरसिंहः डनवरं पराजितवान्?

(ङ) कुँवरसिंहः कं खड्गेन खण्डितवान्?



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

## 2. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत–

(क) कुँवरसिंहस्य विवाहः कया अभवत्?

(ख) भारते आंग्लविद्रोहस्य ज्वाला प्रखररूपेण कदा प्रज्वलिता आसीत्?

(ग) कुँवरसिंहस्य उदारता कुत्र वर्तते?

(घ) भारतस्य प्रथमस्वतन्त्रतासंग्रामः कदा अभवत्?

(ङ) कुँवरसिंहः कदा दिवंगतः?

(च) कुँवरसिंहः अप्रैल 1858 तमे कं पराजितवान्?

(छ) विजयदिवसः कदा घोषितः?

## 3. अधोलिखितानां पदानाम् प्रकृतिं प्रत्ययं च लिखत–

(क) धैर्यम् .................

(ख) पराजितवान् .................

(ग) तारुण्यम् .................

(घ) निग्रहीतुम् .................

(ङ) शौर्यम् .................

## 4. कोष्ठकस्थेभ्यः धातुभ्यः उचितप्रत्ययं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) कुँवरसिंहस्य विवाहः ................. । (**भू**)

(ख) आंग्लशासकेषु आतङ्कः व्याप्तः ................. । (**अस्**)

(ग) आंग्लाधिकारिणः उपायान् ................. । (**कृ**)

(घ) छात्राः अध्यापकम् ................. । (**प्र + नम्**)

(ङ) कुँवरसिंहः विद्रोहम् ................. । (**उत् + घुष्**)



## 5. कोष्ठकस्थेभ्यः शब्देभ्यः उचितप्रत्ययं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) सेनायां ............... नियोजितवान्। (**युवक**)

(ख) हस्तं ............... खंडितवान्। (**खड्ग**)

(ग) कुँवरसिंहः ............... क्षेत्रान्तरं गत्वा विद्रोहस्य स्वरम् उदघोषयत्। (**क्षेत्र**)

(घ) कुँवरसिंहस्य ............... नाम साहेबजादासिंहः आसीत्। (**पितृ**)

(ङ) ............... सह गङ्गापारं गतः। (**स्वसैनिक**)

## योग्यता-विस्तारः

### 1. भाषिक विस्तारः

'क्त' और 'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल में होता है। 'क्त' का प्रयोग कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में होता है तथा अकर्मक धातु से कर्तृवाच्य में होता है। परंतु 'क्तवतु' का प्रयोग केवल कर्तृवाच्य में ही होता है। 'क्त' में 'त' और 'क्तवतु' में 'तवत्' शेष बचता है।

'क्त' प्रत्यय से बने शब्दों के रूप पुंलिंग में 'देव' स्त्रीलिंग में 'लता' एवं नपुंसक लिंग में ''फल' शब्द के समान चलते हैं। 'क्तवतु' से बने शब्दों के रूप तीनों लिंगों में 'भवत्' शब्द के समान चलते हैं।

| धातु | 'क्त' से बने शब्द | क्तवतु से बने शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| **जन्** | जातम्/जातः/जाता | जनितवान् | जन्म लिया |
| **प्र + आप्** | प्राप्तम्/प्राप्तः/प्राप्ता | प्राप्तवान् | प्राप्त किया |
| **लभ्** | लब्धम् | लब्धवान् | प्राप्त किया |
| **परा + जि** | पराजितम् | पराजितवान् | पराजित किया |
| **कृ** | कृतम् | कृतवान् | किया |
| **सम् + उत् + तुल** | समुत्तोलितम् | समुत्तोलितवान् | फहराया |
| **पठ्** | पठितम् | पठितवान् | पढ़ा |
| **गम्** | गतम् | गतवान् | गया |



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ख) भाववाचक शब्द बनाने के लिए धातु से 'ल्युट्' प्रत्यय का प्रयोग होता है। यथा–

| धातु | निष्पन्न पदा | अर्थ |
|---|---|---|
| **गम्** | गमनम् | जाना |
| **पठ्** | पठनम् | पढ़ना |
| **चल्** | चलनम् | चलना |
| **हस्** | हसनम् | हसना |
| **पा** | पानम् | पीना |
| **दा** | दानम् | दान |

(ग) **सह, साकम्, समम् और सार्द्धम्** (के साथ) शब्दों के प्रयोग होने पर कर्ता जिसके साथ जाता या कोई कार्य करता है उससे तृतीया विभक्ति होती है। यथा–

कुँवर सिंह: सैनिकै: सह डनवरं पराजितवान्।

सीता–रामेण सह वनम् गतवती।

अहं त्वया सह विद्यालयं गच्छामि।

मोहन: पित्रा सह गृहात् नि:सरति।

(घ) **अभित:, परित:, उभयत:, सर्वत:, अन्तरा, अन्तरेण, समया, निकषा, हा, प्रति, धिक्, विना, उपरि उपरि तथा अध: अध:** के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा–

कुँवरसिंह: आरां प्रति प्रस्थानं कृतवान्। (की ओर)

मार्गम् उभयत: वृक्षा: सन्ति। (दोनों ओर)

ग्रामम् सर्वत: (परित: अभित:) सस्यक्षेत्राणि सन्ति। (चारों तरफ/सब ओर)

नगरम् निकषा/समया नदी अस्ति। (समीप)

रामं लक्ष्मणं च अन्तरा सीता अस्ति। (बीच में)

क्रियां बिना/अन्तरेण ज्ञानं भार: भवति। (बिना)



हा दुष्टम्! (के विषय में अफसोस)

शिवद्रोहिणम् धिक्। (धिक्कार)

जलम् उपरि उपरि लता तरति। (ऊपर–ऊपर)

जलम् अध: अध: कच्छपा: चलन्ति। (नीचे–नीचे)

2. (क) **जगदीशपुर**– भोजपुर प्रमंडल का एक गाँव जहाँ पर बाबू वीर कुँवर सिंह का जन्म हुआ था। इस समय भोजपुर जिला का यह प्रखंड है।

(ख) **देव**– यह औरंगाबाद जिला का एक गाँव है। यहाँ सूर्य का एक प्राचीन एवं प्रसिद्ध मंदिर है। अत: इसे सूर्यतीर्थ भी कहा जाता है। कुँवर सिंह के ससुर यहीं के जमींदार थे।

(ग) **समतामूलक समाज**– कुँवर सिंह ने एक ऐसे समाज के निर्माण की परिकल्पना की थी जिसमें जाति, धर्म, ऊँच–नीच आदि का भेद–भाव न हो। विकास के अवसर सब को समान मिलें एवं समाज में सब का समान प्रतिनिधित्व हो। इसे 'समतामूलक समाज' की संज्ञा उन्होंने दी थी।

(घ) **टेलर**– अंग्रेज पदाधिकारी जो 1857 में बिहार का प्रभारी था। यह अपने शासक के प्रति वफादार एवं स्वतंत्रता सेनानियों के लिए बड़ा ही क्रूर था।

(ङ) **डनवर**– अंग्रेजी सेना का बिहार का प्रभारी जिसे कुँवर सिंह ने 29/30 जुलाई 1857 को अपने 500 सैनिकों के साथ पराजित किया था।

(च) **लेग्रैण्ड**– अंग्रेजी सेनानायक जिसे कुँवर सिंह ने 23/04/1858 को पराजित किया था। इसी को हराने के बाद उन्होंने विजय दिवस मनाने की घोषणा की थी।



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

त्रयोदशः पाठः

# किशोराणां मनोविज्ञानम्

[विद्यालयस्य उच्चकक्षासु अधीयानाश्छात्राः सर्वेऽपि किशोराः। अध्ययनकालेऽपि तेषां महत्त्वाकांक्षा भाविजीवनस्य समृद्धये सर्वदा वर्तमाना भवति। परस्परस्य स्पर्धापि तेषु विकसति। शरीरेषु च परिवर्तनं मानसमान्दोलयति। तत्सर्वं विचार्य शिक्षापरोऽयं पाठः निर्मितः सामयिकः प्रासङ्गिकश्च]

© BSTBPC

जीवने परिवर्तनं प्रकृतिर्नियमः। न सदा एकरूपता तिष्ठति। अतएव कृष्णः गीतायां 'कौमारं यौवनं जरा' इति रूपेण जीवनेऽवस्थात्रयं निर्दिशति। तत्र कौमारमेव किशोरावस्था कथ्यते। बालावस्थायुवावस्थयोरन्तराले च सा भवति। उच्चविद्यालयेऽधीयानाः किशोराः किशोर्यश्च भवन्ति। विद्यालये सामान्यशिक्षाक्रमेण ते परम्परागतं पाठमेवानुसरन्ति। किंतु तेषां शारीरिको मनोवैज्ञानिकश्च पक्षावुपेक्षितौ स्तः। न शिक्षका न चाभिभावका विषयेऽस्मिन् दत्तावधानाः।

किशोराणां किशोरीणां च शरीरं मनश्च युवावस्थां प्रति प्रवर्तते। शरीरे तावन्मार्दवं बाललक्षणं शनैः शनैः परुषतां प्राप्नोति, यौवनलक्षणानि च समाविशन्ति। शरीरेण सह मनसोऽपि वृत्ति-विकारः आगच्छति। अनुशासनं तदानीमप्रियं भवति, स्वैरवृत्तिः स्वच्छन्दता वा पदं धारयति मानसे। विशेषरूपेण एकलपरिवारे स्थितानां किशोराणां तु सैव कथा, संयुक्तपरिवारे तु सहिष्णुता बन्धुभावो वा न विनश्यति। सम्पन्नपरिवारे पालिताः किशोराः यदा कदा स्वमित्राणि विकृतानि कुर्वते। तेषां महत्त्वाकाङ्क्षां वर्धयन्ति। एते च स्वपरिवारं प्रति आक्रोशभावमपि प्रकटयन्ति। किशोरेषु विकसितस्य तादृशस्य दिवास्वप्नस्य परिशोधनं परिमार्जनं चावश्यकं भवति। तदर्थं शिक्षकाभिभावकयोर्मध्ये काले काले संवादः विचारविमर्शश्चानिवार्यः।

जीवनं प्रति आशावदभिः किशोरैर्भवितव्यम्। किन्तु स्वकीयं मूलं साधनजातं च न विस्मरणीयम्। समाजे सुलभानां साधनानामुपयोगेन स्वाभिलाषस्य पूरणं श्रेयः। लक्ष्यं च दूरतो दृश्यमानमपि सदानुबन्ध-शालिभिर्लभ्यते। एतदर्थं महतां जनानां जीवनचरितस्यापि यदा कदानुशीलनम् अनुसरणं च कर्तव्यम्।



नारीणां जागरणकालेऽधुना किशोर्योऽपि स्वाभिलाषस्य सोद्देश्यतां पूरयितुं क्षमाः सन्ति। नैकमपि कार्यं सम्प्रति ताभिरलभ्यं दृश्यते। तथापि संकल्पस्य दृढता, साधनानां स्वाभीष्टदिशया च प्रवर्तनमपि काम्यं स्यात्। साधनाभावे कुण्ठापालनं नोचितम्। अन्यथा प्रतिभाया विनाशः, सुलभस्यापि साधनस्यानुपयोग इति। अत्र नीतिकारस्य पद्यांशस्याभिनवः अर्थः अनुसरणीयः–

**दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या**
**यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः ।**

अर्थात् प्रयत्नस्य फलं यदि सत्वरं न लभ्यते तदा चिन्तनीयमेतद् यन्मम प्रयत्ने कः कुत्र च दोषः आसीत्। सिद्धिः कथं न जाता इति। पुनः प्रयासोऽवधेयः। 'प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति' इति कवेर्वचनम् ।

शिक्षाकाले तु वर्तमानकार्यमेव चिन्तयेत् । नातिदूरं पश्येत् अन्यथा वर्तमानमपि गतं स्यात् श्रेष्ठः कालो वर्तमानः इति सुधियः कथयन्ति। संकल्पस्य दृढता, दृष्टेः व्यापकता चेति किशोरजीवनस्य मन्त्रद्वयं सदा स्मरणीयम्।

## शब्दार्थाः

| | | |
|---|---|---|
| **जरा** | वृद्धावस्था | बुढ़ापा |
| **अन्तराले** | मध्ये | बीच में |
| **अधीयानाः** | अध्ययनशीलाः | अध्ययनरत |
| **दत्तावधानाः** | सावधानाः | सतर्क/चौकस/एकाग्र/सावधान |
| **मार्दवम्** | मृदुता | कोमलता |
| **परुषताम्** | कठोरताम् | कठोरता को/कर्कशता को |
| **वृत्तिविकारः** | अवस्थापरिवर्तनम् | स्थिति में परिवर्तन |
| **स्वैरवृत्तिः** | स्वच्छन्दवृत्तिः | मनमाना व्यवहार |
| **मानसे** | मनसि, चित्ते | मन में |
| **विकृतानि** | दूषितानि | दूषित |



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

| | | |
|---|---|---|
| **दिवास्वप्नस्य** | आकाशकुसुमस्य | असम्भव/अवास्तविक का |
| **स्वाभिलाषस्य** | स्वेच्छाया: | अपनी इच्छा का |
| **अनुबन्धशाली** | दृढनिश्चय: | दृढ़ निश्चयवाला |
| **स्वाभीष्टदिशा** | इष्टमार्गेण | मनोनुकूल दिशा से |
| **काम्यम्** | अपेक्षितम | अपेक्षित |
| **कुण्ठा** | जडता | प्रयास के बावजूद किसी इच्छित कार्य की सिद्धि न होने के कारण आत्मग्लानि |
| **दैवम्** | भाग्यम् | भाग्य |
| **निहत्य** | त्यक्त्वा | छोड़कर |
| **पौरुषम्** | उद्यमम् | पुरुषार्थ, परिश्रम |
| **अवधेय:** | करणीय: | करना चाहिए |
| **प्रारब्धम्** | गृहीतं कार्यम् | आरम्भ किया हुआ |
| **सुधिय:** | पण्डिता:/विद्वांस: | विद्वान/ ज्ञानी |
| **संकल्पम्** | निश्चयम् | निश्चय को |

## व्याकरणम्

**परिवर्तनम्** – परि + ⌧वृत् + ल्युट्। **कौमारम्** – कुमार + अण् (भावे तद्धित)। **यौवनम्** – युवन् + अण्। **किशोरावस्था** – किशोराणाम् अवस्था (षष्ठी तत्पुरुष स०, दीर्घस्वर संधि)। **वालावस्थायुवावस्थयोरन्तराले** – बालावस्था च युवावस्था च (द्वन्द्वस०) तयो: अन्तराले (षष्ठी तत्पुरुष समास, विसर्ग संधिश्च)। **पक्षावुपेक्षितौ** – पक्षौ + उपेक्षितौ (अयादि स्वर संधि)। **उच्च-विद्यालयेऽधीयाना:** – उच्चश्चासौ विद्यालय: (कर्मधारय समास) उच्चविद्यालये अधीयाना: (पूर्वरूप संधि:)। **दत्तावधाना:** – ⌧दा + क्त – दत्त । अव + ⌧धा + ल्युट् – अवधानम् । दत्तम् अवधानं यैस्ते-दत्तावधाना: (बहुब्रीहि)। **स्वाभीष्टदिशया** – स्वस्य अभीष्टमृ (षष्ठी तत्पुरुष समास) स्वाभीष्टा चासौ दिशा (कर्मधारय समास)। **प्रारब्धम्** – प्र + आ + ⌧रभ् + क्त। **उत्तमजना:** – उत्तमश्चासौ जन: (कर्मधारय समास) ते।



## अभ्यास: (मौखिक:)

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं वदत–**
   (क) प्रकृते: नियम: क:?
   (ख) जीवने सदा किं न तिष्ठति?
   (ग) अन्तराले इति पदस्य क: अर्थ:?
   (घ) मानसे स्वच्छन्दता कदा पदं धारयति?
   (ङ) क: काल: श्रेष्ठ: भवति?

2. **अधोलिखितानां मौखिकम् उत्तरम् दत्त–**
   (क) कदा का किशोरावस्था कथ्यते?
   (ख) अनुशासनम् कदा अप्रियं भवति?
   (ग) साधनाभावे किं न उचितम्?
   (घ) नीतिपद्यांशस्य क: अर्थ: अनुसरणीय:?
   (ङ) प्रारब्धं के न परित्यजन्ति?
   (च) शिक्षाकाले किं चिन्तयेत्?

3. **उदाहरणमनुसृत्य उत्तरं वदत–**
   **उदाहरणम्– परि + वृत् + ल्युट् = परिवर्तनम्**
   (क) .................. परिमार्जनम्
   (ख) .................. परिशोधनम्
   (ग) .................. अनुशीलनम्
   (घ) .................. अनुसरणम्
   (ङ) .................. पालनम्



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

4. उदाहरणमनुसृत्य पञ्च पदानि वदत–

उदाहरणम्– कृ + अनीयर् = करणीयम्

(क) पठ .......................

(ख) श्रु .......................

(ग) स्मृ .......................

(घ) पच् .......................

(ङ) दृश् .......................

5. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितेषु पदेषु प्रकृतिं प्रत्ययं च वदत–

**उदाहरणम् – कुमार + अण् = कौमारम्**

(क) यौवनम् ...................

(ख) मार्दवम् ...................

(ग) शैशवम् ...................

(घ) पौरुषम् ...................

(ङ) गौरवम् ...................

## अभ्यासः (लिखितः)

1. अधोलिखितानाम् एकपदेन उत्तरं लिखत–

(क) जीवने प्रकृतेः नियमः कः?

(ख) स्वच्छन्दता कुत्र पदं धारयति?

(ग) किशोरेषु कस्य परिशोधनम् आवश्यकम् भवति?

(घ) दूरतः अपि दृश्यमानं लक्ष्यं कैः लभ्यते?

(ङ) श्रेष्ठः कालः कः अस्ति?



2. निम्नलिखितानां पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत–

(क) कृष्णः गीतायां केन रूपेण अवस्थात्रयं निर्दिशति?

(ख) उच्चविद्यालये अधीयानाः के भवन्ति?

(ग) शिक्षकाः अभिभावकाश्च कस्मिन् विषये दत्तावधानाः न भवन्ति?

(घ) के स्वमित्राणि विकृतानि कुर्वन्ति?

(ङ) कथं स्वाभिलाषस्य पूरणं श्रेयः?

(च) लक्ष्यं प्राप्तुं किं कर्तव्यम्?

(छ) किशोरजीवनस्य मन्त्रद्वयं किम्?

3. 'क' स्तम्भे दत्तानां पदानां समानार्थकं पदं 'ख' स्तम्भे दत्तम्/ तौ यथोचितम् योजयत

| 'क' | 'ख' |
|---|---|
| कौमारम् | स्वैरवृत्तिः |
| यौवनम् | मध्ये |
| तदानीम् | सम्प्रति |
| स्वच्छन्दता | किशोरावस्था |
| अधुना | तदा |
| अन्तराले | युवावस्था |

4. रेखांकित-सर्वनाम-पदानि केभ्यः प्रयुक्तानि सन्ति लिखत–

(क) बालावस्था-युवावस्थयोरन्तराले च सा भवति।

(ख) विद्यालये सामान्या शिक्षाक्रमेण ते परम्परागतं पाठमेवानुसरन्ति।

(ग) तेषां महत्त्वाकाङ्क्षां वर्धयन्ति।

(घ) एते च स्वपरिवारं प्रति आक्रोशभावं प्रकटयन्ति।

(ङ) तेषां शरीरिको मनोवैज्ञानिकश्च पक्षावुपेक्षितौ स्तः।



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

5. अधोलिखितं रेखांकित– पदमनुसृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) कृष्ण: गीतायां निर्दिशति।

(ख) तत्र कौमारम् एव किशोरावस्था कथ्यते।

(ग) सम्प्रति एकमपि कार्यं ताभि: अलभ्यं न दृश्यते।

(घ) शिक्षाकाले वर्तेमानकार्यमेव चिन्तयेत्।

(ङ) किशोरै: स्वकीयं मूलं साधनजातं न विस्मरणीयम्।

6. अधोलिखितानाम् अव्ययपदानां सहायतया रिक्तस्थानानि पूरयत–

**सदा, च, एव, शनै: शनै:, यदा कदा, अधुना, कुत्र**

(क) बाललक्षणं ............... परुषतां प्राप्नोति।

(ख) किशोर्योऽपि स्वाभिलाषं पूरयितुं ............... क्षमा: सन्ति।

(ग) शिक्षकाभिभावकयोर्मध्ये ............... संवाद: अनिवार्य:।

(घ) एकरूपता जीवने ............... न तिष्ठति।

(ङ) किशोराणा सा ............... कथा वर्तते।

7. संधि: संधिविच्छेदं वा कुरुत–

(क) प्रकृते: + नियम: .....................

(ख) सैव .....................

(ग) तावत् + मार्दवम् .....................

(घ) किशोरैर्भवित्व्यम् .....................

(ङ) पक्षौ + उपेक्षितौ .....................

(च) सोद्देश्यताम् .....................

(छ) कृष्णो गीतायाम् .....................



(ज) जीवने + अवस्थात्रयम् .....................

(झ) किशोर्य: + अपि .....................

(ञ) किशोर्यश्च .....................

8. उदाहरणमनृसृत्य समस्तपदानि लिखत–

| उदाहरणम्– | पदानि | समस्तपदानि | समासनाम |
|---|---|---|---|
| | एका चासौ रूपता | एकरूपता | कर्मधारय: |
| (क) | किशोराणाम् अवस्था | ......................... | षष्ठी तत्पुरुष: |
| (ख) | परम्परया आगतम् | ......................... | तृतीया तत्पुरुष: |
| (ग) | दत्तम् अवधानम् यै: | ......................... | बहुव्रीहि: |
| (घ) | शासनस्य पश्चात् | ......................... | अव्ययीभाव: |
| (ङ) | प्रगतम् आरब्धम् | ......................... | प्रादि: |
| (च) | न प्रियम् | ......................... | नञ् |

9. उदाहरणमनुसृत्य कृदन्तपदेषु धातुं प्रत्ययं च पृथक् कृत्वा लिखत–

| उदाहरणम्– | पदानि | धातव: | प्रत्यय: |
|---|---|---|---|
| | आगतम् | आ + √गम् | क्त |
| (क) | उपेक्षित: | ................. | ................. |
| (ख) | अनिवार्य: | ................. | ................. |
| (ग) | कर्तव्यम् | ................. | ................. |
| (घ) | पूरयितुम् | ................. | ................. |
| (ङ) | दृश्यमानम् | ................. | ................. |
| (च) | जातम् | ................. | ................. |



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(छ) अवधेयः .................. ..................

(ञ) काम्यम् .................. ..................

10. **अधोलिखितश्लोकांशस्य भावार्थं लिखत–**

दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या

यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः ।

## योग्यता-विस्तारः

1. **भाषिकः–**

(क) 'योग्य' या 'चाहिए' अर्थ में धातुओं से तव्यत् और तव्य प्रत्यय का प्रयोग होता है। दोनों में शेष 'तव्य' बचता है। इसी अर्थ में 'अनीयर्' प्रत्यय का भी प्रयोग होता है। 'इसमें' र् का लोप् हो जाता है और 'अनीय' शेष रहता है। यथा–

तव्य/ तव्यत् अनीयर

कृ + तव्यत् = कर्तव्यम् – करने योग्य – करणीयम्

भू + तव्यत् = भवितव्यम् – होने योग्य – भवनीयम्

दृश् + तव्यत् = द्रष्टव्यम् – देखने योग्य – दर्शनीयम्

पच् + तव्यत् = क्तव्यम् – पकाने योग्य – पचनीयम्

पठ् + तव्यत् = पठितव्यम् – पढ़ने योग्य – पठनीयम्

(ख) चाहिए और योग्य अर्थ में ही ऋकारान्त और व्यञ्जनान्त धातु से 'ण्यत्' प्रत्यय होता है। इसमें 'ण्' और 'त्' का लोप हो जाता है तथा 'य' शेष बचता है। यथा–

कृ + ण्यत् = कार्यम् – करने योग्य

पठ् + ण्यत् = पाठ्यम् – पढ़ने योग्य

हृ + ण्यत् = हार्यम् – हरने योग्य, ले जाने योग्य



पच् + ण्यत् = पाच्यम् – पचाने योग्य

त्यज् + ण्यत् = त्याज्यम् – त्यागने योग्य

(ग) इसी अर्थ में स्वरान्त धातु से 'यत्' प्रत्यय होता है। इसमें 'त्' का लोप हो जाता है तथा 'य' शेष बचता है। यथा–

पा + यत् = पेयम् – पीने योग्य –

दा + यत् = देयम् – देने योग्य –

भू + यत् = भव्यम् – होने योग्य –

गै + यत् = गेयम् – गाने योग्य –

चि + यत् = चेयम् – चुनने योग्य –

(घ) 'के लिए' के अर्थ में धातु से 'तुमुन्' प्रत्यय का प्रयोग होता है। इसमें उन् का लोप हो जाता है तथा धातु से 'तुम्' लग जाता है। यथा–

- पा + तुमुन् = पातुम् – पीने के लिए
- पठ् + तुमुन् = पठितुम् – पढ़ने के लिए
- गम् + तुमुन् = गन्तुम् – जाने के लिए
- पृ + णिच् + तुमुन् = पूरयितुम् – पूरा करने के लिए
- हन् + तुमुन् = हन्तुम् – मारने के लिए

2. **ज्ञातव्यनीतिः**

□ **मनुष्याणां शरीरस्थः बन्धुः रिपुश्च**

"आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।"



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

□ **किशोरैः भास्करेणेव प्रतापः संचेतव्यः**

"एकेनापि हि शूरेण पादाक्रान्तं महीतलम्।
क्रियते भास्करेणेव स्फारस्फुरिततेजसा।।"

□ **सदा महापुरुषाः आचरणीयाः**

"परिचरितव्याः सन्तो यद्यपि कथयन्ति नो सदुपदेशम्।
यास्त्वेषां स्वैरकथास्ता एव भवन्ति शास्त्राणि।।"

□ **कार्यं विचार्य एव कर्त्तव्यम् पदा।** © BSTBPC

"कर्मायत्तं फलं पुंसां बुद्धिः कर्मानुसारिणी।
तथापि सुधिया भाव्यं सुविचार्यैव कुर्वता।।"

3. **गीता–** कुरुक्षेत्र की रणभूमि में कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। वे उपदेश ही गीता (श्रीमद्भगवद्गीता) के नाम से प्रसिद्ध ज्ञाननिधि है। इसमें 18 अध्याय है। इस महनीय ग्रन्थ का अनुवाद विश्व की प्रायः सभी प्रमुख भाषाओं में हो चुका है। इसके ज्ञान से सारी दुनिया लाभान्वित हो रही है।



**चतुर्दशः पाठः**

# राष्ट्रबोधः

[प्रस्तुतलघुकथा संवेदनशीलानां किशोराणां गुणानां विकासाय प्रभावोत्पादकं कथानकं चित्रयति। समाजस्य राष्ट्रस्य च निर्माणे सर्वेषां नागरिकाणां महती भूमिका भवति। सदा जागरूकस्य नागरिकस्य प्रयासः राष्ट्रगौरवाय प्रवर्तते। राष्ट्रबोधेन सम्पृक्तानां जनानां लघुप्रयत्नः अपि महत्कार्यं साधयति इत्येव सन्देशं वितरतीयं लघुकथा।]

विवेकः धनञ्जयेन सह विद्यालयं गच्छन् आसीत्। तौ यावदेव किञ्चिद्दूरं गतौ तावदेव जलाप्लावनेन मग्नं मार्गं दृष्ट्वा चिन्ताकुलौ जातौ। आतपे तिष्ठन्तौ उभौ पिपासया आकुलितावभवताम्। धनञ्जयः आपणात् रेलनीरं क्रीत्वा स्वयं पीत्वा विवेकं च पाययति। ततो धनञ्जयस्तां जलकूपीं पार्श्वे अमर्दितामेव क्षिप्तवान्। धनञ्जयस्य एतदनुचितं कार्यं यावद् विवेकः निन्दितुम् आरभते तावत् यायावरः कश्चित् बालकः तत्रागत्य तां कूपीम् उत्थाप्य स्वस्यूते निगूढवान् आसीत्।

तं तया कुर्वन्तं वीक्ष्य विवेकः स्वनेत्रे रक्ते कुर्वन् तर्जयँश्च पृच्छति– "अरे दुष्ट! कस्त्वम्! एतत् समाजविरोधि कार्यं कथं करोषि?तिष्ठ त्वामहम् आरक्षिणे समर्पयामि। बालकः सभयं कम्पमानः निवेदयति– . .... हं हं स्वामिन्! अहं विजयः, मा मां तर्जयतु! निर्धनतया इतस्ततः विचरन् एकैकां कूपीं चित्वा चोरविपणौ विक्रीय अल्पधनञ्च प्राप्य यथा-तथा उदरज्वालां शमयामि। क्षम्यताम्! यदि भवान् तर्जयितुम् इच्छति साहसं च धारयति तर्हि तान् ........ तर्जयतु .......। "कान् ....? रे दुष्ट! वद! वद! " इति पृष्टवान् विवेकः।

विजयः निःश्वस्य प्रत्यवदत्– अहं यत् स्थानं सङ्के.तं च निदर्शयामि तत्र गत्वा विकृतवस्तु-निर्माणरतान् तान् देशद्रोहिणः तर्जयतु। बालकस्य विजयस्य वचः श्रुत्वा आश्चर्यचकितौ विवेकः धनञ्जयश्च तस्य प्रशंसां कुरुतः। तथा च तं पठितुं प्रेरयतः। सोऽपि विवेकस्य धनञ्जयस्य मतेन प्रभावितः पठितुं प्रतिज्ञाय स्वसङ्के.तं प्रदाय धन्यवादं च विज्ञाप्य प्रस्थितः। अथ तेन बालकेन निर्दिष्टं सङ्के.तं चादाय इमौ छात्रौ नौकाम् आरुह्य विद्यालयं गतवन्तौ।



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विवेक: धनञ्जयश्च स्वविद्यालयं विलम्बेन प्रविष्टौ। वर्गाध्यापक: विलम्बस्य कारणं ज्ञातुम् ऐच्छत्। तयो: छात्रयो: कथनं श्रुत्वा वर्गाध्यापक: उद्वेलित: सञ्जात:।

अथ स तौ नीत्वा प्राचार्यकार्यालयं प्रविष्ट:। शिक्षक: विवेक–धनञ्जययो: वृत्तान्तं प्राचार्यम् अश्रावयत्। प्राचार्य: गम्भीरतया विचारयन् आरक्षिस्थानकं सूचितवान्। आरक्षिण: तत्र कुत्सितकर्मरतानां राष्ट्रद्रोहिणां सङ्के.तं स्थानं च गुप्तरीत्या परित: संवृत्य सावधानतया एकैकवस्तुन: परीक्षणं कृतवन्त:। तस्मिन् क्रमे विकृतानाम् औषधानां तैलानां खाद्यानां चोष्याणां पेयानां च पदार्थानां प्रभूतराशिं प्राप्तवन्त:।

तत्रैव आतङ्क.वादिनां पत्रसङ्के.तादिकं विकृतरूप्यकाणि, साहित्यानि च उपलब्धानि। सूक्ष्मनिरीक्षणेन अस्मिन् षड्यन्त्रे समाजस्य अनेके बहि:सभ्याश्च लिप्ता: प्रतीता:। आरक्षिनिरीक्षक: शीघ्रमेव उच्चाधिकारिण: सूचयित्वा तेषां निर्देशं च प्राप्य तान् राष्ट्रद्रोहिण: विकृतवस्तुनिर्माणे संलग्नान् निगृह्य कारागारं प्रेषितवान्। आरक्षिप्रशासनम् अस्य अभियानस्य प्रेरकौ विवेकं धनञ्जयं च पुरस्कृतौ अकरोत्।

अथ राजकीये शिक्षकदिवससमारोहे विद्यालयस्य प्राचार्यं वर्गाध्यापकं विवेकं धनञ्जयं विजयं च सगौरवं सबहुमानं समादृत्य मुख्यमंत्री समबोधयत्– "देव्य:! सज्जनाश्च! अद्य वयं विवेकस्य धनञ्जयस्य विजयस्य च समाजबोधेन राष्ट्रबोधेन च आनन्दम् अनुभवाम:। अस्माकं छात्रा: शिक्षकाश्च यदि सुसंस्कृता भवन्ति तर्हि सर्वविधसमस्यानां निवारणं सुकरं वर्तते। अद्य छात्रसहयोगेन राष्ट्रद्रोहिण: निगृहीता: सन्ति। एकैक: नागरिक: एवमेव आचरेत् तर्हि अस्माकं समाजस्य राष्ट्रस्य च उपरि यत् सङ्क.टम् अस्ति तस्य निवारणं भवेत्। यद्येकोऽपि जन: मार्गं दूषितं कुर्वन्तं, वृक्षं छिन्दन्तं, देशविरोधिना सह षड्यन्त्रं रचयन्तं राष्ट्रविरोधे च जनं, जनसमूहं सङ्घटनं च रोधयति, यथासम्भवं च आरक्षिभ्य: समर्पयति तर्हि तस्य महती देशभक्ति: स्यात्, तस्य महान् राष्ट्रबोधश्च स्यात्। अस्माभि: राष्ट्रभक्तै: भवितव्यम्। एतदर्थं राष्ट्रबोध: अपेक्षित:। उक्तञ्च

**य: समाजस्य देशस्य सर्वकालेषु यत्नत: ।**
**रक्षां करोति तस्यैव राष्ट्रबोध: प्रशस्यते ॥**



## शब्दार्था:

| | | |
|---|---|---|
| **तावदेव** | तस्मिन् एव काले | उसी समय |
| **यावदेव** | यस्मिन् एव काले | जैसे ही |
| **जलाप्लवनेन** | जलवृद्धिद्वारा | बाढ़ से |
| **पिपासया** | जलं पातुम् इच्छया | प्यास से |
| **जलकूपीम्** | जलस्य वर्तुलाकार–पात्रविशेषम् | जल के बोतल को |
| **पार्श्वे** | समीपे | बगल में, पास में |
| **अमर्दिताम्** | अपिष्टाम् | बिना तोड़े–मोड़े |
| **क्षिप्तवान्** | अक्षिपत् | फेंक दिया |
| **स्वस्यूते** | वस्त्रनिर्मित–स्वकोषे, स्वपोटलिकायाम् | अपने थैले में |
| **निगूढवान्** | गुप्तरूपेण स्थापितवान् | छिपा कर रख लिया |
| **आरक्षिणे** | आरक्षकाय | पुलिसवाले को |
| **चोरविपणौ** | चौरापणे | चोर बाजार में |
| **उदरज्वालाम्** | बुभुक्षाम्, जठराग्निम् | पेट की आग (भूख) को |
| **विकृतवस्तुनिर्माणरतान्** | अशुद्धपदार्थानां निर्माणे संलग्नान् | नकली सामान बनाने वालों को |
| **चोष्याणाम्** | चोषयितुं योग्यानाम् | चूसने योग्य पदार्थों का |
| **सुकरम्** | सुखेन कर्त्तुम् योग्यम् | आसानी से करने योग्य |
| **समादृत्य** | सम्यक् आदृत्य | बहुत आदर कर के |

## व्याकरणम्

| | | |
|---|---|---|
| **सम्पृक्तानाम्** | – | सम् + Öपृच् + क्त |
| **गच्छन्** | – | Öगम् + शतृ |
| **दृष्ट्वा** | – | Ödृश् + क्त्वा (अव्ययम्) |
| **चिन्ताकुलौ** | – | चिन्तया आकुलौ (तृतीया तत्पुरुष) |



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

| | | |
|---|---|---|
| **तिष्ठन्तौ** | – | Öस्था + शतृ (पुं० प्रथमा द्वि० व०) |
| **क्रीत्वा** | – | Öक्री + क्त्वा |
| **पीत्वा** | – | Öपा + क्त्वा |
| **निन्दितुम्** | – | Öनिन्द + तुमुन् (अव्ययम्) |
| **तत्रागत्य** | – | तत्र + आगत्य |
| **आगत्य** | – | आ + Öगम् + ल्यप् (अव्ययम्) |
| **उत्थाप्य** | – | उद् + Öस्था + ल्यप् (अव्ययम्) |
| **निगूढवान्** | – | नि + Öगुह् + क्तवतु (पुं०, एकवचन) |
| **कुर्वन्तम्** | – | Öकृ + शत् (पुं०, द्वि०, एकवचन) |
| **वीक्ष्य** | – | वि + Öईक्ष् + ल्यप् (अव्ययम्) |
| **तर्जयन्** | – | तर्ज् + णिच् + शतृ (पुं०, प्रथमा, एकवचन) |
| **कुर्वन्** | – | Öकृ + शतृ (पुं०, प्रथमा, एकवचन) |
| **कम्पमानः** | – | Öकम्प् + शानच् (पु., प्र. वि., ए.व.) |
| **विक्रीय** | – | वि + Öक्री + ल्यप् (अव्ययम्) |
| **विचरन्** | – | वि + ⌧चर् + शतृ (पुं०, प्रथमा, एकवचन) |
| **चित्वा** | – | Öचि + क्त्वा (अव्ययम्) |
| **तर्जयितुम्** | – | तर्ज् + तुमुन् (अव्ययम्) |
| **प्रतिज्ञाय** | – | प्रति + Öज्ञा + ल्यप् |
| **प्रदाय** | – | प्र + Öदा + ल्यप् |
| **विज्ञाप्य** | – | वि + Öज्ञा + णिच् + ल्यप् |
| **निर्दिष्टम्** | – | निः + दिश् + क्त |
| **चादाय** | – | च + आदाय |
| **आदाय** | – | आङ् + Öदा + ल्यप् |
| **गतवन्तौ** | – | Öगम् + क्तवतु (प्रथमा, द्विवचन) |



| | | |
|---|---|---|
| **प्रविष्टौ** | – | प्र + Öविश् + क्त (पुं०, प्रथम द्विवचन) |
| **सूचितवान्** | – | सूच् + क्तवतु (पुं०) |
| **विचारयन्** | – | वि + Öचर् + णिच् + शतृ (पुं० प्रथमा) |
| **खाद्यानाम्** | – | Öखाद् + ण्यत् (षष्ठी, बहुवचन) |
| **चोष्याणाम्** | – | Öचुष + ण्यत् |
| **पेयानाम्** | – | Öपा + यत् (ष० वि०, ब० व०) |
| **प्राप्तवन्तः** | – | प्र + Öआप् + क्तवतु |
| **भवितव्यम्** | – | भू + तव्यत् |
| **निगृह्य** | – | नि + Öग्रह् + ल्यप् |
| **आरक्षिप्रशासनम्** | – | आरक्षिणां प्रशासनम् (षष्ठी तत्पुरुष) |
| **प्रशासनम्** | – | प्र + Öशास् + ल्युट् |
| **देशभक्तिः** | – | देशाय भक्तिः (च० तत्पुरुष) |
| **छिन्दन्तम्** | – | Öछिद् + शतृ |
| **भाषमाणम्** | – | Öभाष् + शानच् |

## अभ्यासः (मौखिकः)

1. **एकपदेन संस्कृतभाषया उत्तरं वदत–**

   (क) धनञ्जयेन सह विद्यालयं कः गच्छन् आसीत्?

   (ख) मार्गः केन मग्नः जातः आसीत्?

   (ग) यायावरः बालकः कूपीम् उत्थाप्य कुत्र निगूढवान्?

   (घ) छात्राः शिक्षकाश्च कस्मिन् समारोहे सम्मानिताः?

   (ङ) यः देशस्य रक्षां करोति तस्य किं प्रशस्यते?



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

## अभ्यासः ( लिखितः )

1. एकपदेन संस्कृतभाषया उत्तरं लिखत–

(क) आतपे तिष्ठन्तौ तौ कया पीडितौ अभवताम्?

(ख) धनञ्जयः आपणात् किं क्रीतवान्?

(ग) विवेकः धनञ्जयस्य किं कार्यं निन्दति?

(घ) बालकः विवेकं कान् जनान् तर्जयितुं निवेदयति?

(ङ) प्राचार्यः किम् सूचितवान्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरं प्रदत्त–

(क) तं बालकं तथा कुर्वन्तं वीक्ष्य विवेकः स्वनेत्रे रक्ते कुर्वन् किमुक्तवान्?

(ख) यायावरः बालकः कयोः मतेन प्रभावितः भूत्वा किं किं कृत्वा प्रस्थितः?

(ग) आरक्षिनिरीक्षकः कान् सूचयित्वा केषां च निर्देशं प्राप्य कान् कारागारं प्रेषितवान्?

(घ) मुख्यमंत्री केन कारणेन आनन्दम् अनुभवति?

(ङ) सर्वासां समस्यानां निवारणं कथं सम्भाव्यते?

3. उदाहरणानुसारं कोष्ठके लिखितं शुद्धमेकं पदं स्वीकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

उदाहरणम् उत्तरम् – **विवेकः धनञ्जयेन सह विद्यालयं गच्छन् आसीत्।**

**प्रश्नः – विवेकः केन सह विद्यालयं गच्छन् आसीत्?**

(क) उत्तरम्– धनञ्जयः तां कूपीम् उत्थाप्य पार्श्वे क्षिप्तवान्।

प्रश्नः– ........................................................ **(कुत्र/अत्र)**

(ख) उत्तरम्– यायावरः वस्तुसंग्राहकः मलिनवस्त्रः बालकः तत्र आगतः।

प्रश्नः– ........................................................ **(का/कः)**



(ग) उत्तरम्– तिष्ठ! त्वामहम् आरक्षिणे समर्पयामि।

प्रश्नः– ........................................................ **(कस्मै/कस्यै)**

(घ) उत्तरम्– आरक्षिप्रशासनम् अभियानस्य प्रेरकौ पुरस्कृतौ अकरोत्।

प्रश्नः– ........................................................ **(के/कौ)**

(ङ) उत्तरम्– अहं कूपीं चित्वा अल्पधनं प्राप्य यथा तथा उदरज्वालां शमयामि।

प्रश्नः– ........................................................ **(कम्/काम्)**

4. **रेखाङ्कितपदानां स्थाने उदाहरणानुसारं विलोमपदानि योजयित्वा वाक्यानि रचयत।**

उदाहरणम्– **देशद्रोहिणः देशस्य अहितं कुर्वन्ति।**

**उत्तरम्– देशप्रेमिणः देशस्य हितं कुर्वन्ति।**

अ. प्रश्न– अधमाः जनाः समाजविरोधि कार्यं कुर्वन्ति।

उत्तरम्– ........................................................

आ. प्रश्न– असभ्याः अशिष्टाश्च अवैधं कर्म सम्पादयन्ति।

उत्तरम्– ........................................................

इ. प्रश्न– निर्धनः अल्पधनमपि प्राप्य जीवनयापनं करोति।

उत्तरम्– ........................................................

ई. प्रश्न– प्रामाणिकवस्तूनां सेवनेन स्वास्थ्यं सुरक्षितं भवति।

उत्तरम्– ........................................................

उ. प्रश्न– राष्ट्रस्य रक्षकः सम्मानेन पुरस्कृतः भवति।

उत्तरम्– ........................................................



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

5. **प्रश्नः - लिखितपदेषु अन्यविभक्तिं योजयित्वा समुचितं वाक्यं रचयत–**

उदाहरणम् - **राष्ट्रबोधः, राष्ट्रम्/ बालकः**

उत्तरम् – **बालकानां राष्ट्रबोधेन राष्ट्रस्य सुरक्षा भवति।**

(क) प्रश्नः– जलाप्लावनम्/ मार्गे / भग्नेन

(ख) प्रश्नः– सज्जनः/ चौरम्/ आरक्षी

(ग) प्रश्नः– शिक्षकः/ समारोहः/ पुरस्कृतः

(घ) प्रश्नः– प्राचार्येण/ आरक्षिस्थानके/ गम्भीरता

(ङ) प्रश्नः– विवेकाः/ धनञ्जयः/ विद्यालयः

6. **निम्नवाक्येषु अधोरेखाङ्कि.पयदानां सन्धिविच्छेदं कुरुत–**

(क) शिक्षकः प्रश्नोत्तरं श्रुत्वा प्रसन्नः भवति।

(ख) यस्यैव छात्रस्य परिश्रमः तस्यैव सफलता।

(ग) यस्योपरि दायित्वं भवति तस्य चिन्तापि।

(घ) कस्ते पिता?यस्य पुत्रस्तु त्वं भोः।

(ङ) जगदिदं रचितं जगदीशेन।

## योग्यता-विस्तारः

1. आधुनिकपरिवेशम् आधृत्य रचिता इयं कथा छात्रेषु सामाजिकं राष्ट्रियं च कर्तव्यं प्रति समुत्साहं जनयति। इयं प्रेरिका कथा न केवलं छात्राणां कृते अपितु सर्वेषां कृते उपयोगिनी। अतः अस्याः श्रवणं श्रावणं वा समुचितं वर्तते।

2. **आधुनिक-संस्कृत-कथा-परम्परा–** आधुनिके काले बहवः कथाकाराः नूतनभाव-दृश्यानि आश्रित्य कथां लिखन्ति। राजेन्द्रः मिश्रः, जनार्दन हेगडे, केशवचन्द्र दाशः, मिथिलेश कुमारी मिश्रा, वैद्यनाथ मिश्रश्चेत्यादयः प्रख्याताः सन्ति। अन्येषां कथाकाराणाम् अपि महती सूची



अस्ति। संस्कृत- शिक्षकस्य सहयोगेन सम्भाषणसन्देश संस्कृतमञ्जरीप्रभृतिपत्रिकासु अन्वेषणं कृत्वा कथायाः शैली, विषयः, सौन्दर्यम्, सन्देशः च ज्ञातव्याः।

3. **कथायाः व्यावहारिकः सन्देशः**

शिक्षायाः यथा भौतिकरूपेण प्रसारः भवति तथा संस्कारः अपि भवेत्। किन्तु सम्प्रति समाजे संस्कारस्य अभावः दृश्यते। अनया कथया बालानां युवकानां महिलानां पुरुषाणां च सर्वेषां व्यक्तिगतदायित्वस्य पारिवारिकदायित्वस्य, पारिवेशिकदायित्वस्य, सामाजिकदायित्वस्य, राष्ट्रियदायित्वस्य, सम्पूर्णमानवीयदायित्वस्य च समग्रविकासः भवेत्, तदनुसारम् सर्वत्र व्यवहारः अपि भवेत्। एवं यदि क्रियान्वयनं भवति तर्हि भारतदेशः विश्वगुरुः भविष्यति। शिक्षकस्य निर्देशेन संस्कारसम्बन्धे गोष्ठी करणीया।

(क) **क्रियायाः सातत्य-बोधनम्** परस्मैपदधातुभ्यः शतृप्रत्ययः प्रयुज्यते। आत्मनेपदधातुभ्यश्च शानच् प्रत्ययः प्रयुज्यते । शतृप्रत्ययस्य शानच्-प्रत्ययस्य च रूपाणि विशेष्यम् अनुसृत्य प्रवर्तन्ते। यथा–

| | पुंल्लिंगे | स्त्रीलिङ्गे. | नपुंसके |
|---|---|---|---|
| Öगम् + शतृ = गच्छत् | गच्छन् | गच्छन्ती | गच्छत् |
| Öअस् + शतृ = सत् | सन् | सती | सत् |
| Öपठ् + शतृ = पठत् | पठन् | पठन्ती | पठत् |
| Öकृ + शतृ = कुर्वत् | कुर्वन् | कुर्वती | कुर्वत् |
| Öभू + शतृ = भवत् | भवन् | भवन्ती | भवत् |
| Öलभ् + शानच् = लभमान | लभमानः | लभमाना | लभमानम् |
| Öवृत् + शानच् = वर्तमान | वर्तमानः | वर्तमाना | वर्तमानम् |
| Öमुद् + शानच् = मोदमान | मोदमानः | मोदमाना | मोदमानम् |
| ÖÖकृ + शानच् = कुर्वाण | कुर्वाणः | कुर्वाणा | कुर्वाणम् |
| Öकम्प् + शानच् = कम्पमान | कम्पमानः | कम्पमाना | कम्पमानम् |



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

एतेषां शतृप्रत्ययान्तप्रयोगाणां रूपाणि पुल्लिङ्गे. भवन् इति, स्त्रीलिङ्गे. नदीवत् नपुंसकलिङ्गे. च जगद् वत् चलन्ति।

यथा- पु०

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र०:- | गच्छन् | गच्छन्तौ | गच्छन्त: |
| द्वि०:- | गच्छन्तम् | गच्छन्तौ | गच्छत: |

स्त्री०

| | | |
|---|---|---|
| गच्छन्ती | गच्छन्त्यौ | गच्छन्त्य: |
| गच्छन्तीम् | गच्छन्त्यौ | गच्छन्ती: |

नपुंसक

| | | |
|---|---|---|
| गच्छत् | गच्छती | गच्छन्ति |
| गच्छत् | गच्छती | गच्छन्ति |

पुन: शानच् प्रत्ययानां रूपाणि पुल्लिङ्गे. रामवत् स्त्रीलिङ्गे. लतावत् नपुंसके च फलवत् चलन्ति।

यथा– पु०

| | | | |
|---|---|---|---|
| | मोदमान: | मोदमानौ | मोदमाना: |
| | मोदमानम् | मोदमानौ | मोदमानान् |
| स्त्री० | मोदमाना | मोदमाने | मोदमाना: |
| | मोदमानाम् | मोदमाने | मोदमाना: |
| नपुं० | मोदमानम | मोदमाने | मोदमानानि |
| | मोदमानम् | मोदमाने | मोदमानानि |



पञ्चदश: पाठ:

# विश्ववन्दिता वैशाली

[‘विश्ववन्दिता वैशाली’ ‘इति शीर्षकं पद्यम् आधुनिकभाषाशैलीम् अनुसृत्य विरचितं वर्तते। अत्र वैशालीमहत्त्वं संक्षिप्ततया वर्णितम् अस्ति। रामायणपुराणादिषु विशाला मिथिला-तीरभुक्ति-विदेहादिनामभि: विख्यातं गण्डकीगङ्गाकौशिकीहिमालयपरिवृते क्षेत्रमेव कालान्तरे ‘वैशाली’ नाम्ना इतिहासे प्रसिद्धं बभूव। गणतन्त्रस्य प्रथमसूर्योदय: वैशालीधरायां जात:, यस्य दिव्यप्रकाशेन समस्तसंसारे गणतन्त्रं प्रसृतं विकसितं च। एतादृशभाव-भूमौ गीतमिदं रोचकं वृत्तान्तं प्रस्तौति।]

**प्रवहति गङ्गा दक्षिणभागे शुभा गण्डकी पश्चिमभागे ।**
**नृपविशालकुलपुरी वरेण्या विश्ववन्दिता वैशाली ॥1॥**

**पुरा विशाला नगरी रम्या सस्यश्यामला अरिभिरगम्या ।**
**रामलक्ष्मणाभ्यां विलोकिता विश्ववन्दिता वैशाली ॥2॥ ......** विश्व ............

**या सीता-जनिका विशिष्यते या जिनेन्द्रजननी प्रशस्यते ।**
**या विदेहजनकादिसेविता विश्ववन्दिता वैशाली ॥3॥ ......** विश्व ............

**यस्यां बुद्धकृता उपदेशा: सत्याहिंसादिकसन्देशा: ।**
**आम्रपालिका कलासाधिका विश्ववन्दिता वैशाली ॥4॥ ......** विश्व ............

**यत्राशोक-निर्मित: स्तूप: स्तम्भ: पुष्करिणी अथ कूप: ।**
**यस्या धरा कीर्तिमातनुते विश्ववन्दिता वैशाली ॥5॥ ......** विश्व ............

**यत्र लिच्छिवी-बज्जिक-संघा: गणनिष्ठा: सुधियश्च गुणौघा: ।**
**प्रजापालने ते विख्याता: विश्ववन्दिता वैशाली ॥6॥ ......** विश्व ............



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

**शासनविधौ प्रकृष्टं तन्त्रम् संविधानसहितं गणतन्त्रम् ।**
**यस्य समुदयो यत्र प्रथमतः विश्ववन्दिता वैशाली ॥7॥ ......** विश्व .............

**यत्र जनानां वरं जनेभ्यः जनैः शासनं प्रियं समेभ्यः ।**
**जनतन्त्रं गणतन्त्र-दिशैव विश्ववन्दिता वैशाली ॥8॥ ......** विश्व .............

## शब्दार्थाः

| | | |
|---|---|---|
| **वरेण्या** | श्रेष्ठा | उत्तम |
| **तन्त्रम्** | अधीनम्/ शासनम् | शासन |
| **रम्या** | रमणीया | सुन्दर |
| **जनिका** | जन्मदात्री | माता |
| **जिनेन्द्रः** | महावीरः | जिनेन्द्र भगवान महावीर |
| **बुद्धकृताः** | बुद्धप्रदत्ताः | बुद्ध द्वारा दिये गये |
| **आम्रपालिका** | आम्रपाली | वैशाली की प्रसिद्ध गणिका आम्रपाली |
| **स्तूपः** | गोलाकारं स्मारक-स्थलम् | बौद्धों का गोलाकार स्मारक |
| **स्तम्भः** | स्थूलदण्डरूपः उत्थितः यूपः | खम्भा |
| **पुष्करिणी** | तडागः | तालाब |
| **सुधियः** | विद्वांसः | विद्वान लोग |

## व्याकरणम्

### ( क ) सन्धिविच्छेदः

| | | |
|---|---|---|
| **गुणौघाः** | = | गुण + ओघाः |
| **दिशैव** | = | दिशा + एव |
| **जिनेन्द्रः** | = | जिन + इन्द्रः |
| **अरिभिरगम्या** | = | अरिभिः + अगम्या |



### ( ख ) समासः

| | | |
|---|---|---|
| **विश्ववन्दिता** | = | विश्वेन वन्दिता (तृतीया तत्पुरुष) |
| **दक्षिणभागे** | = | दक्षिणः भागः (कर्मधारय) तस्मिन् |
| **नृपविशालकुलपुरी** | = | नृपः विशालः नृपविशालः (कर्मधारय) तस्य कुलम् नृपविशालकुलम् षष्ठी तत्पुरुष (तस्य पुरी नृपविशालकुलपुरी (षष्ठी तत्पुरुष) |
| **सस्यश्यामला** | = | सस्यैः श्यामला (तृतीया तत्पुरुष) |
| **रामलक्ष्मणाभ्याम्** | = | रामश्च लक्ष्मणश्च रामलक्ष्मणौ (द्वन्द्वसमासः) ताभ्याम् |
| **सीताजनिका** | = | सीतायाः जनिका (षष्ठी तत्पुरुष) |
| **जिनेन्द्रजननी** | = | जिनेन्द्रस्य जननी (षष्ठी तत्पुरुष) |
| **विदेहजनकादिसेविता** | = | विदेहः जनकः विदेहजनकः (कर्मधारय) सः आदिर्यस्य तैः सेविता (तृतीया तत्पुरुष) |
| **बुद्धकृता** | = | बुद्धेन कृता (तृतीया तत्पुरुष) |
| **सत्याहिंसादिकसंदेशा** | = | सत्यश्च अहिंसा च सत्याहिंसे (द्वन्द्व) आदी येषां ते संदेशाः सत्याहिंसादिक संदेशाः (बहुव्रीहि, कर्मधारयः) |
| **लिच्छिवीबज्जिकसंघाः** | = | लिच्छिवी च बज्जिकाश्च लिच्छिवीबज्जिकाः (द्वन्द्व) तेषाम् संघा लिच्छिवीबज्जिकासंघाः (षष्ठी तत्पुरुष) |
| **गणनिष्ठाः** | = | गणेषु निष्ठा येषां ते (बहुव्रीहि) |
| **गुणौघाः** | = | गुणानाम् ओघाः गुणौघाः (षष्ठी तत्पुरुष) |
| **प्रजापालने** | = | प्रजानाम् पालने प्रजापालने (षष्ठी तत्पुरुष) |
| **गणतन्त्रम्** | = | गणानाम् तन्त्रम् अधीनम् शासनम् (षष्ठी तत्पुरुष) |
| **शासनविधौ** | = | शासनस्य विधौ (षष्ठी तत्पुरुष) |
| **संविधानसहितम्** | = | संविधानेन सहितम् (तृतीया तत्पुरुष) |



https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

## अभ्यास: (मौखिक:)

1. संस्कृतभाषया एकपदेन उत्तराणि लिखत–

(क) का विश्ववन्दिता अस्ति?

(ख) काभ्याम् वैशाली विलोकिता?

(ग) कस्य जननी प्रशस्यते?

(घ) के सन्देशा:?

(ङ) केन स्तूप: निर्मित:?

## अभ्यास: (लिखित:)

1. संस्कृतभाषया एकपदेन उत्तराणि लिखत–

(क) का मोक्षदा?

(ख) गङ्गा कस्मिन् भागे प्रवहति?

(ग) कस्याम् बुद्धकृता उपदेशा:?

(घ) प्रजापालने के विख्याता:?

(ङ) गणतन्त्रं केषां कृते शासनं भवति?

2. अधोलिखितवाक्येषु अधोरेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) शुभा गण्डकी <u>पश्चिम</u>भागे प्रवहति।

(ख) विशालानगरी <u>अरिभि</u>रगम्या।

(ग) स्तूप: <u>कीर्ति</u>मातनुते।

(घ) प्रथमत: <u>वैशाल्याम्</u> गणतन्त्रस्य प्रादुर्भाव:।



(ङ) <u>जिनेन्द्र</u>जननी प्रशस्यते।

3. समुचितपदै: रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) शासनविधौ ................ तन्त्रम्।

(ख) यत्र ................ वरं जनेभ्य:।

(ग) ................ ते विख्याता:।

(घ) जनै: शासनम् प्रियम् ................ ।

(ङ) आम्रपालिका कलासाधिका ................ वैशाली।

4. स्तम्भद्वये लिखितानां विपरीतार्थकशब्दानां मेलनं कुरुत–

| | | |
|---|---|---|
| (क) विशाल: | (i) | हिंसा |
| (ख) नृप: | (ii) | अप्रिय: |
| (ग) वन्दिता | (iii) | अपयश: |
| (घ) अहिंसा | (iv) | अरम्या |
| (ङ) प्रिय: | (v) | निरुदय: |
| (च) यश: | (vi) | सम्प्रति |
| (छ) गम्या | (vii) | संकीर्ण: |
| (ज) समुदय: | (viii) | प्रजा: |
| (झ) रम्या | (ix) | निन्दिता |
| (ञ) पुरा | (x) | अगम्या |

5. निम्नलिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां स्थाने कोष्ठात् उचितरूपम् आदाय प्रश्नं रचयत–

(क) <u>यस्या:</u> यश: कीर्तिमातनुते। (**कस्य/ कस्या:**)

(ख) <u>यस्याम्</u> बुद्धकृता: उपदेशा:। (**कस्मिन्/ कस्याम्**)



https://www.studiestoday.com

(ग) या सीता जनिका विशिष्यते। (**कः/ का/ किम्**)

(घ) यस्य समुदयो यत्र प्रथमतः। (**कस्य/ कस्याः**)

(ङ) शुभा गंडकी पश्चिमभागे। (**कस्मिन्/ कस्याम्**)

**6. अधोलिखितेषु द्वे शुद्धे पर्यायपदे रेखाङ्कि.ते क्रियताम्–**

(क) **यशः** – कीर्तिः, कृतिः, समज्ञा

(ख) **नृपः** – राजा, भूपः, कूपः

(ग) **जनः** – ओकः, लोकः, नरः

(घ) **प्रजा** – जनता, सन्ततिः, विततिः

(ङ) **विद्यार्थी** – शिष्यः, अन्तेवासी, बालकः

**[ संस्कृते स्त्रवीत्वबोधनाय स्त्रीप्रत्ययस्य प्रयोगः भवति।**

**यथा– बाल + टाप् - बाला ]**

**7. निम्नलिखितम् उदाहरणम् अनुसृत्य स्त्रीप्रत्ययं लिखत।**

| स्त्रीप्रत्ययान्तप्रातिपदिकम् | मूलप्रातिपदिकम् | | स्त्रीप्रत्ययः |
|---|---|---|---|
| वरेण्या | वरेण्य | + | टाप् |
| सेविता | ............ | + | ............ |
| विलोकिता | ............ | + | ............ |
| अगम्या | ............ | + | ............ |
| विशाला | ............ | + | ............ |



## योग्यता-विस्तारः

वैशाली गणतन्त्रस्य जन्मभूमिः वर्तते। सम्प्रति बिहारराज्यस्य तीरभुक्ति (तिरहुत) प्रमण्डलस्य वैशाली नाम मण्डलं (जिला) वर्तते। एतस्य मुख्यालयः हरिपुरम् (हाजीपुरम्) अस्ति। इतः 15-20 किलोमीटर दूरे वैशाली अद्यापि स्वकीयं प्राचीनवैभवं निदर्शयति। वैशालीं परितः अनेकानि दर्शनीयस्थानानि सन्ति।

### ऐतिहासिकं महत्त्वम्–

(i) "वैशाली थ्रू द एजेज" इति डॉ० योगेन्द्रमिश्रस्य वैशाली विषयकम् इतिहासपुस्तकं पठित्वा ऐतिहासिकं महत्वं संक्षेपेण संग्रहणीयम्।

(ii) डॉ० गोविन्दठक्कुरस्य "मिथिला का इतिहास" इति पुस्तकं पठित्वा प्राचीनकालतः वैशाल्याः क्रमिकः इतिहासः ज्ञातव्यः।

### सांस्कृतिकं महत्त्वम्–

(i) अत्र आम्रपाली नाम नगरवधूः प्रतिष्ठाप्रकर्षं प्राप्तवती आसीत्। तस्याः गृहे भगवान् गौतमबुद्धः स्वयमेव आगत्य भोजनं स्वीकृतवान् आसीत्। महावीरस्य जैनतीर्थंकरस्य जन्मभूमिः वैशाली आसीत्। अत्र भगवान् बुद्धोऽपि अनेकवारम् आगतवान्।

(ii) बाल्मीकिरामायणे विशाला मिथिला चेति द्वे राज्ये पृथक् पृथक् शासकाभ्यां शासिते स्तः